होमियोपैथिक

पारिवारिक चिकित्सा।

द्वितीय संस्करण।

होमियोपैथिक चिकित्साकी अत्युत्कृष्ट पुस्तक।

श्रीमहेशचन्द्र भट्टाचार्य्य एण्ड को॰ द्वारा

संगृहीत और प्रकाशित।

नं॰ ११ बनफील्ड लेन,

कलकत्ता।

सं॰ १९६८।

२०००-२५-७-१४.

दाम ||) बारह आने।

(Similia Similibus Curentur) होमियोपैथीका बीज मन्त्र भारत और ग्रीस देशमें उच्चारित हुआ था, परन्तु अभी केवल एक ही सदी (शताब्दि) हुई है कि महात्मा हनिमानने प्राणपणसे चेष्टा करके इसका साधन और प्रचार किया है तथा चिकित्सा जगतमें एक नवयुगका प्रचार कर दिखाया।

हनिमान कौन थे?—होमियोपैथीके प्रवर्तक सेमुअल हानिमानका जन्म सन १७५५ इस्वीमें जर्मनी देशमें हुआ था। उन्होंने बड़े कष्टसे लिखना पढ़ना सीखा और ग्रीक, हिब्रु, अरबी, लैटिन, फरासि, जर्मान, इंरेजी इत्यादि भाषा तथा चिकित्सा और रसायन विद्यामें पूर्ण पण्डित हो गये। १७८० इस्वीमें कालेनके लिखे हुए "मेटेरिया-मेडिका" नामक ग्रन्थ अनुवाद करते समय सहसा उनके हृदयमें यह नवीन भाव उदय हुआ कि कुइनाइन सुस्थ शरीरमें ज्वर पैदा करता है तथा उसी प्रकार ज्वरघ्न भी है। हृदयके इस भावको उनको आपही "समः समं शमयति" वाली राह पर लाया। इसके बाद छ: वर्ष पर्य्यन्त उन्होंने नाना प्रकारके ग्रन्थ, भूयोदर्शन, गरलविज्ञान इत्यादि अध्ययन करके और नाना प्रकारके विषोंको स्वयं सेवन करके यह निश्चय कर लिया कि "होमियोपैथी सत्यताके अटल पर्वत पर प्रतिष्ठित है—यह कल्पना या अनुमान झूठा नहीं हो सकता। १७८६ इस्वीमें उनके इस नवीन मतका प्रचार होते ही चारो ओर खलबली सी मच गई। मतानुरागी कई एक वैद्य

उनके शिष्य हुए। तथा उसी तरह और चिकित्सक तथा नीच प्रकृतिवाले वैद्य डाक्टर उनके घोर विद्वेषी होगये। १८२१ इस्वीमें जर्म्मन कुलतिलक निर्वासित होगये सही परन्तु उस वीरहृदयकी दुर्दम उद्यम वन्हि ठण्ढी नहीं हुई। जीवनके अवशिष्ट बारह वर्ष उन्होंने जिस कष्टसे फ्रान्समें काटा था, जिस प्रकारसे वहां हजारों कठिनसे कठिन रोग आरोग्य किये थे, उस यश और कीर्त्तिकी ध्वजा समस्त सभ्य देशमें व्याप्त हो गई। २री जुलाई सन् १८४३ इस्वीमें सदृश—विधानाचार्य्य यहांके महाव्रतका उद्‌यापन करके अमरधामको चले गये।

१८५१ इस्वीमें उक्त महापुरुषके देशके लोगोंने उनकी लीलाभूमि "लिपजिक" नगरमें उनकी पीतलकी मूर्त्ति स्थापन करके अपने पूर्व्वकृत अपराधका कुछ प्रायश्चित कर डाला।

दिग्विजय अथवा होमियोपैथीका विस्तार—

लोक हितैषी हानिमान आप धन्य हैं! आपने व्याधिविमोचनका यह उपाय निकालकर जैसा जनसमूहका उपकार तथा कल्याण किया है उसकी याद आते ही कौन ऐसा पुरुष होगा जिसके हृदयका उच्छ्वास बड़े वेगसे आपके श्रीचरणोंकी ओर न दौड़े। आज जर्म्मनी, फ्रान्स, आष्ट्रिया, इंग्लैण्ड, अमेरिका, आस्ट्रेलिया इत्यादि सभी आधुनिक सभ्यदेश समूहने आपकी चिकित्सा प्रणालीको शिर झुकाकर ग्रहण कर लिया है। एक युक्तराज्य अमेरिकाहीमें १०२ अस्पतालोंमें सबसे कम ६ हजार रोगी आश्रय पाकर आपही की जय

घोषणा बीरनादसे कर रहे हैं। राजेन्द्रलाल दत्त, इंग्लैण्डमें रहनेवाले भारत मन्त्री सभाके सदस्य सैयद हसनबिलग्रामी, डाक्टर बेरनी, बङ्गाली मात्रके गौरव श्रीमहेन्द्रलाल सरकार, श्रद्धास्पद प मूलार —बाबा—(ईशापन्थी) इत्यादि असाधारण अध्यवसाय गुणसे आज बंगदेशके प्रत्येक गांव और नगरमें तथा भारतके नाना स्थानोंमें तुमारी ही जयपताका फहरा रही है * औषध निर्वाचनकी जैसी सुगम और सरल राह आपने दिखाई है, उसके लिये वर्त्तमान और भविष्यतके सभी लोग सदा सर्वदा आपके निकट कृतज्ञताके फन्देमें बंधे रहेंगे।

---

* यहां पर यह लिख देना अवश्य आवश्यकीय है कि १८३५ इस्वीमें पञ्जाब-केशरी राजा रणजीतसिंहके राजसभाका वैद्य अस्मन डाक्टर हनिग्बर्गार सबसे पहिले भारतवर्षमें और कलकत्तेके पहिले सुमय अफिसर फरासी डाक्टर टेनियार सबसे पहिले अर्थात् १८५१ इस्वीमें होमियोपैथिका प्रचार करने लगे। परन्तु दुर्भाग्यवश इन दोनोंमेंसे कोई भी अपनी धर्मोन्नति नहीं कर सके। इसके बाद दयाके अवतार ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, उनके भ्राता ईशानचन्द्र दीनबन्धु न्यायरत्न, अध्यापक प्यारीचरण सरकार, काशीके ऋषि कालीकृष्ण मित्र, डाक्टर बिहारीलाल भादुड़ी तथा राजकुमार महेश मुखोपाध्याय इत्यादि समर्थोंने बङ्गदेशमें होमियोपैथी विस्तार करनेके लिये बड़ी सहायता दी और उद्योग भी किया और इंग्लैण्डमें डाक्टर डलिसन होमियो-पैथिक औषधालय अनुरागसे दीनानाथ, वृन्दावन, ग्रंथ अम्बालाल इत्यादि स्थानोंमें सहस्रों दीन दुःखी रोगियोंको आरोग्य तथा बल सुखमें बसाते देखकर भारत सरकार-ने भी उसके इन्सिपेक्टरोंकी "बैसन र दिस्ट" नामक पदक देकर अथवा इसमें होमियोपैथीकी अधिकता स्वीकार करनेके लिये बाध्य हुए। (Vide Catholic Times for 9 h August, 1907). इस बात सुनकर भी किस सहृदय व्यक्तिका चित्त प्रसन्न न होगा?

सूची-पत्र।

१। उपक्रमणिका।

होमियोपैथी।

विषय।	पृष्ठा।

औषध प्रस्तुत प्रकरण।

विषय।	पृष्ठा।

औषध प्रयोग प्रकरण।

१०४ प्रयोजनीय औषधोंकी सूची।

हम लोग साधारणतः १२, २४, ३०, ३६, ४८, ६०, ८४ और १०८ शीशियोंके बक्समें नीचे लिखे औषध दिया करते।

औषधोंका नाम क्रम	मा ङ्गा	औषधोंका नाम क्रम	मा ङ्गा
एकोनाइट	३	बेलेडोना	३
आर्सेनिक	३०	ब्रायोनिया	६
कार्ब्बोभिज	३०	चायना	६

औषधोंका नाम	क्रम: मा: डा:	औषधोंका नाम	क्रम: मा: डा
क्यूप्रम एसेट	३	बैप्टेशिया	३
इपिकाक	६	कैन्थरिस	३
नक्सभमिका	३०	स्पञ्जिया	६
पलसेटिला	३०	स्पाइजीलिया	६
भेराट्रम एल्बम	१२	भेराट्रम भिर	३
सलफर	३०	एसिड नाइट्रिक	३०
एसिड फस	६	ऐण्टिम क्रूड	६
आर्णिका मण्टेना	३०	स्ट्रामोनिया	३
मिर्केलि कर	३	कैनाबिस स्यैट	३
सिना	३०	थूजा	३०
ऐण्टिम टार्ट	६	हैमोमेलिस	३
हेपर सलफर	६	कक्यूलस	६
जेलसिमियम	३	डालकेमेरा	६
कलोसिन्थ	३	इग्नेशिया	३०
मार्क्युरियस कर	३	सिक्यूटा	३
मार्क्युरियस सोल	६	साइलीसिया	३०
रसटक्स	३	ड्रसेरा	३
कैमोमिला	१२	कैल्केरिया कार्ब	३०
रिसिनस	३	सिमिसिफियूगा	३
लाइकोपोडियम	३०	पोडोफाइलम	६
ओपियम	६	सीपिया	३०
टेरिबिन्थना	३	कैलिबाइक्रम	६
क्यूप्रम मेट	१२	लैकेसिस	३०
हायोसाइमस	६	सैबिना	३
फसफोरस	३	डिजिटेलिस	६

किया जाता है। यही चूर्ण किया हुआ लोहा इत्यादिको "विचूर्ण" (ट्रिटोउरेशन्) कहते हैं। परन्तु चूर्ण किये जानेके पहिले उक्त लोहादि औषधोंका नाम "मूल औषध" (crude drugs) है।

अरिष्ट।—पेड़ पत्तियोंके रस निचोड़ कर सुरासारके साथ मिलाये हुए पदार्थको "अरिष्ट" (टिञ्चार) कहते हैं। इसी निकाले हुए रसोंमें मूल पदार्थके सभी गुण विद्यमान रहते हैं। (सुरासारके साथ मिलानेसे लाभ केवल इतनाही होता है कि बहुत दिनोंतक खराब नहीं होते) इसी लिये इस पदार्थको "मूल अरिष्ट" (मादार टिञ्चार) कहते हैं।

क्रम। "मूल औषध" या "मूल अरिष्ट" दूधको चीनी या सुरासारके साथ सूक्ष्मसे सूक्ष्म अंशमें बांटा जाकर जो दवा प्रस्तुत होता है उसको "क्रम" (attenuation) कहते हैं जैसे एक भाग मूल अरिष्टको ९ भाग सुरासारके साथ मिलानेसे, प्रथम दशमिक क्रम (१x) प्रस्तुत होता है; और एक भाग मूल अरिष्ट को ९९ भाग सुरासार के साथ मिलानेसे प्रथम १०० का क्रम प्रस्तुत होता है। इसी तरहसे दवाके क्रमको अरिष्ट १ भाग, ९ भाग, वा ९९ भाग सुरासारके साथ मिलानेसे, १० वा या १०० वा क्रम प्रस्तुत होता है। इस अरिष्टके क्रम को "डाइल्युशन" कहते हैं।

औषध प्रस्तुत करनेके यदि पूरे पूरे भेद जानने हों तो "भैषज्यविधान" ग्रन्थको देखना अत्यन्त आवश्यक है।

निम्न, मध्यम और उच्चक्रम।—१x, ३x, ३, ६, में सब निम्न अर्थात् छोटे क्रम हैं। १२, १८ ये मध्यम अर्थात् बिचले दर्जेके क्रम हैं और ३०, १००, २०० इत्यादि उच्च क्रम।

अमेरिकान होमियोपैथिक फार्माकोपियाके मतसे १x से लेकर ३० तक यह भी छोटे ही क्रममें गिने जाते है। तीसके उपर होनेसे उच्च क्रम गिना जाता है।

एक बूंद औषध इतना फायदा करनेवाला क्यों?—छोटे से छोटे अंशमें औषध बांटे जानेसे उसकी रोगनाशक शक्ति और भी बढ़ जाती है। कविराजी अर्थात् वैद्यक मतसे बनाया हुआ सोना सूक्ष्मसे सूक्ष्म अंशमें बंटा रहता है, वही स्वर्ण आयुर्वेदीय मतसे एक बड़ी रोगघ्न दवा है। नमक, गन्धक, सोना, कस्तूरी, धतूरा इत्यादि जड़, जीव और उद्भिद पदार्थ होमियोपैथी मतके अनुसार छोटे से छोटे अंशमें बांटे जाने पर उसकी रोगनाशक शक्ति का प्रभाव देखकर स्तम्भित हो जाना पड़ता है। यही शक्ति रोगीके शरीरमें पहुंचते ही बिजलीकी भांति अपना काम कर दिखाती है, वही एक बूंद औषध सञ्जीवन मन्त्रकी भांति

मरते हुए को नया जीवन प्रदान करता है। इसी लिये एक शताब्दीके भीतर ही सभ्य जगतमें इतना जल्द आदर हुआ है।

"शक्ति नहीं क्रम" ।—क्रम पद्धतिके अनुसार प्रस्तुत की हुई होमियोपेथिक दवाका ऐसा प्रभाव देखकर उस "क्रम" शब्दको जगह "शक्ति" (Potency) शब्दका प्रयोग किया जाता है। "छठी शक्तिका धायना" कहनेसे "धायना छठें क्रमका" समझना होगा। महाविद्वान् डाक्टर एलेन इत्यादि बड़े बड़े डाक्टरोंने होमियोपेथीमेंसे "डाइल्यूशन" (क्रम) शब्दको उठाकर उसके बदलमें "पोटेन्सी" (शक्ति) शब्दको प्रचलित कर दिया है। Vide The North Western Journal of Homœpathy for July 1890 page 107.

औषध प्रयोग प्रकरण।

औषध किस तरह रखना चाहिये?—औषधको किसी विश्वस्त औषधालयमें खरीदना चाहिये क्योंकि इसको जांच करनेका समझना है। जिस घरमें औषधकी सन्दूक रखी जाय वह घर साफ सुथरा तथा सूखा होना चाहिये। धूप, धून, किसी औषधकी तेज सुगन्ध, धूआं इत्यादिका उसमें कदापि प्रवेश न होना चाहिये। इसके अतिरिक्त कापूर अर्क, या एलोपेथिक कोई औषध वा सुगन्धित द्रव्यके पास कभी

बन्द न रखना चाहिये। तथा एक शीशीकी दवा या गोली दूसरी शीशीमें कदापि नहीं देनी चाहिये। यदि घरमें धुआं इत्यादि उठाना हो तो दवाका बक्स दूसरे घरमें रख देना चाहिये।

औषध किस तरह खिलाना चाहिये।—चूर्ण दवा को मुंहमें डाल देना ही काफी है। अरिष्ट दवाको अनुपान भेदसहके साथ देना चाहिये; अर्थात् दवा स्वच्छ निर्मल पानीके साथ खिलानी चाहिये। जहां साफ किया हुआ पानी न मिले वहां गोली छोटी गोली या दूधकी चीनीके साथ खिलाना उचित है। औषध सेवन करनेके पहिले मुंह अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिये। शीशीके मुंहपर काग लगाकर औषध डालनेका कायदा है नहीं तो बूंद निकालनेवाले यन्त्र द्वारा दवा डालनी चाहिये। लेकिन जब जब दवा निकाली जाय तब तब उस यन्त्रको जल और सुरासारसे धो डालना चाहिये।

क्रम निरूपण।—कैम्फर इत्यादि औषध मूल अरिष्ट छोटे क्रममें और नेट्राम इत्यादि बड़े क्रममें व्यवहार किया जाता है। जब तक तजुर्बा न हो तब तक क्रम निर्णय बड़ा ही कठिन है। तब यह याद रखना चाहिये कि नये रोगमें छोटा और मध्यम तथा पुराने और जीर्ण रोगोंमें बड़ा क्रम व्यवहारमें लाना चाहिये। परन्तु हैजा इत्यादि नये रोगोंमें अवस्था भेदके अनुसार बड़े क्रमका औषध भी व्यवहारमें लाना पड़ता है। किस रोगमें कौनसे क्रमका प्रयोग

करना चाहिये यह (इस ग्रन्थमें लिखे हुए रोगोंकी चिकित्सा-कालमें) प्रत्येक औषधके पीछे लिख दिया गया है।

औषधकी मात्रा।—जवान आदमीके लिये दवा १ बूंद सवाभर पानीके साथ देनी चाहिये। गोली २, और छोटी गोली ४, चूर्ण १ ग्रेन। लड़कोंके लिये १ बूंद दवा सवाभर पानीके साथ दो बार, गोली एक और छोटी गोली दो देनी चाहिये। छोटे बच्चेको एक बूंद दवा दो तोला जलके साथ ४बार। *छोटी गोली १ तथा बडी गोली कभी नहीं* देनी चाहिये।

औषध कितने कितने देर पर देना चाहिये।—नये रोगमें १, २, ३, अथवा ४ घटेके ऊपर, और ऐसेही *कठिन तथा प्राणनाशक रोगमें १०, १५ या २० मिनिटके* अन्तर पर दवा देनी चाहिये। पुराने रोगमें नित्य, अथवा सप्ताहमें एक या दो बार। नयी पीडा अथवा रोगमें जब देखे कि तीन चार बार दवा देनेसे भी औषधका कोई फल न हुआ तो वही दवा दूसरे क्रमसे प्रयोग करनी चाहिये।

औषध प्रयोगके सम्बन्धकी कई बातें।

होमियोपैथिक दो या तीन दवा एक साथ मिलाकर कभी रोगीको नहीं देनी चाहिये। एक समय पर एक ही दवा देनी चाहिये। यदि ऐसा ही कोई बूरा लक्षण दिखाई दे और ऐसी ही जरूरत समझी जाय कि दो दवा देना बहुत ही

जरूरी है तो पर्य्याय क्रममें एकके बाद दूसरी देनी चाहिये (Vide Hughes Principles and practice of Homœopathy) परन्तु डानहाम् प्रमुख चिकित्सकगण पर्य्यायक्रममें दवा देनेके विरोधी हैं।

जिस समय तक कुछ खाया न हो तथा प्रातःकालमें ही औषध सेवनका प्रधान समय है। बारम्बार सेवन करते रहने पर आहारके एक घण्टा पहिले और एक घण्टा पीछे दवा देनी चाहिये दवा खानेके एक घण्टा पहिले या पीछे पान तमाकु खाना मना नहीं है। गरम मसाला या कपूर नहीं खाना चाहिये। दूसरे प्रकारकी किसी चिकित्साके बाद यदि होमियोपैथिक दवा देनी हो तो पहिले दो एक बार कैम्फर खिलानेके बाद तब दवा देनी चाहिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—औषध प्रयोग करते रहने पर भी अर्थात् उसके साथ ही साथ कभी कभी दूसरा उपाय भी करना पडता है जैसे फोड़ा होनेपर, तीसी या अलसी या अंगारेकी पुल्टिस देकर फोडा पका कर चीरदेना उचित है औषधके द्वारा यदि दस्त न होता हो तो सुसुम (थोडा गरम) पानीके साथ साबुन घिस कर पिचकारी देनी चाहिये। विकारमें माथा यदि गरम हो जाय, बडे जोरकी मस्तकमें पीडा हो, या नाक मुहँसे रक्त गिरता हो तो बरफ या ठढा पानी देना चाहिये गरम जलका सेक या फलालनके

वक्त बढ़ना, रातके ११ बजे घटना, मदन दबानेसे आराम मिलना, करवट बदलने या चलनेसे पीड़ाका बढ़ना, बांई करवट सोनेसे आराम मिलना इत्यादि) प्रभृति विषयोंको धीरे धीरे उसे पूछ लेना चाहिये। इसके बाद बाहरी लक्षण सब (जैसे शरीरकी गरमी, नाड़ी, जिह्वा, चर्म्म, वक्षस्थल, पायखाना, पेशाब इत्यादि परीक्षा द्वारा) स्वयं निश्चय कर लेना चाहिये। किस तरहसे शरीरके गर्मीकी परीक्षा करनी चाहिये यह आगे लिखा गया है।

शरीरकी गर्मी।—शरीरकी गर्मी क्लिनिकाल थर्मामिटर (तापमान यन्त्र) द्वारा निर्णय करनी चाहिये।

(यह पारेसे भरा हुआ छोटे छोटे चिन्होंसे चिन्हित एक कांचकी नली है, सबके नीचे पारा है, उसके ऊपर कई एक छोटी बड़ी रेखायें और अङ्क चिन्ह हैं। पहिली बड़ी रेखा ८० या ८५ डिग्री। उसके बाद ४ छोटी छोटी रेखायें हैं, हरएक एक डिग्रीका पांचवां अंश बताती है। प्रत्येक बड़ी रेखा एक एक डिग्रीकी है। ८८ डिग्रीके ऊपर दूसरे छोटी रेखा पर एक तीरका चिन्ह है, यह मनुष्यकी स्वाभाविक गर्मीको बतानेवाली है। थर्मामिटरका पारेवाला अंश रोगीके बगलमें या जीभके नीचे अथवा गुह्यद्वारमें प्रवेश ... शरीरके तापकी परीक्षा करनी पड़ती है। ५ से १० मिनिट तक स्थिरभावसे बगलमें रखकर तब बाहर निकालना और देखना चाहिये। पारावाली जगहसे एक पतली पारेकी

लकीर उठकर जहां पर आ कर ठहर गई हो, शरीरमें उतनी ही डिग्री गरमी समझनी चाहिये ।)

अच्छे शरीरमें ९८·४ डिग्री, मुहमें ९८·५ डिग्री पर्य्यन्त गर्मी रहती है। लड़कोंके बदनमें जवानोंकी अपेक्षा कुछ अधिक गर्मी रहती है तथा जवानोंकी अपेक्षा ४० वर्षसे ऊपरी अवस्थावालोंके बदनकी गरमी कम होती है। निद्रा और विश्रामके समय शरीरकी गर्मी १॥ डिग्री कम हो जाती है। गात्र ताप यदि २॥ डिग्री अधिक हो जाये तो डरनेकी कोई बात नहीं है पर एक डिग्री कम होना निःसन्देह भयदायक है। मस्तककी आवरक झिल्लीमें जलन, फुसफुस प्रदाह, आरक्तज्वर, मोहज्वर और शीतला रोगमें गात्रताप १०६° से १०७° डिग्री तक बढ़ जाता है। अन्यान्य ज्वरमें सचराचर १०३° १०४° या १०५° डिग्री तक गर्मी बढ़ती है। शरीरमें १०० डिग्रीसे अधिक वा ९७° डिग्रीसे कमकी दूरी पर यदि पारा ठहर जाय तो समझना चाहिये कि किसी प्रकारकी बीमारी अवश्य हुई है। १००° से १०१° डिग्रीमें सामान्य और १०५° हो जानेसे प्रवल ज्वर समझना चाहिये। १०७° सांघातिक ज्वर, १०८° वा ११०° होनेसे समझना चाहिये कि रोगी शीघ्र ही मरेगा। टाइफयेड या आन्त्रिक ज्वरमे दूसरे सप्ताहमें सन्ध्याके समय गात्रताप १०२ या १०३ होनेसे सामान्य ज्वर, परन्तु १०५ होनेसे भयकी बात हो जाती है. सूतिका ज्वरमें साधारणत

१०५° तक गर्मी बढ जाती है। ८७° से ८०° डिग्री तक पतन अवस्था समझी जाती है। हैजेके रोगमें कभी कभी जाड़ा मालूम होकर ८०° डिग्री तक गर्मी रह जाती है। नये और सतत रहने वाले ज्वरमें, पुराने क्षय रोगमें, गर्मीका सहसा खूब कम हो जाना आशंका जनक है।

नाड़ीस्पन्दन।—जन्मसे १ वर्षकी उमर तक प्रति मिनिट में १५० से १४० बार तक, २ से ५ वर्षकी उमरतक ११० से १०० तक, ६ से १५ वर्षकी अवस्थामें ८०, १६ से ५० वर्षकी अवस्थातक ७५ बार और बुढ़ापेमें ७० बार नाड़ी स्पन्दन होती है। स्वाभाविक स्पन्दनकी अपेक्षा २० बार कम होनेसे जीवनी शक्तिका कम होना समझा जाता है।

श्वास-प्रश्वास।—शरीरकी अच्छी अवस्था रहनेपर जवान आदमी २० बार सांस लेता है। श्वास प्रश्वासकी गति यदि धीमी हो, तो यह लक्षण अच्छा समझना चाहिये। सांस यदि शीतल या जल्दी जल्दी चलता हो तो इसे मृत्यु लक्षण समझना चाहिये, वक्षस्थल या फुसफुसमें पीड़ा होनेसे सांस तेज चलने लगता है और दुर्बल अवस्थामें कम चलता है।

नाड़ी, श्वास और शरीरकी गर्मीका आपसमें सम्बन्ध।—शरीरकी गर्मी यदि १ डिग्री बढ जाय तो नाड़ी १० बार अधिक चलेगी और सांस दो बार अधिक चलेगा। शरीरकी स्वाभाविक गर्मी ८८०४, नाड़ी स्पन्दन

७५ तथा सांसकी २० वार चलती है। शरीरकी गर्मी यदि १००° हो तो नाड़ी स्पन्दन ८२ वार और सांस २३ वार चलेगी। साधारणतः दो वारके सांस लेनेमें सात वार नाड़ी चलती है।

जिह्वा परीक्षा।—यह भी रोग निर्णयका एक प्रधान सहाय है। इसके रंगके हेरफेरसे रोग तुरत ही पहिचाना जाता है। तीव्र सन्निपातिक विकारमें नवेज्वरमें तथा अति दुर्व्वलता होनेसे जीभ सूख जाती है। लाल जीभ स्फोटकज्वर या पाकस्थलीके सम्बन्धका कोई रोग बताती है। यदि जीभ पर उजला लेपसा चढ़ा मालूम हो और उसपर लाल लाल दानें दिखाई दें तो उसे आरक्त ज्वरका लक्षण समझना चाहिये। जिह्वाका पिछला और अगला हिस्सा यदि सूखासा दिखाई दे तो उसे पैत्तिक ज्वर समझना चाहिये। यदि जिह्वा कफ संयुक्त दिखाई दे तो समझना चाहिये कि यह रक्तहीनता और दुर्व्वलताका लक्षण है। सूखी जीभ यदि तर हो जाय और पीछेकी ओरसे साफ होती जाये तो समझना चाहिये कि यह आरोग्यताका लक्षण है। काली या बैगनी रंगकी जीभ बताती है कि नाड़ियोंमें रक्त संचालन बंद हो रहा है। अच्छी अवस्थामें जीभ सदैव तर रहती है।

मुखमण्डल।—यह शरीरका आईना है। इसलिये

मुंह देखकर भी शरीरकी अस्वस्थताके विषयमें जाना जा सकता है। प्रसन्न मुख सुस्थताका चिन्ह है। परन्तु वक्षस्थलकी पीड़ा या और किसी पीड़ाके बाद रोगीका प्रशान्त या प्रसन्न वदन शुभ लक्षण दिखानेवाला नहीं हो सकता। फुसफुसमें दर्द होनेसे मुखपर चिन्ता, संकोच, श्वासकष्ट इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। मलज्ज मुखमण्डल धातुदौर्बल्यताका चिन्ह है। ज्वरके साथ कब्जियत होनेसे मुख मलिन, लाल, तथा ओठ काले हो जाते हैं।

गात्रचर्म।—यदन रूखड़ा, सूखा और गरम हो तो ज्वर समझना चाहिये। शरीरकी गर्मी कम हो साथ ही साथ यदि और और लक्षण भी कम होते जाय और पसीना हो तो इसे अच्छा लक्षण समझना चाहिये। समस्त शरीरमें पसीना न होकर यदि किसी एक ही स्थानमें हो तो यह स्नायविक दौर्बल्य और उस स्थानके नीचे प्रदाहका लक्षण दिखा रहा है। विषम और प्रादाहिक ज्वरमें पसीना होनेके बाद और और पीड़ा यदि न दबे तो इसे बुरा लक्षण समझना चाहिये। विषमज्वर, मलेरियाज्वर, सूतिकाज्वर और दूसरे दूसरे ज्वरोंमें जाड़ा और कंपकंपी भी मालूम पड़ती है।

के (वमन) और हिचकी।—पाकस्थलीमें दोष मस्तक सम्बन्धी पीड़ा और वक्षस्थल, फुसफुस जरायु इत्यादि

यन्त्रोंकी क्रियाके बिगड़नेसे कै होती है। क्रिमी, अंवामा और यकृतके प्रदाहमें हिचकी आती है।

वेदना।—यदि एक ही स्थानमें दर्द मालूम हो, दर्द-वाली जगह गरम हो और दबानेसे पीड़ा बढ़े, तब उसे प्रदाहजनित वेदना समझना चाहिये। हिलने डोलनेसे यदि दर्द बढ़े तो उसे पसुली (पंसी) की दर्द समझनी चाहिये स्नायुशूलकी दर्द दबाने या घूमने फिरनेसे बढ़ती या घटती है। यकृत प्रदाहमें दाहिने कंधेमें दर्द और हृतपिण्डकी पीड़ासे बायें हाथमें दर्द होता है। अश्मरी पीड़ामें पुरुषाङ्गके अग्रभागमें पीड़ा होती है।

वक्षस्थल।—वक्षः परीक्षा प्रधानतः तीन प्रकारकी होती है। (१) देखकर (२) छूकर (३) सुनकर।

देखकर।—रोगीको स्थिर भावसे बैठाकर देखना चाहिये कि सम्पूर्ण वक्षस्थल विकाश प्राप्त है, सिकुड़ा हुआ है और प्रत्येकबार सांस लेने और छोड़नेसे ऊंचा होता है कि भुक जाता है या कोई स्थान सुज गया है या नहीं। (२) छूकर या ठोंककर—बायें हाथकी हथेलीको रोगीके वक्षके ऊपर रखकर दाहिने हाथकी तर्जनी अंगुलीसे उसे ठोकना चाहिये, यदि ठन् ठन् शब्द हो तो स्वाभाविक अवस्था समझना चाहिये। [illegible] धुप धुप शब्द [illegible] इत्यादि समझना चाहिये। [illegible]

हैजेके रोगीके दस्त और के में एक प्रकारके कीड़े (Bacillus) देखे जाते है, ये विषाक्त होते हैं। इन्हीका विष अच्छे शरीरमें प्रवेश करनेसे मनुष्यको हैजा होता है। यह बराबर देखा गया है कि जिस तालाबमें हैजेके रोगीका मल मूत्र फेंका जाता है या कपड़ा धोया जाता है उसका जल पीनेसे यह रोग उत्पन्न होता है (Vide Macnamara's Treatise on Asiatic Cholera)

सन् १८१७ ईस्वीमें बंगालके यशोहर जिलाके अन्तर्गत नलडाङ्गा नामके गांवमे एक बड़ा मेला जमा हुआ था उस समय वहां यह रोग उत्पन्न हो कर धीरे धीरे पासके जिलामें फैल गया। ग्रीष्ट लिया, अण्डामन इत्यादि टापुओंको छोड़ कर और सब देशोंमें इस रोगने अपना आधिपत्य जमा लिया है।

हैजा दो तरहका होता है एक <u>सामान्य</u> और दूसरा <u>साघातिक</u>। सामान्य हैजेको प्रबल अजीर्ण भी कहते है। और साघातिक हैजाको (एसियाटिक कलेरा) प्रकृत हैजा कहते है। कभी कभी सामान्य हैजा भी साघातिक हैजा हो जाता है। चिकित्सकोंके सुबीधाके लिये दोनों हैजेका पार्थक्य नीचे अलग २ दिखाया जाता है।

– –

सांघातिक हैजा

१। यह कुछ जरूरी नहीं है कि यह हैजा आहार के दोषहीसे पदा हो।

२। इसमें अधिकतर नीचे के अङ्गोमें (खासकर जांघमें) दर्द होता है।

३। इसमें दस्त कै अधिक या कम हो पर रोगी तुरंत कमजोर हो जाता है।

४। इसमें एकाएक बदन की गरमी कम हो जाती है।

५। इसमें शुरूहीसे चावल के धोवनकी भांति पायखाना होता है।

६। इसमें पहिले हाथ और पैर की अंगुलि ऐंठती है फिर समूचा हाथ पर ऐंठने लगता है

७। इसमें पहिले नाखून फिर पाछे समस्त शरीर नीला हो जाता है

सामान्य हैजा

१। यह अधिकतर आ दोष में ही उत्पन्न होता

२। इसमें नाभिके चारो खींचनेकी तरह पीड़ा हो है।

३। इसमें अधिक कै दस्त होनेसे भी रोगी वैसा कम जोर नहीं होता।

४। इसमें बदनकी गरमी धीरे २ कम होती है।

५। इसमें पहिले ऐंठन जलन और दर्दके साथ पित्त संयुक्त दस्त होता है तथा पीछे पित्त नहीं रहता है।

६। इसमें पहिले पेटमें ऐंठन होता है पर जांघमें नहीं होता है

७। इसमें रोगीका चेहरा रंग बदल जाता है

ऊपर लिखेहुए दोनों तरहके हैजेके अलावे एक तरहका और भी हैजा होता है, उसमें दस्त के या एंटन कुछ भी नहीं होती ; पर पेशाव बन्द होना सुस्ती, प्यास और दाह इत्यादि हैजेके बाकी सब लक्षण दिखाई देते हैं। इस तरहके हैजेको "सूखा" हैजा (Dry Cholera) कहते हैं। यह साधातिक हैजेका एक प्रकारान्तर मात्र है। यह रोग हठात् रोगीको हो जाता है और तुरंत ही शरीर नीला और ठण्डा हो जाता है तथा नाड़ी लोप, स्वरभङ्ग और क्षीण स्वर हो जाता है और पेशाव बन्द होना आदि सांघातिक लक्षण दिखाई देते हैं।

पूर्ववर्त्ती कारण।—कच्चा फल मूल, खट्टी या सड़ी हुई चीजोंका भोजन, गन्धी हवामें फिरना, गन्धा और बिना साफ किया हुआ पानीको पीना, अपरिमित आहार, नशीली चीजोंका अधिक सेवन रात्रि जागरण, ऋतु परिवर्त्तनादि इसके पूर्व्ववर्त्ती कारण हैं।

उत्तेजक कारण।—पहिले लिखे हुए कीड़े। यही कीड़े (Bacilli) प्रधानत: हैजेके रोगीके मल मूत्र वमनमें देखे जाते है। परन्तु ये कीड़े किस तरह उत्पन्न होते हैं। इसके बारेमें अभीतक कोई बात स्थिर नहीं हुई है।

प्रतिषेधक उपाय।—हैजेके समय मैले और दुर्गन्धयुक्त स्थानमें रहना, अधिक भोजन, अपरिष्कृत जलपान, और अधिक परिश्रम, और सड़ा मछली मांस इत्यादि भोजन, बिलकुल मना है। यह रोग जब फैला रहे उस समय चित्तमें डर न पैठा हो ऐसा उपाय अवश्य करना चाहिये। रातमें अधिक जागरण, ठण्डी और दुर्गन्धित वायुका सेवन कभी न करना चाहिये। घरमें जो जो स्थान नीचा, तर या दुर्गन्धित हो उसको कार्बोलिक एसिड चूना अंगार इत्यादि छोड़वाकर साफ कर लेना उचित है। महामारीके समय किउप्राम ३० या सलफर ३० का व्यवहार करना चाहिये। रोगी का के या दस्त पानी या खानेकी चीज किसी के साथ पेटमें न जाना चाहिये। हैजेके रोगीके मल या वमन को अलकतरा या चूनामें डालकर मट्टीमें गाड़ देनेसे फिर अधिक भय नहीं रहता। यदि माको हैजा हो जावे तो लड़केको कभी उसका दूध पीने देना न चाहिये।

औषधोंकी सहायता से इस रोग की मोटामोटी चिकित्सा लिखी जाती है।

अधिक जल्दी के और दस्त तथा कपालपर ठण्डा पसीना दिखाई दे तो, भिराट्रम ६ देना चाहिये। ऐसेमें यदि हाथ पैर का खींचना या ऐंठन अधिक दिखाई दे (विशेषकर हाथ पैरमें) तो क्युप्राम ६ देना चाहिये। यदि के और दस्तके साथ प्यासभी प्रबल हो तो, बदनमें दाह रहते भी रोगी दस्त इत्यादि से बदनको ढांके रखना चाहे बड़ी सुस्ती दुर्बलता और अस्थिरता हो तो आर्सेनिक ६, के और दस्तके साथ पेटमें ज्वाला या बड़ी दर्द मालूम हो, मृत्यु भय हो, और रोगी छटपटाये तो आकोनाइट रेडिक्स माटर के व्यवहारसे आश्चर्यसे डालनेवाला फल दिखलाई देगा। कै का अधिक जोर और कै होनेपर भी उसकी शान्ति न होने पर इपिकाक ६, परन्तु यदि कै हो जाने पर फिर कै होनेकी इच्छा न रहे तो एण्टिमटार्ट ६ देना चाहिये। गरम दस्त गरम के प्रबल प्यास या प्यासका एकदम न रहना, लड़कोंको दांत उत्पन्न होनेके समय उदरामयमें तथा शिशु विशूचिकामें डाक्टर सर्कार पडोफाइलम ६ व्यवहार करनेकी राय देते हैं। रोगीका शरीर ठण्डा रहे लेकिन पेटके भीतर सदा ज्वाला रोगीको मालूम हो, सदा हवा करनेको कहे, बदनका कपड़ा निकालकर फेंक दे। बराबर दस्त होना गुह्यद्वार खुला रहना आदि लक्षणमें सिकेलि ३ उपयोगी है। हिमांग, सब शरीर

नीला, कै दस्त और थोड़ा पसीना और शरीर शीतल बदनपर कपड़ेको न रखने देना इत्यादि लक्षण हो तो कैम्फर देना चाहिये। *

नाड़ी सूक्ष्म, मुख विकृत और विवर्ण शरीर बरफकी भांति ठण्डा। ऊर्द्ध्वश्वास (नाभिश्वास) इत्यादि अन्तिमकालके लक्षण दिखाई देनेपर कोब्रा या न्याजा ३ विचूर्ण प्रयोग करनेसे बहुत सुफलता प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त सफाईका और पूरा ध्यान रखना चाहिये रोगीके पहिरने और बिछानेका वस्त्र मालिका घर और मकान सदा साफ सुथरे रखना चाहिये। मल मूत्र वमन तथा उसमें भीजे हुए वस्त्र इत्यादि रखनेका जगहमें दूर गाड़ना या जला देना चाहिये। इस बात पर पूरा ध्यान रखे कि गांवके किसी तालाबमें कपड़ा कभी न धोया जाये तथा मल वमन इत्यादि पायखाना या सूखी जगहमें कभी न फेंका जाय नहीं तो आस पास की सब जगहमें हैजा फैल जायेगा।

साथ ही इसके इस बातपर भी ध्यान रखना चाहिये कि रोगारम्भमें लेकर आरोग्य अवस्था तक अर्थात पथ्य पा जानेके बाद चार घण्टाबाद तक रोगीको बरफ खाने या बरफका टुकड़ा चूसनेको देना चाहिये नहीं तो रोगी मर जा

* [illegible]

सकता है। प्रतिक्रिया अवस्था आरम्भ होनेके तीन चार घण्टे बाद पथ्यकी व्यवस्था की जा सकती है। पेशाव होने के बाद (या जिस समय स्पष्ट रूपमें मालूम हो कि मूत्र मूत्राधारमें जमा है और पेशाव उतरता नहीं) तब साबूदाना पानीमें बनाकर उसमें थोड़ा चीनी या निमक देकर खिला देना चाहिये। मलमें पित्तका भाग दिखाई देतो पानीमें औटाया साबु वार्ली या उनके साथ बहुत थोड़ा दूध देना चाहिये। कैसा भी कोई कारण क्यों न हो रोगीको के दस्त आरम्भ हो जानेके बाद कभी स्नान न करने देना चाहिये। बहुत से आदमी विचारतेहैं कि गरमीसे "कै" "दस्त" हुआ है स्नान करनेसे या "ठण्डा" व्यवहार करनेसे रोगका उपशम हो जायेगा। परन्तु ऐसा कभी विचारना न चाहिये, के दस्त होने पर स्नान या खाकर कितने ही लोगोंने अपने अपने प्राण गवायें हैं।

---

(१) आक्रमणावस्था।—रोग आरम्भ की सूचना अर्थात् चावलके धोअनकी तरह दस्त होनेके पूर्व्व आक्रमण अवस्था रहती है। इस अवस्थामें शरीरकी गरमी धीरे धीरे कम होती जाती है। दुर्व्वलता फुरतीका कम हो जाना, सिरका घूमना, नींद न आना, अनम्भव वमन की इच्छा. अरुचि श्वास, मुंहका बे-स्वाद हो जाना, पेटमें भारीपन या दर्द मालूम होना. कभी जाड़ा, कभी गरमी मालूम पड़ना, कानमें

सीं सीं या दम् दम् शब्दका होना, उदरामय इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं हैजेका कीडा जिस दिन शरीरमें प्रवेश करता है, उसी दिनमें एक सप्ताहके भीतर रोगी नित्य ५।७ बार पेट ऐंठकर या बिना पेट ऐंठे ही रंग बिरंगी पतला मलत्याग करता है। मल कभी पित्त मिला हुआ और कभी दूसरी तरहका होता है।

(२) पूर्ण विकसितावस्था।—जब कि चावलके धोअनकी भांति दस्त और कै हो उस समय दूसरी अवस्थाका आरम्भ होता है। इस अवस्थामें चावलके धोअनकी तरह दस्त और कै होता है या जी मचलाता है। तेज प्यास, चेहरा मलिन, आंखें बैठ जाना शरीरका विवर्ण हो जाना, सब शरीरमें ठण्डा पसीना होना (विशेष करके मस्तकमें) फिर पेशाब बन्द हो कर नाडीका क्षीण हो जाना, आंखोंके चारो ओर नीली रेखा स्वरभङ्ग पेटमें दर्द, पाकस्थलीमें जलन, पेटका गडगडाना, शरीरके स्थान स्थानपर विशेषकरके हाथ पैरकी अङ्गुलियोंका ऐंठना शरीरकी अवसन्नता और अस्थिरता। मुह और ओंठोंका सूख जाना इत्यादि लक्षण प्रगट होते हैं। कभी कभी इन लक्षणोंमें कभी वेशी हो जाती है। जैसे किसी रोगीको दस्त अधिक होता है पर कै कम होता है। किसी को दस्त ही कम होता है पर कै और कै की इच्छा अधिक होती है। इसी विकसित अवस्थाके ये सब लक्षण यदि ८से १२ घण्टेतक रहे तो

मलके साथ पित्त (अथवा पीला या हरे रंगका दस्त) होनेसे और उक्त लक्षण कम होनेसे रोगी धीरे धीरे आराम हो जाता है। परन्तु ऐसा न हो कर यदि समस्त शरीर शीतल, मुखाकृति बिगड़ी हुई और नाड़ी लुप्त प्राय इत्यादि लक्षण दिखाई दें तो पतनावस्थाके निकट समझना चाहिये। इस अवस्थामें बहुतेरे रोगीमर जाते हैं, और यदि १२ घण्टा बचा रहे तो जी भी सकता है।

(३) हिमाङ्ग अवस्था।—यही हैजेकी प्रकृत अवस्था है। यही पतनावस्था बड़ी भयानक है। और इसि अवस्थामें प्रायः रोगी की मृत्यु होती है द्वितीय अवस्थामें के दस्त सहसा कम हो जाता है, रोगी प्यासमें अस्थिर होता है लेकिन प्यासके साथ कै इतना बढ़ जाता है कि जल पीनेके साथ ही अत्यन्त कष्टकर वमन होकर तुरन्त पानी उठ जाता है। बारम्बार कै होते होते रोगी अत्यन्त निस्तेज हो जाता है और धीरे धीरे मणिबन्धसे भी नाड़ी लोप हो जाती है यहांतक कि बांहकी गड्डतक नाड़ीका पता नहीं लगता। धीरे धीरे जीवनी शक्तिका ह्रास होता है, और बदन बरफ की तरह ठण्डा हो जाता है। ओंठ नीला, सब शरीर मलिन या नीले रंगका हो कर आंखें बैठ जाती हैं, तथा प्रभाशून्य और स्थिर हो जाती है। बहुतेरा फैल जाता है सांस लेनेमें बड़ा कष्ट होता है स्वर भंग हो गलेमें बड़ी ही दबी हुई आवाज निकलती है। ऐसी कि पास तक

सुनाई नहीं पड़ती) पेशाब बन्द हो जाता है और हाथ पैरकी अंगुलियोंका अग्रभाग सिकुड़ जाता है (जैसा कि बहुत देरतक पानीमें भींगे रहनेमें हो जाता है) प्रभृति लक्षण दिखाई देते हैं। अत्यन्त बदनमें दाह हो जानेके कारण रोगी शय्यापर छटपटाता है बदनका कपड़ा यहांतक की धोती-तक उतारकर फेंक देता है। कभी कभी मुंह पर बूंद बूंद पसीना दिखलाई देता है। इस अवस्थामें प्रायः बेमालुम दस्त ही अधिक होता है या दस्त बन्द होकर पेट फूल जाता है। तीसरी अवस्थाके अन्तमें रोगी ऐसा निस्तेज हो जाता है कि उसको करवट भी लेनेको शक्ति नहीं रहती, परन्तु "हैजा" रोगमें मरने के पहिले तक रोगीको ज्ञान रहता है। इस अवस्थामें दस्त के बन्द होनेके थोड़ी ही देरबाद मृत्यु हो जाती है अथवा २।३ घण्टा चुपचाप पड़े रहनेके बाद मृत्यु हो जाती है। यदि के दस्त बन्द होनेके चार पांच घण्टा बाद तक रोगी न मरे तो (४) प्रतिक्रियावस्थाका आरम्भ समझना चाहिये।

(४) प्रतिक्रियावस्था।—तृतीयावस्थाके अन्तमें के दस्त बन्द और नाड़ी लोप होने परभी मृत्यु न होनेसे फिर मणिबन्धमें नाड़ी पाई जाती है। इसाके साथ तीसरी या पूर्णविकसित अवस्थाके लक्षण धीरे धीरे फिर पाये जाते हैं। यदि स्वास्थ्य या स्वाभाविक प्रतिक्रिया आरम्भ हो तो बदन गरम हो कर फिर पित्त मिला हुआ के और दस्त हो कर जीवनी शक्ति वृद्धि होती है पेशाब होता है या मूत्राशयमें जमा होता

करना उचित है। डाक्टर फेरिङ्गटन कहते हैं कि दस्त कम, के अधिक, सर्व्वाङ्ग शीतल, स्वरका बदलना, यह सब लक्षणोंमें "कैम्फर" देना। ग्रीष्म या ठण्डके अजीर्ण या उदरामयके बाद हैजा हो जानेमें कैम्फर उपकारी होता है। इस रोगकी आक्रमणावस्थामें जब थोड़ा जाड़ा लगना, दुर्ब्बलता, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, पाकस्थलीमें जलन, माथाका घूमना, इत्यादि लक्षण मालूम होतो उस समय "कैम्फर" प्रयोग करना चाहिये। दस्त और के जिस हैजेमें नहीं है उसका कैम्फर ही एकमात्र औषध है। अत्यन्त स्नायविक अवसन्नता, सर्व्वाङ्ग बरफकी भांति शीतल, पसीना न होना या एक दम ठण्डा पसीना होना, हाथ पैर बदन श्यामकष्ट, आंखे स्थिर, नाड़ी क्षीण, सर्व्वाङ्ग नीलवर्ण इत्यादि लक्षणोंमें कैम्फर उपयोगी है। हिमाङ्ग अवस्थामें जिस समय के दस्त बन्द होकर प्रतिक्रियावस्था आरम्भन हो तो उस समय कम्फर दो एकबार जरूर देना चाहिये। इस अवस्थामें हृद्दम्प, हृत्पिण्ड और पेशोमें पक्षाघात होनेसे और "कार्ब्बोभेज," "फसफरस" इत्यादि औषध प्रयोगसे कोई लाभ न दिखाइ देनेपर "कम्फर" देना चाहिये। श्वासिपक्षीम, हैजेमें या आर्मेयिक हजकी विकसित अवस्थामें कैम्फरसे कोई फल नहीं होता। अधिक मात्रा बार बार कैम्फर प्रयोग करनेसे यदि आमाशयमें जलन, मानसिक अस्वच्छन्दता इत्यादि कष्टकर लक्षण दिखाई दे तो दो एक बार "फसफरस" खिलानेसे वे शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

कविराजी, हकीमी या एलोपैथिक चिकित्सा के बाद होमियोपैथिक चिकित्सा यदि करना हो तो पहिले दो एक बार कैम्फर खिलाकर तब दूसरी दवा खिलाना चाहिये

कैम्फर प्रयोगकी मात्रा । १०।१५ मिनिट के बाद एक एक मात्रा रुबिनीका कैम्फर चीनी या बताशाके साथ खिलाना चाहिये। लड़कोंके लिये ३।४ बूंद, चार युवा या बूढ़े के लिये (रोगके उग्रता के अनुसार) ५ से १० बूंद तक प्रयोग करना चाहिये। दो घण्टे के भीतर ८।१० बार कैम्फर प्रयोग करने पर भी यदि कोई लाभ न दिखाई दे तो दूसरी दवा देना चाहिये।

— —

१) आक्रमण अवस्थाकी चिकित्सा।

उदरामयकी चिकित्साकी तरह। इस ग्रन्थके "उदरामय चिकित्सा प्रकरण" को देखिये

(२) पूर्ण विकसितावस्थाकी चिकित्सा —

[illegible]

[illegible]

अवसन्नता तथा अत्यन्त घाम और मृतवत् मुखाकृति—आर्सेनिक प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं। हैजेकी सभी अवस्याओंमें आर्सेनिक प्रयोग किया जा सकता है।

<u>किउप्राम मेट ६-१२-३०</u>।—हैजेके दूसरे सब लक्षणोंके साथही साथ जिस समय आक्षेप उपस्थित हो उस समय किउप्राम देना चाहिये। सर्व्वाङ्गशीतल (या नीलवर्ण) हो कर, हाथ पैर विशेष करके हाथ पैरकी अङ्गुलिया और पैरके पिंडुलीमें यदि ऐंठन हो, बेचैनीके कारण रोगी छटपटाता हो, तारकी तरह पतली नाड़ी, या लुप्तप्राय नाड़ी, आंखें उलटी या धस गई हुई, कानमें कम सुनाईदेना या एकदम बन्द हो जाना। पानी पीतेही गलेमें कल् कल् या ढक् ढक् शब्द होना, ठण्डी चीजोंकी अपेक्षा गरम चीज खानेकी इच्छा, वमन या वमनेच्छा साथही साथ पेटमें दर्द, ठण्डा पानी पीनेसे वमनका बन्द होना, कै करते समय आंखोंसे पानीका निकलना। पाखानेकी जगहका खुजलाना, जीभकी जड़ताके कारण बातोंका साफ न निकलना। फटा हुआ और मट्ठेकी तरह पतला दस्त और कै, मूत्रत्यागकी इच्छा लेकिन मूत्रका न होना, घन घन श्वास प्रश्वास, प्रलाप चिल्लाना। हाथ पैरमें खैंचन दांतपर दांतका घिसना इत्यादि लक्षणोंमें यह प्रयोजनीय है।

आक्षेपयुक्त साघातिक हैजे मे जिस समय खाद्य वहा

नालीकी ऊपता हो तथा औषध या कोई द्रव्य पेटमें जाते ही कै हो जाय उस समय किउप्रामके प्रयोग करनेसे पेय या खाद्यद्रव्य धारण करनेकी सामर्थ्य हो जाती है। डा० प्रकृर कहते हैं कि किउप्राम ऐंठनकी अति उत्तम दवा है।

<u>रिसिनास ३-६</u> ।—वेदना हीन कै या दस्त; अधिक चावलके धोवनकी भांति दस्त, पेशाब बन्द इन सब लक्षणोंमें उपयोगी है।

<u>सिकेलि-कार ३-६</u> ।—किउप्राम प्रयोग करनेसे आक्षेप आदिकी निवृत्ति यदि न हो और अधिक करके निम्न-लिखित लक्षण दिखाई दे तो—सिकेलि प्रयोग करना उचित है। मृत्युभय, आंखोंका बैठजाना, कानसे कम सुनाई देना, मुंह मलिन। शुष्क और रक्त हीन, साफ और सुफेद रंगकी जीभ और उसमें भी रह रह कर कम्पन, बड़ी प्यास और भूख वमन या वमनेच्छा पाकस्थलीमें जलन, मूत्ररोध, वक्षस्थलके दाएं तरफ ऐंठनकी भांति दर्द, नाड़ी सूक्ष्म और तृणप्राय, हाथ पैरकी अंगुलियोंमें ऐंठन या टेढ़ा हो जाना, शरीरमें [illegible] ठंढक न रहना, हाथ पैरका कांपना और [illegible] सब टेढ़ा होना जीभ ऐंठना और [illegible] इत्यादि लक्षणोंमें सिकेलि [illegible] उप-योगी है। [illegible]

हाथ पैरमें ऐंठन, सर्व्वाङ्ग विशेष करके मुखमण्डल नीला, धनुष्टङ्कारकी भांति पीछे टेढ़ा हो जाना, क्रिमि या श्लेष्मा के करना, वमनके बाद आराम मिलना इत्यादि इस औषधके प्रधान लक्षण हैं।

एकोनाइट रैडिक्स१, १x।—दस्त कैके साथ साथ सर्व्वाङ्ग शीतल, समस्त शरीर नीलवर्ण, सांस लेने और छोड़नेमें कष्ट। पेटमें बड़ी दर्द, मुख मलिन, पानी सा पतला दस्त, हरा, कांपना, पित्त वमन, मूत्रावरोध, सिरमें दर्द, सांस ठण्डी, लुप्तप्राय क्षीण नाड़ी और कभी कभी पेटमें ऐंठन इत्यादि लक्षणोंमें देना चाहिये।

हिमाङ्ग अवस्था और प्रतिक्रिया अवस्थामें बदन गरम न रहने पर ऐकोनाइट रैडिक्स १x देना चाहिये।

पतनावस्थामें हृत्पिण्डके क्रियाकी क्षीणता रहने पर भी हृत्स्पन्दनकी समता व्याकुलता और मृत्युभय, पतनावस्थामें श्लेष्मामय चटचटा दस्त होनेमें एकोनाइट रैडिक्स १x। हैजेकी परिणामावस्थामें ज्वर हो आवे तो बेलडोना ३x और ऐकोनाइट रैडिक्स १x पारापारीसे देना चाहिये।

एण्टिम टार्ट ६, ३०। पूर्ण विकसित अवस्थाके शेषभाग-में जब कैके बादही तुरत मूर्छा या मूर्छावेश हो और फिर वमनके समय चैतन्यता हो उस समय एण्टिम टार्ट देना चाहिये। उपरोक्त लक्षणोंके साथही साथ वक्षस्थलमें जलन

या दर्द हो, रोगी तन्द्रामें रहे या सुस्त पड़ जाय किसी बातका जवाब न दिया चाहता हो, बार बार बड़े कातर स्वरमें बोलता हो, श्वास अधिक, प्रश्वास कम, नाड़ी क्षीण और मन्द, जलवत् या फेनीला हरा मलत्याग, अज्ञानावस्थामें मलत्याग, कष्टकर वमनेच्छा बड़े कष्टसे थोड़ासा वमन, आंखोंका बैठ जाना और दृष्टि हीनता इत्यादि लक्षणोंमें एण्टिम टार्ट देना ।

पतनावस्थामें यदि हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होती देखी जावे तो ऐण्टिमटार्ट। भेराट्रम और ऐण्टिम टार्टके लक्षण प्राय एकही प्रकारके होते हैं। तब मांसपेशी कम्पन और बेहोश अधिक रहनेसे ऐण्टिमटार्ट और हृत्पिण्डकी दुर्बलता या पक्षाघातमें भेराट्रमसे यदि कोई फल न हो तो एण्टिमटार्ट देना चाहिये ।

आइरिस भार्स ३x —नाभिके चारों तरफ और पेडूमें दर्द हो कर खट्टी बदबू लिये हुए दस्त हो, सादा या पित्त मिला हुआ दस्त हो, अम्ल वमन तथा पित्तयुक्त पतला दस्त, अधिक रात बीते जागनेपर कष्टका बढ़ना, खाई हुई चीजका कै करना फिर पित्त कै करना और कै के बाद [illegible] दाह, पसीना और [illegible] इत्यादि लक्षणोंमें ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ यदि [illegible] हो तो इस दवासे कोई उपकार न होगा

इपिकाक ३x, ६ [illegible]

घोर, लाल रङ्ग दस्त होना (उक्त रक्त दस्त होनेके साथ श्लेष्मा न रहे)।

मार्क्यूरियस कर ३।—हैजेके अन्यान्य लक्षणोंके साथ (चावलके धोवनकी भांति दस्त न होकर) रक्त मिला हुआ श्लेष्मास्राव होनेसे अजीर्णके (उदरामय) बाद हैजा होनेसे मार्क कर विशेष उपयोगी दवा है।

क्रोटन टिग ३, ६ ।—सहसा पिचकारीकी तरह जोरसे पतला दस्त होना। पेटमें बड़ा दर्द हो और पानी या पतला पदार्थ पीतेही कै हो जाना इत्यादि लक्षणोंमें।

ज्याट्रोफा ३, ६ ।—चावलके धोवनकी भांति दस्त होनेके बदले चटचटा उजले रंगका पतला दस्त हो। पहिले कै पीछे दस्त, सब अङ्ग शीतल, पसीना ठण्डा, हाथ पैरमें ऐंठन, पेटमें गड़ गड़ या कल कल शब्द।

मात्रा।—रोगकी तेजीके अनुसार १०।१५।२० मिनिट या आधे आधे घण्टे पर एक एक मात्रा औषध देना चाहिये।

आनुसङ्गिक उपाय।- रोगके प्रारम्भावस्थामें रोगीको सूखे और साफ घरमें सुलाना चाहिये। रोगीके घरमें सदा साफ सुथरी हवा आनी चाहिये ऐसा उपाय अवश्य करें। घरमें धूना, कपूर, गन्धक इत्यादि जलाना अच्छा है। दूसरी अवस्थामें रोगीको पथ्य कभी न दें। प्यासके लिये ठण्डा जल या बरफ भी दिया जा सक्ता है। घरसे बहुत दूर मल, मूत्र, वमन इत्यादि मिट्टीमें गाड़ देना चाहिये।

हिमाङ्ग अवस्थाकी चिकित्सा।- कितनेही औषध ऐसे हैं जो पूर्व्वविकम्पित अवस्थामें भी दिये जाते हैं और हिमाङ्ग अवस्थामें भी उनकी जरूरत पड़ती है। जो औषध एकबार पूर्व्वविकम्पित अवस्थामें खिलाया जा चुका है उसीको फिर हिमाङ्ग अवस्थामें खिलानेसे कोई लाभ होना सम्भव नहीं है।

पतन अवस्थाके पहिले यदि कोई औषध प्रयोग करनेसे रह गया हो अर्थात् न खिलाया गया हो तो पहिले ही २।३ बार कैम्फर प्रयोग करनेसे यथेष्ट उपकार होगा। सांघातिक हैजेके प्रथम अवस्थामें २।३ दस्त के होते ही रोगी हठात् निस्तेज हो जाय चैतन्यता जाती रहे, सब शरीर नीला पड़ जाय, मुंह सुख जावे, दृष्टि स्थिर रहे, सब शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जावे, जीभ जकड़ जावे या स्वरभङ्ग हो, हाथ पैर एंठने लगें तथा नाड़ी लुप्तप्राय हो जाय तो ऐसी अवस्थामें विवेचना करके २।३ मात्रा कैम्फर देनेहीसे लाभ दिखाई देगा।

पतनावस्थाके पहिले यदि आर्सेनिक, भेराट्रम किउप्राम, सिकेलि कर और ऐकोनाइट इत्यादि औषध प्रयोग न दिये गये हों तो हिमाङ्ग अवस्थामें यह सब औषध लक्षणके अनुसार प्रयोग किये जा सक्ते हैं।

कार्ब्बोभेज ६-१२-३०।—हिमाङ्ग अवस्थामें कार्ब्बो-

भेज विशेष उपकारि औषध है। सब शरीर बरफकि भांति शीतल, जीभ ठण्डी तथा नीली, नाड़ी लुप्तप्राय, आंखें धसी हुई, कपाल और गले पर पसीनाका बूद, स्वरभङ्ग या अस्पष्ट वाक्य कै दस्त बन्द हो कर पेट फूला हुआ, सांस लेनेमें बड़ा कष्ट, अत्यन्त दाह, सब शरीर नीला इत्यादि लक्षणोंमें कार्ब्बो-भेज दिया जाता है। यदि इस अवस्थाके पहिले भेराट्रम या आर्सेनिक प्रयोग न किये गये हो तो ये दोनो पारापारी देनेसे यथेष्ट उपकारकी सम्भावना है। पेट फूला रहनेके साथ यदि दुर्गन्धित मल भी निकले तो कार्ब्बोभेज अवश्य देना चाहिये।

<u>एसिड हाइड्रो</u> ३, ६।—मृतवत् आकार, सांसका धीरे धीरे चलना, पसीना ठण्डा, नाड़ीका लोप हो जाना, सब शरीर (विशेषत: जीभ) शीतल आधी या पूरी आंखें फटी, हाथ पैरके नख नीले और आगेका भाग कुञ्चित, अचैतन्या-वस्था में पड़े पड़े बड़बड़ाना इत्यादि इसके लक्षण है।

<u>आक्षेपिक हैजेकी</u> पहिली अवस्थामें हाथ पैरमें ऐंठन वक्षस्थलमें लेकर गलेतक पीड़ा, पेट बैठ जाना, और दर्द, हाथ पैर अवश तथा सब शरीर नीला हो जाता है ऐसी अवस्थामें <u>एसिड हाइड्रो</u> देना चाहिये।

<u>एकोनाइट नेपेलास</u> ३ १x।—हृत्पिण्डकी क्षीणता लेकिन हृत्स्पन्दनकी समता, बड़ी बेचैनी, मृत्युभय, सब बदन ठण्डा और मृतवत् आकृति इत्यादि लक्षणोंमें इसे प्रयोग करना

चाहिये। ऐकोनाइटसे नाड़ी तेज तथा जीवनी शक्ति उत्ते-जित होती है। डाक्टर नाल्जर कहते हैं कि एक बूंद मादरटिंचर ३ आउन्स पानी में मिलाकर ५से ३० मिनिटके अन्तर पर एक एक ड्राम खिलाना चाहिये।

कोब्रा ६।—बारम्बार श्वास रोध हो, पेट फूला हो, सब शरीर नीला हो, और रक्त पूर्ण शिरायें फूलना इत्यादि लक्षण में।

मात्रा।—अवस्थानुसार १०।१५।२० मिनिटका अन्तर पर एक एक मात्रा औषध देना चाहिये। कैम्फर, सेंग-इम, किउप्राम, आर्सेनिक, या सिकेलि लक्षणानुसार आवश्यक हो सक्ता है। लक्षणादि—चिकित्सामें देखो।

४ प्रतिक्रियावस्थाकी चिकित्सा।—स्वाभा-विक प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर किसी तरहके औषधकी जरू-रत नहीं है उस समय पथ्य इत्यादिकी अच्छा व्यवस्था करना ही उचित है। प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर यदि १-२ दस्तभी हो तो औषध प्रयोगकी कोई आवश्यकता नहीं है। यदि कटकर हो जाये तो लक्षणविशेष विचारकरके जो सब औषध रोगकी प्रबल अवस्थामें प्रयोग किये गये हों वही सब औषध कम मात्रामें देर करके देना चाहिये।

(५) परिणामावस्थाकी चिकित्सा—(क रोगकी पुनरा-क्रमण अवस्थामें।—बहुत जगह प्रतिक्रियावस्था आरम्भ होनेके

(च) उदरामय—प्रतिक्रिया आरम्भ होनेके बाद अथवा मूत्रस्रावके बाद यदि थोड़ा थोड़ा उदरामय हो तो डरनेकी बात नहीं है। पथ्यकी ओर दृष्टि रखनेसे यह सहजही में आराम हो सकता है। यदि वह आराम न हो कर बढ़ता हो जाये तो हैजेकी तेज अवस्थामें जौन जौनसे औषध प्रयोग किये गये थे अवस्था विशेषमें उन्हो सब औषधियोंका ऊंचा क्रम, फलकी मात्रामें प्रयोग करना चाहिये। इन सबके व्यवहारमें भी यदि शान्ति न हो तो लक्षणानुसार नीचे लिखे औषध देना चाहिये।

पेशाब होनेके बाद उदरामय और स्नायविक दुर्बलताके लक्षणमें एसिड फस ६ या ३०। यकृतमें दर्द तथा पित्तयुक्त पतला दस्त होनेमें पोडोफाइलम ६। पेट कुछ फूला हो और पेटमें गड़ गड़ कल कल शब्दके साथ पीले रंगका दुर्गन्ध-युक्त पतला दस्त थोड़ा हो तो चाइना ६, ३०। फेरम और चाइना एकके बाद दूसरा, पर्यायक्रमसे देनेसे उदरामय और दुर्बलता दूर होती है। चटचटा श्लेष्मामय कभी रक्त मिला हुआ मल, यकृतमें दर्द, कुछ सफेद और पीली आवें और मूत्रमें दुर्गन्ध इन लक्षणोंमें मार्क-सल ६। कुछ काले रंगका पतला दस्त होनेसे क्रूमटक्स या सिमिनाम ६। रक्त दस्त होनेसे कार्बोभिज ६। और लाल रंगका दस्त हो तो इपिकाक ६, या ३०।

मेज ६। मुंहमें और मसूड़ेमें घाव होनेसे एसिड नाइट्रिक ६, क्रियरसम्फर ६, या कार्ब्बोभेज ६, आंखमें घाव होनेमें कायना ६, सल्फर ३०, पल्सेटिला ६।

(अ) फुसफुस प्रदाह।—एकोनाइट ३ और फसफोरस ६ इसका प्रधान औषध। इस ग्रन्थका "फुसफुस" प्रदाह देखो।

प्लेग (महामारी)।

PLAGUE

मिसर देश इस महामारीका सूतिका गृह है, आजसे करीब २४०० वर्ष हुए होंगे कि उस देशमें यह रोग उत्पन्न हुआ था। ६ठीं सदीसे १८वीं सदी तक इसका पराक्रम प्रकाश हो रहा है। १८१५ सनमें सुना जाता है कि इसने भारत-वर्षमें आगमन किया। वर्तमान महामारी १८९६ की फी से आई गई [illegible] यह कुलक्षणा बिमारी है। एक प्रकारका विष किसी किसीका मत है कि [illegible] किसी किसीका मत है असमानका [illegible] हवा या भीम [illegible] अर्थात यह रोग पैदा होता है। रोगकी यह [illegible] [illegible] विष [illegible] कारके मृत्युमें

विशेष करके आक्रान्त होता है अर्थात् सूखी खांसी कलेजेमें दर्द, सांस लेनेमें कष्ट इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

४। इण्टेष्टाइनैल (Intestinal) प्रेग; इसमें अन्तड़ी विशेषरूपसे आक्रान्त होता है, अर्थात् पीठ, पेड़ू और कमरमें दर्द होती है। पेट फूल जाता है। दस्त के इत्यादि लक्षणोंकी अधिकता दिखाई देती है।

प्रतिषेधक—एक इग्नेसिया-बीन (Ignatia-Bean) बीचमें छेद करके सूत बांधकर दाहिने या बायें बांहमें अथवा कमरमें पहिरा देना चाहिये।

चिकित्सा

१। पूर्वावस्था—इग्नेसिया ३।

२। ज्वरावस्था-

(क) प्रारम्भमें (बकना झकना रहे तो) बेलाडोना ३।

(ख) पूर्ण विकाशमें, जिस समय रक्त दूषित होकर शरीरके सब यन्त्र आक्रान्त हो जाये (अर्थात् सेपटिसेमिक लक्षणमें) आर्स ३, ६।

(ग) गिल्टी निकल आनेमें (अर्थात् बिउबोनिक लक्षणमें) आर्डिसमा १x भितर और आर्डिसमा १x गिल्टीके उपर लगाना चाहिये। इस औषधको लगानेसे गिल्टी बैठजाती है और दर्द जल्दी आराम होताहै।

(घ) पुनःपुनः आक्रान्त होनेपर (अर्थात् न्यूमोनिक लक्षणमें)— फसफोरस ६, ३०।

(ङ) अन्तड़ी आक्रान्त होनेपर (अर्थात् इन्टे-टाईन्याल लक्षणमें आर्सेनिया ६, ३०।

(च) हिमाङ्ग (Collapse) होनेपर हाइड्रोसियानिक एसिड ६।

कोब्रा या न्याजा ६ विचूर्ण इस रोगकी प्रधान दवा है।—

निम्नलिखित लक्षणोंमें यह विशेषरूपसे उपकारी होता है:—सब अङ्गोंमें पीड़ा, वेदना, मांस हिलनेमें कष्ट, अवसन्नता (निशाखोरोंकी भांति) संज्ञाशून्यता, जीवनीशक्तिका घटना, रक्त निःसरन, लुप्तनाडी, सब शरीर नीला। निगलनेकी शक्ति नहीं रहने पर यह औषध हाइपोडार्मिक पिचकारी द्वारा रोगीके शरीरके चमड़ेके भीतर प्रवेश कराना चाहिये। उपर लिखे लक्षणोंमें डाक्टर महेन्द्रलाल सरकार निम्नलिखित औषध अवस्था विशेष विचार करके प्रयोग करनेकी सलाह देते हैं इग्नेसिया, एकोनाइट, बेलाडोना, कोब्रा, क्रोटेलास, लेकेसिस, इलेप्स, फसफोरस आर्सेनिक, मार्क्युरियस करोसी इसम, व्यापटिसिया, कार्बोलिक एसिड, एण्टमोनियम टार्टारिकम्, कार्बोनिसलिस, कार्बामोटरिलिस, पाइरोजेन, एम्यामिनम्, केलिफस, लर्यामन, क्रोम टका, एइलान्थास, म्यूरियाटिक एसिड फाइटोलाका, ओपियम्

सिरास, थोपियम, हाइड्रो-सायसस, आमोनियस, इपिकाक ऐसिड्सकुड, हैपार-सल्फ, सिलिसिआ, और ब्याडियागा (Vide Calcutta Journal of Medicine for Nov 1897 & Sircar's Plague 3rd Edition)

आनुषङ्गिक चिकित्सा।—रोगीको हवादार घरमें रखना चाहिये। दूध, साबु, बार्लि आरारुट, मांस या मसूरकी दालका जूस रोगके समय (आवश्यक होनेसे पिचकारी द्वारा) खिलाना चाहिये। पकजानेसे गिल्टीके उपर पुल्टिस देना चाहिये और फट जानेसे या (चीर जानेसे) केलेण्डूला का तेल फटे हुए जगहमें लगाना चाहिये।

ज्वर।

शरीरकी गरमीका बढ़जानाही साधारणतः "ज्वर" कहा जाता है। शरीरके किसी अंश वा यन्त्रका प्रदाह, या किसी तरहके कोई विष रक्तमें मिल जानेके कारण ज्वरकी उत्पत्ति होती है। ज्वर बहुत तरहका है। उसमें सामान्य ज्वर, एकज्वर, स्विराम ज्वर और सान्निपातिक विकार ज्वर हम देशमें प्रबल हैं।

लक्षण।—पहिले थोड़ा जाड़ा मालूम होना, पीछे कंपकंपी हो कर ज्वरका आरम्भ होना। कभी जाड़ा कभी गरमी मालूम होना, बदनमें दाह, चमड़ा सूखा और खखड़ा, बेचैनी, प्यास, जीभका सूखना और सफेद, नाड़ी तेज मांसका जोरसे चलना, पेशाब थोड़ा और लाल, कमरमें तथा पीठकी गेंदमें दर्द। कभी कब्जियत कभी स्वच दस्त होना, सिरमें दर्द, अरुचि इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा। एकोनाइट ३x।—नाड़ी सूक्ष्म, तेज, कठिन और उछलती हुई। बदन उष्ण और शुष्क। कभी जाड़ा कभी गरमीका मालूम होना, बारबार छिपकी और बेचैनी, सिरमें बड़ी दर्द, सांस तेज, रातमें रोगका बढ़ना और सामान्य प्रलाप। गलेकी नाड़ीका चलना, पसीना होनेसे एकोनाइट बन्द कर देना चाहिये।

बेलेडोना ६, ३०।— माथे और गलेकी नाड़ीमें जलन, थोड़ा जाड़ा, अत्यन्त दाह, पसीनाका न होना या थोड़ा होना, आंखें लाल, नींदका न आना, प्यास, मुंह और ओठ सूखे। एकोनाइटके सब लक्षणोंके साथ यदि अत्यन्त दाह और सिरका दर्द हो तो यह एकोनाइटके साथ पर्यायक्रमसे खिलाना चाहिये।

ब्रायोनिया एल्बा ६, १२, ३०। सिरका भारी मालूम होना, गलेकी शिरा, सिर, गरदन, हाथ, पर और पीठमें दर्द।

मैलेरिया जनित सविराम ज्वर।

INTERMITTENT FEVER

यह ज्वर बंगालेमें अधिक होता है। इस ज्वरमें धीरे धीरे पिलही यकृत आदिकी हृद्धि, पारीका बोखार, इड्डोका ज्वर दोनों शामका ज्वर, शोथ, उदरी इत्यादि बहुत तरहके कठिन रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसीमें सब ज्वरोंकी चिकित्सा एक साथ ही लिखी गई है।

ज्वर कुछ दिनों तक छूट कर फिर आ जाये तो उसे सविराम ज्वर कहते हैं। प्रतिदिन एक बार आकर यदि छूट जाये तो उसको ऐकाहिक या दैनिक ज्वर कहते हैं। जाड़ा बोखार (पारीका ज्वर) एकदिन अन्तर देकर यदि ज्वर आये तो उसे द्वाहिक। दो दिन अन्तर दे कर आये तो त्राहिक और तीन दिनोंका अन्तर हो तो चतुर्थाहिक ज्वर कहते हैं। दिन रातमें दो बार यदि ज्वर आये तो उसे दोकालीन ज्वर कहते हैं। यह दोकालीन ज्वर अत्यन्त कठिन होता है। इसको दवा बड़े ध्यानमें करनी पड़ती है। पित्त जनित ज्वर एक दिन अधिक और एक दिन कम आता है। कोई २ ज्वर नित्य एक ही समयमें आरम्भ होता है और किसी किसीमें किस समय आवेगा इसका स्थिरता नहीं रहती कोई २ ज्वर आज एक समय आवेगा तो कल दो पहरा दहिले आ

जायेगा। यह ज्वर भयङ्कर होता है। इसीका उल्टा यदि दो घण्टा बाद आवे तो अच्छा होता है।

प्रधानतः कुइनाइनके अपव्यवहारमें ही प्लीहा और यकृत् की वृद्धि होती है तथा शोथ और उदरी भी आरम्भ हो जाता है।

मलेरिया एक प्रकारकी विष मिली हुई हवा है। यह विष गले हुए उद्भिज की भाफ है।

इस ज्वरमें साधारणतः तीन अवस्था देखी जाती है—शीतावस्था, उष्णावस्था, घर्मावस्था (पसीना चलना)। शीतावस्थामें पहिले शीत, फिर कंपकंपी। कभी २ एक साथ ही शीत और कंपकंपी इतने जोरकी होती है कि ३।४ लिहाफ ओढ़ाने परभी जाड़ा कम नहीं होता। बदनमें दर्द, माथेमें दर्द, प्यास, कभी सूखी खांसी भी इसमें होती है। उष्णावस्थामें प्रायः सिरमें दर्द, मुंह लाल, बदनका चमड़ा सूखा, प्यास, सांस लेनेमें कष्ट; बदनकी गरमी १०१से १०७ डिग्री तक हो जाता है। बदनमें दाह होने ही से जाड़ा कम हो जाता है। कई एक घण्टेके बाद घर्मावस्था अर्थात् पसीना आना शुरू होता है और ज्वर छूट जाता है।

चिकित्सा।—लक्षणकी ओर विशेष दृष्टि रख कर चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि उपरोक्त सब प्रकारके ज्वरोंकी दवा एकत्र लिखी गई है। ज्वर जिस समय न रहे उस समय दवा खानी चाहिये।

युपेटोरियम-पार्फ ३। ज्वर आनेके पहिले ही जी मिचलाये और पीठमें जाड़ा मालूम हो कर ज्वर आरम्भ हो; जाड़ा लगनेके पहिलेसे लेकर उत्तापावस्था तक प्यास, पानी पीनेके साथही कै, पित्त वमन और उत्तापावस्थाके बाद सामान्य पसीना आना। हड्डी और जोड़ोंमें दर्द। दर्दसे रोगी छटपटाये परन्तु करवट बदलनेसे पीड़ाकी शान्ति न हो।

आर्सेनिक एल्बम ६, १२, ३०।—पुराने विषम ज्वरमें तथा उसके साथ ही साथ प्लीहा और यकृत आदिकी यदि वृद्धि हो तो आर्सेनिक से बढ़कर कोई दूसरी दवा नहीं है। विषम ज्वरमें जिस समय शीत, दाह या उत्तापावस्थाका विकाश न हुआ हो या कोई एक प्रबल हो या किसी एकका अभाव हो, पसीना न हो, दाह अवस्थाके बहुत देर बाद बहुत पसीना हो, प्लीहा और यकृतकी वृद्धि हो, ज्वरके समय अस्थिरता अधिक हो। दर्द अधिक हो अथवा रोगी बकता हो, और ज्वर छूटने पर भी इन सब उपसर्गोंके साथ दुर्ब्बलता और अवसन्नता हो तो यह दवा विशेष फलप्रद है। एक दिन, दो दिन, तीन दिनके जाड़ा बोखारमें प्रतिदिन दो तीन बार ज्वरमें, कुइनाइनके अपव्यवहार जनित विषम ज्वरमें, लड़केके ज्वरमें प्लीहा यकृत सयुक्त पुराने ज्वरमें शोथ हो तो, यह बड़ी गुणकारी दवा है। हाथ पैर ठण्डा हो

पीछे प्रधान लक्षण जब सब स्पष्ट प्रकाशित हो जायेंगे; तब उसी लक्षणके अनुसार दवा देनी चाहिये।

सुविख्यात डाक्तर जार कम्पज्वरके प्रारम्भमें केवल इपिकाक ३० सिर्फ एकबार प्रयोग करनेकी सलाह देते हैं। बहुत जगह इसी तरह व्यवस्था करनेसे बहुत अच्छा फल दिखाई दिया है।

इग्नेसिया ६, १२, ३०।—विषमज्वरमें, शीतकी अवस्थामें, प्यास, दाह अवस्थामें प्यासका अभाव, बाहरी गरमीसे शीतका उपशम; बाहर ठण्डा, भीतर गरम या भीतर ठण्डा और बाहर गरम, दाहकी अवस्थामें माथा भारी मालूम होना, मुखमण्डल सूखा इत्यादि लक्षणोंमें इग्नेसिया प्रयोग करनेसे अच्छा फल होता है। सविराम ज्वरमें सब अङ्गोंमें खुजली, बदनोंमें आमवातकी तरह घमौरी। चेहरेके एक भागमें बड़ी दाह; पसीना कम या केवल चेहरेही पर होना; तीसरे पहरको सब अङ्गोंमें बड़ा गरम मालूम होना लेकिन प्यासका न होना इत्यादि लक्षण है।

एपिटम् क्रूड ६।—विषमज्वरमें नाड़ीका वेग नियमित होना, बड़ी सर्दी, ऐसी तेज कि गरम मकानमें भी उसका कम न होना प्यास बिलकुल बन्द, रातमें पैरों के तलुवेका ठण्डा हो जाना, सुबहको जागनेके समय पसीना, जीभ सादी, कोष्ठबद्ध

दाह और बारबार ग्रासप्रश्वास लेना, फिर शीतावस्थामें बूंद बूंद पसीना होना। बडी प्यास पीठमें सर्दी, तलहत्थी बरफकी भांति ठण्डी।

चायना। ६, १२, ३०, २००। नाडी सुद्र द्रुत तथा अनियमित; आहारके अन्तमें नाडीका वेग कम तथा तन्द्रावेश, प्लीहा तथा यकृतकी हृद्धि और दर्द; जलकी भांति गोंदकी तरह चटचटा या पित्तमिला हुआ उदरामय; शीत और उष्णावस्थाके पहिले या पीछे प्यास; ज्वर आरम्भ होनेसे ही हृत्पिण्डका धक धक करना, सिरमें बडी दर्द; बाहरकी सब शिरायोंका फूलना; शीतावस्थामें सिरमें दर्द; सर्व्वाङ्गमें शीत, वमनोद्यम तथा प्यास बन्द, दाहकी अवस्थामें मुंह और ओंठ सूखे तथा उनमें जलनका मालूम होना, दाहावस्थाके बाद प्यास और खूब पसीना। कुइनाइनके अपव्यवहार जनित विषम ज्वरमें चायनासे कोइ फल नहीं होता(कदाचित चायना २०० कुछ लाभ करे)। चायनाके लक्षणवाला ज्वर रातको कभी नहीं आता।

जेलसिमियम १x, ६। नाड़ी चीण, कोमल और द्रुत; पीठमें शीत देकर ज्वर आरम्भ, पीठमें या सब अङ्गोंमें दर्द, रोज दो पहरको ज्वरका आरम्भ होना; हाथ पैर बरफकी भांति ठण्डा, मस्तक गरम तथा चेहरा लाल होना इस अवस्थामें

बड़ी गरमी, विशेष करके सुबह और शामको; हाथ तथा पैरों में जलन; कभी कभी जाड़ेके थोड़ीही देर बाद गरमी; या दोनो साथ ही मालूम होना; एक पार्श्वमें विशेष करके केवल चेहरे पर पसीना।

फिराम-मेट ६, ३०। कुइनाइनके अपव्यवहार जनित विषम ज्वरमें, विशेष करके प्लीहाकी हृद्धि और साथ ही साथ शोथ तथा उदरामय; पूर्ण और कठिन नाड़ी क्षण क्षणमें जाड़ा और कंपकंपी, शरीरकी गरमी मालूममें भी कम; रक्तशून्य या पीले रङ्गका शरीर; खाया हुआ पदार्थ वमन। बहुत देर तक स्थायी पसीना।

एपिस-मेल ३, ६, ३०। नाड़ी पूर्ण और द्रुत; पीठ, कमर और यकृत स्थानमें पीड़ा, मुंहका स्वाद तीता। जीभ पीली; माथा भारी और उसमें दर्द; कभी जाड़ा कभी गरमी मालूम होना; पित्त आदि वमन या वमन करनेकी इच्छा, खांसनेमें बड़ा कष्ट; शामके वक्त दाहिने अङ्गमें शीत, खुले जगह की अपेक्षा कोठरीमें अधिक जाड़ा मालूम होना; प्यास; मस्तक गरम; कभी अधिक पसीना।

भिराट्रम भिरिड १x-३। नाडी पूर्ण, द्रुत, कठिन और उछलती हुई, बदनकी गरमी तेज; हृत्स्पन्दन प्रबल; वमनोद्रेगके साथ जाड़ा; प्रबल आक्षेप; माथेमें रक्त सञ्चय।

<u>लाइको पोडियम १२, ३०</u>।—तीसरे पहरको ४ बजे ज्वर आकर रातको ८ बजे छूटे, कंपकंपी जाड़ा अधिक; सब अङ्गोंमें सर्दी मालूम होना; कोष्ठबद्ध, पेटका फूलना, यकृतके स्थानमें दर्द, दाह।

<u>सिड्रन १x, ३x या ३</u>।—मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय; पसीना थोड़ा या पसीना बिलकुल बन्द, जाड़ा और कम्पकम्पी देकर ज्वर और नित्य एकही समयपर ज्वरका होना और ठीक एकही समय तक रहना।

पथ्य।—नये ज्वरमें ज्वरकी प्रबलताके समय रोगीको टण्डाजल छोड़कर और कोई चीज़ पथ्य न देनी चाहिये; ज्वर छूट जानेपर साबू, आरारोट, बार्ली, बिदाना, सिंघाड़ा, मिश्री इत्यादि लघुपथ्य देना चाहिये। पुराने या पारीके बोखारमें—ज्वरके दिन लघुपथ्य और नागेके दिन पुराने महीन चावलका भात, मछलीका शोरवा और थोड़ा दूध देना चाहिये।

सान्निपातिक विकार ज्वर।

(Remittent fever with Typhoid Symptoms)

यह ज्वर अधिक करके शरीरके भीतरी भाग पर आक्रमण करता है, इसलिये इसे आन्त्रिक ज्वर भी कहते हैं। इसका दूसरा नाम वातश्लेष्मा विकार है। पुराना सड़ा हुआ गुड़, नाली (Drain) और गले हुए मुर्दोंसे एक प्रकारका

विष निकलता है जो इस रोगके उत्पन्न करनेका प्रधान कारण है। यही विष शरीरमें प्रवेश करनेपर भी ५।१० दिनोंतक इसका कोई उपक्रम दिखाई नहीं देता फिर रोगका विकाश होता है, उस समय रोगी शय्यागत होता है और नीचे लिखे उपक्रम होने लगते हैं—पेटका फूलना, पेट दबानेसे दर्द, यकृतके नीचे अङ्गोंमे दबाने पर एक प्रकार शब्द होना, उदरामय, और कभी कभी अंतड़ीमे रक्तका निकलना। पित्तहीका बढना, चावलका धोवन, या दालके पानीके तरह मल, मास लेनेमें एमोनियाकी गन्ध, मस्तकके आगे दर्द, माथाका भारी मालूम होना, कानमें भों भों शब्द होना, नींद न आना, कभी कभी नाकमें रक्तका गिरना, अस्थिरता, बकना झकना, नींदमें चमक उठना या चुपचाप आंखे आधी खुली हुई रहना, इस ज्वरके आरम्भमे अन्त तक, पेट, पीठ, छाती, हाथ, पैर, और मुंहपर लाल लाल दाने दिखाई देते हैं, पेशाब लाल और थोड़ा होता है। रोगके पहिले ५।६ दिन शामके पहिले शरीरकी गरमी १००से १०२ डिग्रीतक बढ़ जाती है पर सुबह को ज्वर कम हो जाता है। ७।८ दिनके बाद शरीरका उत्ताप १०३ से १०५ डिग्री तक होता है। २।३ हफ्तेतक ऐसाही रहकर यदि शरीरकी गरमी कम हो जाये तो अच्छा लक्षण समझना चाहिये, और बढ़ जानेसे बुरा। इस ज्वरमें अंतड़िया छिद्र हो जाती है और अन्त्रावरणकी झिल्ली प्रदाहविशिष्ट

होकर मूत्रविकार, कुम्भुकम्पदाह इत्यादि हो जानेसे रोगी मर जाता है। जीभ पहिले सफेद, फिर मैली और लाल रंगकी हो जाती है। इस रोगका भोगकाल साधारणत २१ से ४८ दिन तकका होता है।

चिकित्सा।—आर्सेनिक ६, १२, ३०।—द्रुत कठिन नाड़ी, अत्यन्त अवसन्नता, शरीरका चमड़ा रूखड़ा, ज्वालाकर दाह, पसीना ठण्डा बड़ी प्यास लेकिन थोड़ेही पानीसे तृप्ति, मदाहयुक्त लालवर्ण जीभ, बदनमें घमौरी और साथही अतिसार।

आर्निका मण्टेना १x, ६।—सांस लेनेमें दुर्गन्ध, शरीरमें लाल, काली तथा पीली घमौरियां, मनका भाव कहने तथा समझानेमें असमर्थ, प्रलाप या अचेतन अवस्था, बिछौना कड़ा मालूम होना और बार बार करवट बदलना।

ऐसिड फस, ६, ३०।—कम्पकम्पी और जाड़ा, प्यासका अभाव, हाथ पैरकी अंगुलियां बरफकी भांति शीतल, दाहकी अवस्थामें बड़ी गरमी लेकिन प्यासका न होना, भीतर गरमी और बाहर जाड़ा, रातको और सुबहको अधिक पसीना आना, दूसरे औषधोंसे विकारका उपशम होनेपर भी बल ढ़नेके लिये इसे देना।

ऐसिड म्यूर ६।—स्नायविक क्रियाकी विलक्षणताके कारण ा अवसन्न, गलेमें घाव, हाथ पाव ठण्डे, जाड़ाका सहन ोना, नाड़ी क्षीण और द्रुत, ओंठो पर सफेद रंगके दाने,

मुंहमें घाव, उदरामय, गुह्यावरक पेशीमें पक्षाघात और शरीर पर दाने होना।

कार्ब्बभेज ३ विचूर्ण या ६, १२, ३०।—हाथ पैर ठण्डा तथा पसीना ठण्डा, समस्त शरीर शीतल, जिस समय रोगीके जीवनी शक्तिका ह्रास हो, दृष्टि शक्तिमें भी व्यतिक्रम हो और कान बहिरे हो जायें।

बैपटेशिया १x, ३।—नरम, मोटी और भी द्रुत नाड़ी, प्रलाप, सिरमें दर्द, बदनमें दर्द ओंठ और जीभ सूखी, अस्थिरता, अचेतन्यता, शय्याका गड़ना, गलेमें घाव सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, वमन या वमनोद्यम इत्यादि लक्षणमें (रोगकी पहिली अवस्थामें)।

ब्रायोनिया एल्बा ६, १२, ३०।—मुंहका स्वाद तीता, जीभ रुखड़ी तथा मैली, शिरमें असह्य वेदना, खांसी और पञ्जरमें दर्द इत्यादि लक्षणमें; विकार यदि धीरे धीरे मालूम हो तो ब्रायोनिया और यदि तेजीसे विकार बढ़ता दिखाई दे तो ह्रास-टक्स देना चाहिये।

बेलाडोना ६, ३०।—शिरमें दर्द, मुखमण्डल लाल, गलेके शिराका स्पन्दन, चक्षुतारा विस्तृत, प्रलाप, चौंककर उठ बैठना, दांत से काटने को आना।

ह्रासटक्स ६, ३०।—पेट फूलना, पेट दबानेसे दर्द अज्ञानता, अवसन्नता, बीच बीचमें जलवत् आममय अतिसार,

विचारका भूल जाना, मनकी चञ्चलता, दिनमें तन्द्रा, गरमी तथा जाड़ा देकर ज्वरका आना, एक पार्श्वमें पसीना।

भिराट्रम एल्बम् ६, १२, ३० ।—इच्छा न होने पर भी पाखानेके होनेकी भांति दस्त, वमन तथा वमनोद्वेग, उदर दर्द, पसीना ठण्डा, तुरंत निस्तेज हो जाना।

मार्क्यूरियस सल ६, सिरूप ३ ।—मसूड़ोंकी पंक्तिमें घाव होकर रह रहना, सायंहीं ज्वरकी वृद्धि, जीभमें चमक, मुंहका स्वाद तीता या फीका, गलेमें या दांतोंके चहुंवेमें घाव।

हाइओसाइमस ३, ६ —द्रुत, पूर्ण और कठिन नाड़ी, मुखमण्डल उत्तप्त, बिछौनेका छिलना, धीरे धीरे प्रलाप, बिछावनका कपड़ा इत्यादि खींचना और एकाएक बिछावन परसे भाग जानेकी चेष्टा, आपहीं मलमूत्रका निकल जाना।

टेरिबिन्थिना ६ ।—अंतड़ीसे रक्त बहना, मूत्रका रुकना; आमाशयमें ज्वाला, आम और उन्नत मल, नाकसे रक्त निकलना, रोगके उपशमके समय पर यदि अंतड़ीमें घाव हो और उसीके कारण यदि बार बार दस्त हो तो टेरिबिन्थिना प्रयोग करनेसे विशेष लाभ होता है।

रोगका उपशम होनेपर दुर्बलताको नाश करनेके लिये ऐसिड फस ; चाइना, ऐमोनकार्ब, नक्सभमिका।

पथ्य ।—रोगके समय ठण्डा पानी, अनरसा मण्ड, साबू, बार्ली, आरारोट, रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जावे तो मागुर

मछलीका शोरवा या थोड़ा दुध। रोगी कभी अकेला न रखा जाय।

हामज्वर—(Measles).

यह छूतकर (स्पर्शाक्रामक) होता है। लड़कोंको ही यह रोग हो जाता है और युवकों को कभी कभी होनेसे बड़ा कठिन हो जाता है। शीत अथवा बसन्तकालमें इस रोगकी उत्पत्ति होती है। इसका विष शरीरमें प्रवेश हो जानेके १०।१२ दिन बाद सर्दी, खांसी और छींक इत्यादि होती है। नाकसे पानी बहता है आंखें लाल तथा पानीसे भरी रहती हैं, कपालमें दर्द तथा सर्वाङ्ग कुछ भारी हो जाता है। सिरमें तथा पीठ, हाथ और पैरमें पीड़ा होकर ज्वर आरम्भ होता है फिर ४।५ दिन बाद हाम होता है। ३।४ दिन हाम रहने पर आपही गायब हो जाता है और ज्वरभी छूट जाता है एकाएक यह ज्वर आकर शरीरकी गरमी १०५ से १०६ डिग्री तक बढ़ जाती है और रोग भयङ्कर आकार धारण करता है। इस समय रोगी बकना शुरू करता है और तन्द्रा भी आ दबाती है। अर्थात्, वमन, वमनोद्वेग, ब्रोङ्काइटिस या कष्टश्वास, आंखकी नलीमें जलन, फुसफुस प्रदाह, कम्पवात इत्यादि लक्षण दिखाई देने लगते हैं। किसी किसी रोगीको अतिसार या रक्तातिसार

तथा लोप न होकर बैठ जाय या कुछ रह जाय तो ब्रायोनिया ६।

आनुषङ्गिक उपाय।—थोड़े गरम पानीमें कपड़ा भिंगाकर बदन पोंछ डालना चाहिये। रोगीके शरीरमें ठण्ढी हवा न लगनी चाहिये। ज्वरके समय ठण्डा पानी, बार्ली, मिश्री और आरारोट इत्यादि पथ्य देना चाहिये।

वसन्त या मसूरिका (चेचक) (Small pox).

वसन्त (चेचक) बड़ाही कठिन तथा कुतहर रोग होता है। वसन्तबीज (विष) शरीरमें प्रवेश होनेसे इसकी उत्पत्ति होती है। यह प्रधानतः दो तरहका होता है संयुक्त और असयुक्त।

संयुक्त वसन्त।—२।३।४ या इससेभी अधिक दाने बदनमें एक साथ रहनेसे उसको संयुक्त वसन्त कहते है। इसी तरह गोटियाँ दाने पककर उसमें पीप होजाता है, चेहरा, गला, माथा, नाकके भीतर होनेसे सांघातिक होता है। यह विष शरीरमें प्रवेश करनेके ११।१२ दिन बाद ज्वर आता है। इस ज्वरमें शीत, दाह, सब शरीरमें दर्द, वमन इत्यादि उपसर्ग दिखाई देते हैं। ज्वरके दो तीन दिन बादही दाने बाहर निकल आते हैं। ५।६ दिनके बाद इसमें

पानी भरकर पीप हो जाता है और ८।१० दिनके बाद दाने सूखने लगते हैं। इस रोगमें ज्वर अधिक होनेसे बहुतसे रोगी मर जाते हैं।

असंयुक्त वसन्त।—दाने अलग अलग दिखाई दें तो उसे असंयुक्त वसन्त कहते हैं। इसमें ऊपर कहे लक्षण दिखाई देते हैं पर ज्वर उतना प्रबल नहीं होता इससे यह भयंकर नहीं है।

चिकित्सा।—वसन्त रोगकी प्रथम अवस्थामें दानोंसे यदि रक्त बहे और रोगी अवसन्न हो जाये तो बैपटेशिया ३x देना चाहिये। पीठ या कमरमें दर्द, द्रुत नाड़ी, प्रबल ज्वर और जलवत् दस्तमें भेराट्रम भिर ३x पीप भरे दाने, सांस नालीमें दर्द, वमनेच्छा या वमन, ज्वर इत्यादि लक्षणोंमें ऐण्टिमटार्ट ६ या १म क्रमका विचूर्ण। इस रोगकी सभी अवस्थामें यह दूसरे औषधके साथ पर्यायक्रमसे दिया जासकता है। दूसरी अवस्थामें ज्वर, दानोंमें पीप, गलेमें घाव, रक्त मिश्रित आममय अतिसार, इत्यादि लक्षणोंमें मार्कमल ६। दाने पूर्णतया यदि बाहर न हों या एकाएक बैठ जाय तो रुबिनीका स्पिरिट कैम्फर या जेलसिमियम १x प्रयोग करना चाहिये। गौ-वीजसे छपवानेके बाद यदि दाने बाहर हों और उसीसे और और उपसर्ग प्रकाश हो तो थूजा मूल अरिष्ट। दाने पकनेके समय यदि सान्निपातिक लक्षण प्रकाश हो तो

फ्रामटक्स १० प्रयोग करना चाहिये। दाने बाहर होनेके बाद चेहरा और दानेके चारो तरफका स्थान सब फूल जाये और रातिमें उसमें खुजलीकी वृद्धि हो तो एपिस-मेल १४। दानेमें पीप होनेके बाद ज्वरातिसारका लक्षण यदि दिखाई दे तो आर्सेनिक ६ या १० देना चाहिये।

आनुषङ्गिक उपाय।—जिस घरमें हवा आती हो उसी घरमें रोगीको रखना चाहिये। बार बार रोगीका बिछावन बदल देना चाहिये और सदा रोगीको कोमल शय्यापर सुलाना चाहिये। दानों में पीप होकर सूख जानेके बाद गरम पानीमें साफ कपड़ा भिगाकर पोछ देना चाहिये। रोगके भोग समयमें साबू बार्ली आरारोट इत्यादि तथा आराम होने पर हल्की पुष्टिकर चीज खिलानी चाहिये।

पानीवसन्त या जलवसन्त।

(Checken pox.)

जलवसन्त वसन्त रोगके तरह भयङ्कर रोग नहीं है। लड़के और छोटे बच्चोंको यह रोग अधिक होता है। जलवसन्तमें ज्वरभी बहुत थोड़ा दिखाई देता है। दाने चिपटे न होकर खड़े और मुंहपर उमड़े होते हैं इसमें पीप भी नहीं होता। ३।४ दिनोंमें दानोंमें जल भरकर आंसे सरीखा हो जाते हैं और ६।७ दिनोंमेंही सूख जाते हैं। इसमें प्राय

प्यासोंमें कमी, तथा जल भरे हुए फोले, उसके चारोंको जगह फुन्सी; सब शरीरमें दर्द, फोलोंमें रस निकलना और दाह।

एपिस मेल ३, ६।—रसपूर्ण, लाल और दाहयुक्त फोले, यह अतिशय फूल जाते हैं और खजुआते हैं, छुरी भोंकनेकी भांई दर्द, दाहवाली जगह लाल और रसपूर्ण न होनेपर भी त्वचामें सूज आती हो।

आर्सेनिक ६, ३०।—जलते हुए तथा दर्द करते हुए काले रंगके फोले, अथवा पीप भरे फोले सुस्ती, बेचैनी तथा अधिक प्यासमें।

ग्रैफाइट ३।—विसर्पकी पीड़िका आकर फोलेके पहिले ज्वर आकर आक्रान्त स्थान प्रदाह युक्त हो तो।

यदि आक्रान्त स्थानमें ज्वालाकर दाह और फोलोंमें रस गिरने लगे तो कैंथेरिस ६ फोलोंमें पीप हो जानेका डर हो तो आर्सेनिक ६ तथा कार्बोवेज ६। सड़ना शुरू दिखाई दे तो लैकेसिस ६। एक जगहके फोले अच्छे होकर दूसरी जगह उठने लगे तो पल्सेटिला ६।

पथ्य।—रोगकी प्रथम अवस्थामें भात या बार्लि, ऐरारोट और अच्छे होने पर दूध और मागुर मछलीका शोरवा।

उपभिल्लीप्रदाह। (Diphtheria)

यह एक प्रकारका गलेका रोग है। एक प्रकारका विष रक्तमें मिल जानेके कारण यह रोग उत्पन्न होता है। सामान्य डिप्थिरियामें गलेमें दर्द, खानेमें कष्ट, गलेमें ज्वाला इत्यादि इसके लक्षण हैं। रोग सांघातिक होनेसे पहिले प्रबल ज्वर, दस्त-कै, कम्पकम्पी, दुर्ब्बलता, अस्थिरता, फिर झिल्ली आक्रान्त होकर लाल रंगकी होजाती है। टनसिलग्रन्थि और जीभ फूलकर उसके ऊपर पतला पर्दा पड़ जाता है। वह झिल्ली न निकालनेसे सांस बन्द होकर मृत्यु होजाती है।

चिकित्सा।—आक्रान्तस्थल प्रदाहयुक्त सुख और आँखें लाल रंगकी, शिरमें दर्द, गलेमें दर्द, पूर्ण और कठिन नाड़ी, कोमल तालू, गलेकी घण्टी और स्वर नालीमें प्रदाह इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो एकोनाइट ३x या बेलाडोना ३x पर्यायक्रमसे देना चाहिये। आक्रान्त स्थानमें दर्द दप् दप्, कृत्रिम पर्दा उत्पन्न, तालुमूल और गलकोषमें लाली, जीभ पीली, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध, कोई चीज निगलनेमें दर्द, लार बहुत गिरना, गला दबानेसे दर्द, इत्यादि लक्षणोंमें मार्क्यूरियस सायनेटाम ६। गलेमें धूसर रंगका घाव, अवसन्नता, सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध रहेतो एसिड म्यूरियेटिक ३। रोगकी शेष अवस्थामें नाड़ी क्षीण; क्षत स्थानमें पीप या रक्त निकले तो आर्सेनिक ६।

बहुव्यापक सर्दी।

(Influenza)

वायु दूषित होनेके कारण यह रोग होता है। सर्दीके लक्षणोंकी भांति इसके भी लक्षण दिखाई देते हैं, शरीरका चमड़ा गरम और सूखा रहता है, मस्तकके सम्मुख भागमें तेज दर्द, नाकसे पानीके तरह कफ गिरना, आखोंसे पानी बहना, बदनमें एंठन, वमनोद्रेग, छींक और अत्यन्त दुर्ब्बलता।

चिकित्सा।—इनफ्लुएिन्जिनम ३० एकही बार देनेसे यह रोग दूर हो जाता है। परन्तु एकमात्रासे अधिक कभी न देना चाहिये। इससे यदि ४८ घण्टोंमें कोई लाभ न दिखाई दे तो तुरन्त दूसरी दवा देनी चाहिये। सांस लेनेमें कष्ट, मानों सोनेसे ऐसा मालूम हो कि सांस बन्द होता है। नाकसे बहुत पतला, गरम तथा ज्वालाकर रसका प्रवाह, छींक स्वरभंग आंखोंसे जल गिरना, अवसन्नता, वक्षस्थलमें शीतलता, अनुभव इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६। उल्लिखित लक्षणोंके साथ यदि हड्डियोंमें तेज दर्द हो तो युपेटोरियम पार्फोलिऐटम ३x। सांस लेनेमें साथ सांय शब्द होना, कष्टकर खांसी, श्लेष्माका अधिक गिरना, घड़ घड़ शब्द, कमर पीठ और शिरमें दर्द हो तो एण्टिमटार्ट ६। स्वरनाली और वक्षस्थलमें दाह कष्टकर खांसी, कभी सादे कभी पीले रंगके कठिन श्लेष्माके साथ खांसी, रोगकी पुरानी अवस्थामें फुसफुस

प्रदाह, दुर्बलता, खून का निकाल देनेसे चपलता। फेनयुक्त रक्तवमन या थोड़ी तरह खून का गिरे तो फसफोरस ६। बार बार खांसी होनेसे हाइड्रोसियानिक एसिड ३।

प्रतिषेधक।—बेप्टीसिया ३x या इन्फ्लुएञ्जिनम ३० सिर्फ एक खुराक देना चाहिये।

धातुरोग।

वात, यक्ष्माकास इत्यादि कितनेही रोग पिता माताको रहनेसे लड़कोंको भी होते हैं इससे इन्हें धातुरोग कहते हैं।

वातव्याधि।

Acute Rheumatism.

लक्षण। शरीरके सन्धियोंमें यह रोग होता है। कभी कभी २।१ सन्धि और कभी सभी सन्धियां इस रोगसे भर जाती हैं। रोगके प्रारम्भमें ज्वर आकर सन्धिस्थल सूजकर लाल लाल और प्रदाहयुक्त हो जाते हैं और वहां दर्द हिलने डोलनेसे बढ़ जाता है, बदन गरम, पसीनेसे दुर्गन्ध, कम्पकम्पी, कब्जियत, सिरमें दर्द, प्रलाप, प्यास, तथा हृत्पिण्डकी क्रियाकी विलक्षणता नाड़ीपूर्ण और कठिन, जीभ मैली मूत्र कभी लाल कभी उज्वल। इस रोगमें शरीरकी गर्मी १०४।५ डिग्री तक बढ़ जाती है तरुण वात रोग, २।३ सप्ताह

रहकर अच्छा हो जाता है, या फिर यही अपना पुराना रंग धारण करता है, इस रोगसे ह्रत्पिण्ड आक्रान्त होकर बायें तरफ दर्द हो जाती है, वक्षस्थलमें भी दर्द रहता है। सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट हो तो समझना चाहिये कि रोग कठिन हो गया है।

कारण।—जाड़ा या सर्दी लगनेसे। देर तक गीला वस्त्र पहिरे रहनेसे या पानीमें भींगनेसे तथा सर्दी लगकर एकाएक पसीना रुक जानेसे।

चिकित्सा।—ऐकोनाइट रैडिक्स १।—सन्धिस्थल तथा पेशीमें दर्द, प्रत्यन्त ज्वर, आक्रान्त स्थानका सूजन और लाल हो जाना क्षुधामन्द, मूत्र लाल, तरुण वात रोगके प्रारम्भमें यह अच्छी दवा है।

आयोनिया आल्बा ६, १२ या ३०।—काटने या सुई बेधनेकी भांति दर्द, या दबाकर धरनेकी तरह पीड़ा, सामान्य हिलने डोलनेमेंही वृद्धि, बदन गरम, कोष्ठबद्ध, पसीना अधिक और अतिशय कम्पकम्पी।

बेलाडोना ३ या ६।—आक्रान्त स्थान खूब लाल, दप दप बेदना सिरमें बड़ी दर्द, आंखें तथा चेहरा लाल, रातको रोगकी वृद्धि।

कल्चिकम् १, ३ या ६।—(वनिष्ठ मनुष्योंकी तरुण वात में) आक्रान्त स्थान सामान्य सूजा हुआ अथवा बिल्कुलही सूजा

हुआ न हो। आक्रान्त स्थानको अंगुलीसे दबानेसे सफेद रंग हो जावे। सुई बेधनेकी भांति दर्द, आक्रान्त स्थानमें पक्षाघात, रातको वृद्धि।

पल्सेटिला ३, ६, या ३०।—सन्धिस्थल सूजा हुआ और थोड़ा लाल, दर्द एक जगहसे दूसरी जगह हट जावे, काटनेके तरह दर्द, जंघा, गुल्फ तथा हाथ पैरकी छोटी २ सन्धियोंकी दबा कर धरनेकी भांति दर्द, और उसीके साथ शीत, अस्थिरता तथा नींद भी न आती हो।

रासटक्स ६।—विश्रामके समय, रातमें, सुबह उठनेके समय और शय्याकी गरमीसे दर्दका बढ़ना, सामान्य हिलने डोलने तथा आक्रान्त स्थानमें गरमी प्रयोग करनेसे दर्दकी शान्ति, बड़ी बेचैनी, ठण्डीहवा असह्य, विश्राम अवस्थामें दर्दकी अधिकता।

सिमिसिफिउगा ३।—वक्षस्थल और कटिदेश आक्रान्त हो, पीठ और बगलमें सूई गड़ानेके तरह दर्द, उत्ताप और स्फीतताके साथ पैरमें दर्द, बदन कांपना, चल फिर न सकना, सब शरीरमें अस्त्रविद्धवत् दर्द।

कलोफाइलम् ३।—क्षुद्र क्षुद्र सन्धिवात, विशेष करके हाथ पैरकी सन्धियोंमें और अंगुलियोंमें तेज दर्द, सिरमें दर्द, दर्द एक जगह देरतक न ठहरे।

पथ्यादि।—रोगकी पहिली अवस्थामें सागू, आरारोट, बार्लि और थोड़ा दूध भी दिया जासकता है। जाड़ा या सर्दी

लगने देना उचित नहीं है। आक्रान्त स्थान गरम कपड़ा या रुईमें बाध देना उचित है। रोग उपशम होनेपर रोटी या भात खानेको देना, गरम पानीमें नहाना।

पुराना बात।

(Chronic Rheumatism.)

इसमें तरुण सन्धि वातके सभी लक्षण वर्त्तमान रहते हैं। केवल सन्धिस्थान कठिन होता है। दर्द भी कम हो रहती है परन्तु आक्रान्त स्थान जलमग्नय होकर फूल उठता है।

चिकित्सा।— कैलिहाइड्रो ६, ३०। अत्यन्त तीव्र दर्दके कारण बार बार अवस्थाका बदलना, आक्रान्त स्थान का फूल जाना तथा कडा होजाना, रोगीको चलनेकी शक्ति नहीं रहती है तरुण वातरोगके बाद सन्धिकी दुर्बलता, गरमी रोगमें दुष्ट ग्रन्थिवात।

रडोडेण्ड्रन ३०। हाथ पैर तथा जांघोंमें तथा हाथकी मध्यमें दर्द, स्थिर रहने पर घोर दृष्टिके बाद दर्दका बढना, आहारके समय तथा आहारके बाद दर्दका दब जाना, रातमें खास करके पिछली रातमें दर्दकी वृद्धि, वृष्टिके पहिले और ग्रीष्मकालमें पीडाका आक्रमण। सन्धिस्थलमें सुचक जानेकी भांति दर्द।

डाल्कैमारा ६।—वृष्टिके बाद पानीमें भीजने या भींगी

उगहमें बैठनेके कारण रोग उत्पन्न हुआ हो तो, विश्रामके समय पीड़ाकी वृद्धि, घूमनेसे उपशम, रह रह कर छिन्नवत् दर्द, पीठ, बांह और पैरोंकी सन्धियोंमें अधिक दर्द, पसीना, दुर्गन्धियुक्त मूत्र ।—

फाइटोलाक्का ३ ।—आक्रान्त स्थान भार और वेदनायुक्त तथा शीतल भी, ग्रीष्म और वर्षा ऋतुमें पीड़ाकी वृद्धि, आक्रान्त स्थान सूजा हुआ और लाल ।

कटिकम ६, ३० ।—कन्धेमें, उरु और घुटनेमें दर्द, दर्दके कारण बदन हिलानेकी इच्छा, परन्तु हिलने पर पीड़ाका कम न होना, कन्धेमें दर्द होनेके कारण माथेकी तरफ हाथका न उठना शामके वक्त दर्दका बढ़ना तथा सुबहको घटना, रातको सुखपूर्वक न सो सकना, अंगुलीकी सन्धियोंमें दबाकर पकड़नेकी भांति दर्द ।

मार्क्यूरियस सल ६, ३० ।—खींचनेकी भांति हड्डियोंमें दर्द और उसीके साथ सामान्य ज्वर, शीत बोध, आक्रान्त स्थान में अम्ल गन्धकी नांई दुर्गन्धियुक्त बहुत पसीना, पसीना होनेपर भी दर्दकी शान्ति न होना, रातको बिछावनकी गरमसे दर्दका बढ़ना, समय समय पेट ऐंठकर आमसय मलत्याग ; गरमीके कारण उत्पन्न भये वातमें (यदि पारा न खिलाया हो)।

संक्षिप्त चिकित्सा ।—घुटना और पैरके अंगुलीकी गांठमें दर्द हो तो पाल्स ३०, विश्रामावस्थामें रोगकी वृद्धि

हो तो रसटक्स ३०, जिसमें डीलनेस बढ़े तो, ब्रायोनिया ३०, छोटी छोटी सन्धियां आक्रान्त हो और उसीके साथ सर्दी वर्त्तमान हो तो लिडम ६, रोगका भोग शेष हो और सम्पूर्ण-रूपसे आरोग्य करनेके लिये सल्फर ३०। कानोंके वातमें। काइयो आर्निका, रोडोडे, रूस, सिमिसि।

हृत्पिण्डके वातमें। स्पाइजि, डिजिटे, एको, मेराइम, केलमिया, आर्गो।

प्रमेहजनित वातमें। साके विन पाई, एको, पल्स, मामी।

कमरके वातमें। एको, आर्निका, सिमिसि, सिकेल, एण्टिमटार्ट, आर्सेनिक और रसटक्स।

उरुसन्धिके वातमें। कलोसिन्थ, एको, रस, आर्स, सिमिसि, नक्स, कास्टो। यह सब दवा १x-३० क्रम प्रयोग होता है।

गठिया वातमें। एको, कलचि, कैलकार्ब, सैबिना, (तरुण अवस्थामें) एमनकार्ब, कैलकेरिया, कास्टिकम, आइको, सल्फर (पुरानी अवस्थामें)। यह सब दवा ३-३० क्रम प्रयोग होता है।

पथ्यापथ्य। अधिक घी और तेलका पदार्थ, मैदा, मछली मांस तथा मदिरापान निषिद्ध। पुराने चावलका भात, थोड़ा दूध, दाल, परवल, रोटी, बाजरा, साबूदाना इत्यादि पथ्य देना चाहिये।

उपदंश (गरमी) (Syphillis.)

उपदंश बड़ा बुरा रोग है। इस रोगके रोगोंसे संगम तथा सहवाससे यह बिमार उत्पन्न होजाती है। उपदंशका विष शरीरमें घुसनेके १० दिन बादही यह रोग उत्पन्न होजाता है। पहिले मसुरीकी भांति लाल चकत्ते उत्पन्न होते हैं फिर तीन चारही दिनके बाद फोलोंकी भांति उसका आकार हो जाता है। पहिले इन फोलोंमें पानी रहता है पर फिर पीप उत्पन्न होकर गलना शुरू होजाता है। घावके चारो तरफका भाग ऊंचा रहता है और मध्यका भाग धीरे धीरे गहरा होता चला जाता है। इस उपदंशको कठिन उपदंश कहते हैं। एक प्रकारका और भी कोमल उपदंश होता है जिसका प्रान्त भाग ऊंचा या कठिन नहीं होता है। कभी कभी यह घाव उत्पन्न होने या सूखनेके १५ या ३० दिन बाद बाघी उत्पन्न होजाती है। कठिन उपदंशके बाद बाघी होकर प्रायः बैठ जाती है; परन्तु कोमल उपदंशके बाद बाघी हमेशा बनी रहती है। उपदंश होने के कुछ दिन बाद सब शरीरमें खुजली तथा ताम्बेके रंगके जलन, चकत्ते फूट निकलते हैं। गलेमें फोड़ा, हाथ पैर तथा आंखोंमें ज्वाला, हाड़ हाड़ या सन्धि सन्धिमें दर्द, सिरके केशका उड़ना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा।—आर्कमल ३x विचुर्ण ६।—उपदंशकी द्वितीय अवस्थामें जब फोड़ोंमें पीप उत्पन्न होजाता है। फोड़ा धीरे धीरे फैलता जाता है, सन्धि तथा हड्डियोंमें

दर्द, मुंह, गला और मांस लेनेकी नालीमें दाह; फोड़ेके प्रान्तभाग कठिन, मध्यभाग कोमल और उजला। उपदंशके साथ प्रमेह इत्यादि हो, बाघी और दूसरे चर्म्मरोग तथा फोड़ेमें पतला पीपका बहना इत्यादि लक्षणोंमें मार्क-कर ६।

एसिड नाइट्रिक ३. ६।—उपदंशकी पहिली अवस्थामें प्रान्तभाग ऊंचा होकर अधिक रक्त बहता हो तो या लड़के लड़कियोंकी कौलिक उपदंश हो अथवा पारेका अपव्यवहार होने के कारण रोगी चीण, दुर्ब्बल और शरीरके नाना स्थानोंमें फोड़ा होगया हो, तो २ ड्राम नाइट्रिक एसिड १ पाइण्ट पानीके साथ मिलाकर रोज फोड़ा धोनेसे अच्छा फल दिखाई देता है।

कैलि हाइड्रो ३०।—पुराना उपदंश-विष नाश करनेके लिये यह औषध अद्वितीय है, बहुत दिनोंतक गरमी वर्त्तमान रहे तथा साथही दांतकी जड़में फोड़ा हो या सूजा हो, तालू में फोड़ा होगया हो, हाड़ हाड़, सन्धि सन्धिमें दर्द हो, सब शरीरमें फोले और उपदंशका फोड़ा गलता दिखाई दे।

सलफर ६, १२, ३०।—उपदंशकी सभी अवस्थाओंमें बीच बीचमें सलफर खिलाना चाहिये, विशेष करके घावका मध्यभाग पर सफेदरंगका लेप दिखाई देतो।

अरम मेटालिकम ३ विचूर्ण या ६।—मुंह और नाकमें घाव, लिङ्गमूलके मांसकी हद्धि (पुराने उपदंशमें) विशेष करके रोगी सदा दुःखित रहे और आत्महत्याकी चेष्टा करे।

कभी कभी हेपर सल्फर ६, आर्सेनिक ६, कैली कारि-कम ६, एसिड फसफरिक ३० इत्यादिकी भी जरूरत पड़ती है।

साधारण नियम ।—घाव नित्य साफ करलेना चाहिये। जब तक घाव आराम न हो जाये तब तक मछली या मीठा न खाना चाहिये। ज्वर रहे तो लघु पथ्य, और ज्वर न हो तो हल्की पुष्टिकर चीज खिलानी चाहिये।

बाघी (Bubo).

बाघी उठे तो उसे बैठानेकी चेष्टा न करके पुल्टिस् देकर पकाना वो चिरना चाहिये। पर नासूर, शोष इत्यादि अच्छा करनेके लिये, मार्क्यूरियस ६, हेपर सल्फर ६, आर्सेनिक ६, लैकेसिस ६ का प्रयोग करना चाहिये।

गण्डमाला (Scrofula).

१। रक्त दूषित हो कर शरीरके कई स्थानोंकी (जैसे गला, गरदन, बगल या पट्टा) गांठें उठ आती हैं। कभी कभी वक्षस्थल, आंख, कान, नाक इत्यादि स्थानोंमें घाव हो कर रोगीको दुर्ब्बल कर देता है।

पितामाताको गण्डमाला, या उपदंश दोष, तथा अस्वास्थ-

कर स्थानमें बास करनेसे, अच्छा खाना न मिलनेसे यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३, ६।—प्रदाहजनित गांठों का फूलना और दर्द; गला झुकानेमें कष्ट।

कैल्केरिया कार्ब, ६, ३०।—आंखोंमें जलन, स्थूलोदर, अतिसार, कान या ग्रन्थि सूजी हुई और पीप भरी, नाक लाल और सूजी हुई।

सलफर ६, ३०।—बगलकी गांठ, तालूमूल, नाक और ओंठोंकी सूजन घुटने तथा दूसरे दूसरे सन्धिस्थल कठिन, पट्ठोंका फूलना लड़के लडकियोंकी आखोंमें जलन, कानके पीछे तथा शरीरके दूसरे दूसरे स्थानोंमें दानें, शरीरका रुग्न आदि लक्षणोंमें।

मार्क्यूरियस आयोडिटाम १x विचूर्ण।—तालूमूल में घाव और प्रदाह, गलग्रन्थि का फूलना और कठिन। तालूमूलमें दप् दप् दर्द।

साइलिसिया ६, ३०।—ग्रन्थिया सूजकर सफेद रंगकी होजाये तो।

ब्रम् मेट ६, फसफोरस ६, फेरस ६, चायना ६, सीपिया ६, आयोडियम ६, डाल्कैमेरा ६, बैडिएगा १x की भी समय समय जरुरत पडा करती है।

पथ्य।—साफ हवा सेवन, और ठण्ड पानीमें स्नान

होता है कि इन्हीं इन रोगको एकमात्र दवा समय पाकर हो जायगी। डाक्टर ग्राण्ट इसके बड़े भारी प्रशंसक थे।

कैल्केरिया कार्ब ६, ३०।—अग्निमान्द्य, खट्टा उकार, विशेष करके तेल, घी और माठा पदार्थ सेवन करनेसे, रातमें खांसी बढ़नेसे, खांसते खांसते कठिन खंखार, दुर्बलता, रक्तस्राव, छाती कुछ भी दर्द।

बेलिडोना ६, ३०।—सूखी खांसी, बाहर दबानेसे और नालीमें दर्द, स्वरभङ्ग, सन्ध्याको बदन गरम हो आना बहुत देर तक खांसते खांसते रक्त मिला हुआ कफ निकलना, वक्षस्थलमें दर्दके साथ (सन्ध्याको या रातको सोते समय) खांसीकी वृद्धि।

आयोडियम ३, ६। यक्ष्माकी साथ अग्नि मुर्झा हुई, पेटमें दर्द और उदरामय बदनका चमड़ा सूखा और खसखसा, चेहरा म्लान, भूखको अधिकता, दूध, तेल और घर्ख्री मिला हुआ पदार्थ पचानेमें असमर्थ, शरीर शीघ्र शीघ्र दुर्बल होते जाना।

फसफोरस ६ ३, ३०।— मृदु और द्रुत नाड़ी, सूखा और गरम चमड़ा, फुसफुसमें घाव, कई रंगका दुर्गन्धित कफ गिरना, प्रायः पसीना और उदरामय, हेक्टिक ज्वर।

फेरम मेट ३ विचूर्ण ६।—फुसफुसमें रक्तस्राव, हाथ पैर सूजने, उदरामय, शरीरमें रक्तकी कमी, सूखी खांसी, वक्षस्थलमें दर्द हो कर रक्त निकलना।

टयूबेर्कुलिन ६।—रोगकी प्रथमी अवस्थामें अग्निमान्द्य

बहुत बर्फ, या ठण्डा भी न लगने देना चाहिये। रातको जागरन, बहुत परिश्रम तथा स्त्री सहवास भी न करना चाहिये।

बहुमूत्र (Diabetes.)

बङ्गदेशके कवि भारतचन्द्र राय, वाग्मी, केशवचन्द्र सेन, राजनीति विशारद कृष्णदास पाल, पण्डित गुणाधार विद्यासागर महाशय इत्यादि महोदयोंने इसी रोगसे अपना अपना प्राण त्याग किये हैं। इस रोगकी उत्पत्तिका कारण आजतक निर्णय न हुआ, रोगकी पहिली अवस्थामें चमड़ा सूखा, और रूखड़ा, अत्यन्त प्यास, अधिक भूख, दन्तमूल फूला, कोष्ठबद्ध, बारबार मूत्र त्याग, शरीरकी क्षीणता, मांस ढीले तथा छातीमें दुर्गन्ध, ओंठ फटा फटा तथा लाल, पत्तेकी भांति मल इत्यादि लक्षण दिखाई देता है। धीरे धीरे भूख बन्द हो जाती है। स्त्रियोंका ऋतु [illegible], पुरुषकी काम इच्छा प्रबल होजाती है। फिर क्रमक्रम प्रदाह और क्षय काशी इत्यादि लक्षण दिखाई देने लगता है। रोगी ४ सेरसे १० सेर तक दिन रातमें मूत्र त्याग करता है। मूत्रमें मिठास रहनेसे उसे मधुमेह कहते हैं, मिठास न हो तो मूत्रमेह। मूत्र पर यदि मक्खी और चींटी आदि लगे तो समझना चाहिये कि उसमें मिठास है।

चिकित्सा।—सिजाईजियम जेम्बोलेनम १x। यह जामुनके बीजका चूर्ण—रोगकी सभी अवस्थामें दिया

नींबूका रस मिला हुआ ठण्ढा पानी, और आवला खानेसे प्यासकी शान्ति होती है।

शोथ (Dropsy.)

शरीरके किसी अंगमें जल सञ्चय हो तो उसको शोथ कहते हैं। शोथ स्थानिक (जैसे माथा पेट इत्यादि शरीरके किसी स्थानमें हो) और सर्व्वाङ्गीण (जैसे समस्त शरीरमें हो) यह दो प्रकारका होता है। त्वक्के नीचे जो शोथ होता है वह पहिले पैरके गट्टेमें उत्पन्न होता है फिर धीरे धीरे ऊपर बढ़कर समस्त शरीरमें हो जाता है, पिल्हीका बढ़ना, रक्तस्वल्पता, मैलेरिया ज्वर, अधिक शारीरिक परिश्रम करनेसे, पुराने उदरामय इत्यादि रोगोंकी शेष अवस्थामें शोथ हो जाता है। फूली हुई जगह नरम और चमकदार होती है। अङ्गुलीसे दाबनेसे जगह बैठ जाती है, मलिन, प्यास बदनका चमड़ा सूखा और रूखड़ा रहता है पेशाब थोड़ा और लाल होता है। हृत्पिण्डके किसी रोगके कारणसे जब शोथ उत्पन्न होता है तब पहिले पांव और बादमें प्रकट होती है। प्लीहा और यकृतके कारणसे जो शोथ होती है वह पहिले पेटमें होती है (अर्थात् उदरी होती है) रक्तस्वल्पताके कारणसे उत्पन्न हुई शोथ पैर हाथ और मुंह पर होती है।

चिकित्सा।—आर्सेनिक ६, १२ वा ३०। सब

प्रकारकी शोथमें चार्सेनिक फायदा करता है। हृत्स्पन्दनकी पीड़ाके कारण श्वास, पैर और मब शरीरका शोथमें और पित्तकी यकृतादि बढ़नेके कारण पटकी मुत्रनमें, दुर्ब्बलता शीर्णता, माम वर्णकी मूर्च्छा और रक्तकी क्षोभ, सूक्ष्म और विषम गति विशिष्ट नाड़ी, हाथ पैर ठण्डे, बारबार प्यास, परन्तु थोड़ा ही पानी पीनेमें हमि बक्षस्थलमें चांपकर धरनेकी नाई दर्द, सोने ममय मांस लेनेमें कष्ट, बदनका रंग पीला, इन मब लक्षणोंमें चार्सेनिक व्यवहार देना चाहिये।

एपिस-मेल ६।—मूत्रमें विकार रहनेके कारण शोथ। चारक्त ज्वरके बाद शोथमें, गर्भावस्थाके पैरकी शोथमें, तरुण शोथ और प्यास न रहने पर, प्रलापावस्थामें, इधर उधर दृष्टि फिरनेमें, दांत कड़कड़ानेमें, शरीरके चाधे चड़के स्पन्दनमें तथा पेशाब कम और माथे पर पसीना हो तो।

एपोसाइनम १४।—माथा भारी, दुर्ब्बलता, सदा तन्द्रा या अस्थिर निद्रा, नाड़ीकी गति मृदु, कोष्ठबद्ध पर मल कड़ा नहीं, आप ही आप पेशाब निकल जाना, पेटके ऊपरसे वक्षस्थल तक भारी मालूम होना, वक्षस्थलकी पीड़ाके कारण रोगी बारबार दीर्घ निश्वास त्याग करे, हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीण हो।

डिजिटेलिस ३x।—दुर्ब्बलता, क्षीण और विषम गति विशिष्ट नाड़ी, सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, मुखमण्डल मलिन, रोगी चित न हो सके, हृत्पिण्डकी क्रिया वैषम्य, हृत्रोग और मूत्रयन्त्रि जनित शोथमें।

हेलिबोराम १२ या ३०।—माथेकी शोथ, वक्षकी शोथ, सब शरीरकी शोथ, और मूत्रविकारके बादकी शोथमें।

ब्रायोनिया ६, ३०।—यकृतकी पीड़ा और कोष्ठबद्धके कारण उत्पन्न हुई शोथमें, गर्भावस्थाके पैरकी शोथमें पसीना बंद होने के कारण या गात्रपीड़काके लोप हो जानेके कारण उत्पन्न हुई शोथमें, सन्धिकी शोथमें, मांसके कष्टमें तथा सूखी खांसी और वक्षस्थलकी पीडामें।

फिरम मेट ६, ३०।—काला या पीले रंगका शरीर, अतिशय दुर्ब्बलता, कोष्टबद्ध, भोजनके बाद वमनोद्वेग, रजोनैलक्षण्य जनित शोथ।

समय समय चायना ६, कल्चिकम ६, लैकेसिस ६, लाइकोपोडियम ३०, सलफर ३०, एकोनाइट ६ इत्यादि औषध भी देना चाहिये।

पथ्यापथ्य।—तरुण शोथमें, तरुण ज्वरकी भांति हलका पथ्य, पुराने शोथमें पुष्टिकर लघु पथ्य। यकृतकी पीड़ा जनित शोथमें दूध या मीठा न देना चाहिये। मांसका शोरवा यदि कोष्ठबद्ध न हो तो देना चाहिये। रोटी यदि उदरामय न हो, ठण्डा पानी पिलाया जा सकता है पर मूत्रविकारजनित शोथमें मना है, उसके बदले खाटी दूध देना चाहिये। गरम पानीसे नहाना अच्छा है। रोग कुछ दबने पर पुराने चावलका भात, मूंगकी दाल, मासका शोरवा, सजनेका डाटा, परवल, बैंगन इत्यादि खिला सकते हैं।

रक्ताल्पता (Anæmia).

अपरिमित रक्तस्राव, शुक्रक्षरण, अति रजस्राव, मैलेरिया, प्लीहाकी वृद्धि, उदरामय इत्यादि रोग बहुत दिनों तक भोगनेके कारण रक्तकी लाल-कणा भाग कम हो जाता है और नमकका अंश बढ़ जाता है, इसीको रक्तस्वल्पता कहते हैं। आंखें और ओंठ रक्तहीन होकर सफेद हो जाते हैं, सब शरीरमें पीले रंगका शोथ हो जाता है, सदा हंफनी होने लगती है, अरुचि, पेटका फूलना, मूर्च्छा इत्यादि लक्षण भी देखे जाते हैं।

चिकित्सा।—मैलेरिया रोग भोगने पर रक्तकी कमीमें नेट्रामम्यूर ३०। थोड़ा रज या ऋतु बन्द होकर यह पीड़ा उत्पन्न भई हो तो पल्सेटिला ६, और फेरामसेट ३०। श्वेत प्रदर शुक्रक्षरण, रक्तस्राव और उदरामय जनित हो तो चाइना ६ और फसफरिक एसिड ६। शोथ, उत्थान शक्ति रहित तथा जीवनी शक्तिकी ह्रास अवस्थामें आर्सेनिक ३०। यक्ष्मा खांसीके लक्षण हों तो फसफोरस ६। मदिरा पान इत्यादि अत्याचारजनित हो तो नक्सभमिका ३०। उपरोक्त औषधोंसे यदि कोई लाभ न हो तो सलफर ३० दो दिन खाकर फिर दो दिनों तक बिना औषधके रहना चाहिये; फिर लक्षणके अनुसार उपरोक्त औषधोंमेंसे कोई औषध

शिरःपीड़ा। (Headache).

शिरका दर्द दूसरे रोगोंके लक्षण मात्र है।

चिकित्सा।—एकोनाइट १२ या ३० रक्त सञ्चयजनित शिरकी भयानक दर्द में ऐसा मालूम होता है कि मस्तिष्कके भीतरकी समस्त चीजें ठेलकर बाहर निकलती है। समय समय पर कपाल और कनपटीमें टप् टप् करके दर्द हो, यहां तककी आंखें भी दुखने लगे, तथा माथा हिलाने, झुकाने और इधर उधर डोलानेमें दर्दकी वृद्धि और विश्रामकालमें शान्ति।

आर्निका ६, ३०।—रक्त सञ्चय जनित या स्नायविक दुर्बलता जनित शिरका दर्द, आंखोंके पलकका भारी मालूम होना, आंखोंके आगे अंधेरा होना या आगकी कनीका दिखाई देना, आंखें लाल तथा जलन, माथा गरम, कपाल, कनपटी और गलेके शिराका स्पन्दन, शोरका शब्द, रोशनी, हिलने डोलने तथा सोनेमें पीड़ाकी वृद्धि, स्थिर होकर बैठनेमें कमी।

बायोनिया ६, १२, ३०। रक्त सञ्चय और वात जनित शिरका दर्द, हिलने डोलनेमें वृद्धि, माथा भारी, आगे झुकानेमें ऐसा मालूम हो कि शिरके भीतरकी सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी। दबानेमें पीड़ाका अच्छा होना, बायें कपालमें विशेष करके दाहिने तरफ दर्द, बारबार ओकाई आना और पित्त वमन करना, शिरमें दर्द होनेके बाद नाकमें रक्त गिरना।

कैलकेरिया कार्ब्ब ३०। मानसिक चिन्ता बहुत होनेके कारण सिरमें दर्द, सिरमें भयानक दर्द, सुबहके समय रातमें शरीरके ऊपरी भागमें पसीना, खाली पेट रहने पर भी बारबार डेकार आना और माथा ठण्डा मालूम होना।

चाइना ६. १२. ३०।—कानमें गुनगुन शब्द, चेहरा लाल, शरीर दुर्ब्बल और बारबार जंभाई आना।

इग्नेशिया ३. ६।—कठिन शोकके कारण सिरमें दर्द, गुल्मवायुग्रस्त रोगके कारण सिरमें दर्द तथा सुई भोंकनेकी भांति दर्द।

लिलीयाम टिग्री ६। सनूचे सिरमें दर्द और भार मालूम होना, दोनो हाथोंसे माथा पकड़े रहनेकी इच्छा, खुली हवामें सिरकी दर्दका बढ़ना और शामको शान्ति।

नक्समसिका ६. १२. ३०।—माथा घूमना, कपाल और कनपटीका फुदकना, फटजानेकी भांति दर्द, वमन या वमनोद्यम, कोष्ठबद्ध, भोजनके बाद तथा मानसिक परिश्रमके बाद मस्तक झुकानेसे पीड़ाकी वृद्धि, बलवान या रक्त प्रधान मनुष्योंके सिरका दर्द, अधकपाली जो दर्द सुबह उठकर शामको अच्छी हो जाये, अम्ल या पित्त वमन।

पलसेटिला ३. ६. १२।—अन्न ठीक न पचनेके कारण या अधिक तेल तथा घी खानेसे, स्त्रीके जननयन्त्रकी क्रिया

विकारमें, एक तरफके कानके पिछले भागमें तेजदर्द, ऐसा मालूम होना मानो कोई शिरमें सूई बेध रहा है।

फसफरिक एसिड ६, ३०।—धातु दौर्ब्बल्य और स्नायविक दुर्ब्बलताके कारण माथेमें दर्द, स्मरण शक्तिका घट जाना, दृष्टि शक्तिका कम होना तथा कानोंसेभी कम सुनाई देना।

सीपिया ६, १२, ३०।—माथे पर भार मालूम होना तथा सूई बेधनेकी भांति दर्द, रजोवैलक्षण्यजनित वमन या वमनोद्यमके साथ शिरःपीडा, कोष्ठबद्ध। दाहिने या बांये आंखपर दर्द।

साइलिसिया ६, १२, ३०।—प्रबल शिरःपीड़ाके कारण विवेचना शून्य होजाना, सुबहको जाड़ा मालूम होना तथा वमनेच्छाके साथ दबानेकी भांति दर्द, आंखोंके ऊपर ऐसी दर्द कि आंखें बाहर निकल पड़ेगी।

सिमिसिफिउगा ३।—स्नायवीय, वात जनित या रजोवैलक्षण्य जनित सिरका दर्द, मस्तक और आंखोंमें तीव्र वेदना, हिलानेसे दर्दका बढ़ना, कपालसे लेकर गरदन तक दर्द, तेज दर्दके कारण चक्षुतारा विस्तृत, प्रलाप और दृष्टिविकार, गुल्मवायुग्रस्ता स्त्रीको वमनके साथ दर्द।

स्पाईजीलिया ३।—शिरके सम्मुख भागमें नोंच कर फेंक देनेकी भांति दर्द, यह दर्द आंखों तक फैली हुई हो, हिलनेसे या झुकानेसे पीडाकी वृद्धि साथही हृदस्पन्दन या अस्थिरता, जोरसे दबानेसे पीडाका कम होना, आधी ओरका दर्द, सूर्यो-

दयके समय वेदनाका आरम्भ होना और दो पहर तक बढ़ना, फिर धीरे धीरे कम होकर सूर्य्यास्त तक अच्छा हो जाना।

मलफर ६. १२. ३०।—कपालमें और कानके पिछले भागमें टप् टप् दर्द, माथेका ऊपरी भाग गरम मालूम होना, प्रातःकालके समय उदरामय; ऋतुमें रक्तस्राव बन्द होकर मस्तकमें रक्तका सञ्चय होना तथा सिर घूमना और दर्द।

मेराइमभोर ६. ३०।—मस्तक पूर्ण और भारी मालूम होना, सब रगोंका स्पन्दन, अचेतनावस्था, कानमें भों भों शब्द, वमन या वमनोद्वेगके साथ उदरामय।

पथ्यापथ्य।—दर्दकी पहिली अवस्थामें कुछ भी न खाना चाहिये। अम्लजनित सिरकी दर्दमें दूधके साथ थोड़ा चूनाका पानी मिलाकर पीना चाहिये। दाबकर धरनेसे यदि उपशम हो तो भींगा कपड़ा माथेमें बांधनेसे अच्छा फल दिखाई देता है।

संन्यास (Apoplexy).

अच्छा हालतमें घूमने फिरनेके समय सहसा गिर पड़नेसे बिल्कुल या कुछ अचेतन्य हो जाये तो उसीको सन्यास कहते हैं। तीन कारणोंसे इसकी उत्पत्ति होती है। माथेके रक्त

बड़ा नाड़ियोंमें रक्त अधिक हो जानेके कारण। (२) माथेकी रक्त बहा नाड़ी छिन्न हो जाये और अधिक रक्त निकलनेके कारण (३) माथेमें हठात् जल सञ्चय होनेसे। यह रोग कभी कभी धीरे धीरे मालूम होने लगता है और कभी कभी यकायक आरम्भ हो जाता है। रोगी अच्छा रहने पर भी कभी यकायक इन्द्रिय-ज्ञान और स्मरण शक्ति खो देता है परन्तु मांस और रक्तसञ्चालन क्रियाका लोप नहीं होता, नाड़ी पूर्ण और मृदु, चक्षुतारा एक विस्तृत और दूसरा संकुचित, आधे या समूचे अङ्गमें खैंचन, मुख एक ओर आकृष्ट इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। फिर कभी कभी रोगी हटात् अज्ञान होनेके पहिले कई दिनों तक माथा झुकानेसे वमनेच्छा, मूर्च्छा-भाव, सिरका दर्द, माथेके ऊपरका भाग गरम मालूम होना, कोष्ठबद्ध, पेशाब कम, चित्त चञ्चल इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। एकतरहका और भी सन्यास रोगमें (अर्द्ध अङ्गमें पक्षाघात) माथा भारी, नाकसे रक्त गिरना, तन्द्रावेश, कानके भीतर एक प्रकारका शब्द मालूम होना, नाड़ी पूर्ण और द्रुत, कोई कोई अङ्ग अवश, वमनेच्छा, इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। मदिरापानादि अत्याचार, बहुत खाना, पीना, काँधेमें भारी वस्तुका चाप मालूम होना, प्रशस्त वक्ष और क्षुद्रग्रीवा, अतिशय मानसिक चिन्ता, रजोरोध, हृत्पिण्डकी क्रिया गड़बड़ इत्यादि कारणोंसे भी सन्यास रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा ।—ऐकोनाइट ३x ।—पूर्ण और द्रुत तथा सबल नाड़ी, बदन सूखा और गरम, जीभमें पक्षाघातके कारण बोली साफ न निकलना ।

आर्निका ६ ।—वृद्ध मनुष्योंके मस्तकमें रक्तसञ्चय ।

बेलेडोना ६ ।—चैतन्य लोप, वाक्य रहित, मुंह लाल और सूजा हुआ, माथे और गरदनकी रगोंका उछलना, चेहरा और हाथ पैरका आक्षेप, मूत्र बन्द या आपही मूत्र निकल जाना ।

ओपियम ६. ३० ।—तन्द्रा या गाढ़ी नींद, (संज्ञा रहित) पूर्ण या मृदु नाड़ी, विषम शब्दयुक्त सांस, मुंह सूजा तथा लाल, आधी खुली आंखें या अक्षतारा विस्तृत, हाथ पैर ठण्डे रक्त वहा शिराओंसे रक्तका बहना ।

नक्सभमिका ६. १२. ३० ।—मस्तिष्कके रक्त सञ्चयजनित संन्यास रोगमें, माथासे रस या रक्त निकलने पर, अतिरिक्त भोजन, मदिरापान या रातमें जागना इत्यादि अत्याचार जनित संन्यासमें ।

मात्रा ।—प्रबल अवस्थामें २० । ३० मिनिटके बाद एक मात्रा ।

पथ्यापथ्य ।—अन्न, व्यञ्जन, दूध, ताजी मछलीका शोरवा सुपथ्य है। चाह, काफी, मांस, घृत या गरम मसाला, सड़ी हुई वस्तु तथा उत्तेजक खाद्य निषेध । रोगकी हालतमें हाथ

पैर ठण्डे होने पर गरम जलका सेंक, माथे पर शीतल जलकी पट्टी और पहिरनेका कपड़ा ठण्डा कर देना आवश्यक है। रोगीके पास शुद्ध वायु सञ्चालनमें व्याघात न होने देना चाहिये।

अपस्मार या मृगी (Epilepsy).

हठात् चैतन्यता लोप हो जाकर रोगी गिरजाय, किसी किसीको रोग आरम्भ होनेके पहिले माथा घूमना, माथेमें दर्द, शिरमें कीड़ा चलता हुआ मालूम होना, अस्पष्ट दृष्टि, कानमें भौं भौं शब्द, बदनमें दर्द, इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। कोई कोई रोगी हठात् जोरसे रोकर बेहोश हो जाता है। रोगके आरम्भमें सब अङ्गोंमें आक्षेप, ग्रीवा कठिन और टेढ़ी हो जाती है, चक्षुतारा नीचे या ऊपर उठ जाता है, हाथकी अङ्गुलियां सब सिकुड़ जाती है, कलेजा धड़् फड़् करता है, चेहरा पीला होकर फिर लाल हो जाता है, हाथ पैर फेंकने लगता है, ठण्डा आठा आठा पसीना निकलता है। २०।३० मिनिटमें वेग कम होने पर रोगी सो जाता है। बहुत दिनों तक यह रोगसे भोगने पर धीरे धीरे मानसिक शक्ति क्षीण होकर उन्माद हो जाता है या सब अङ्गोंमें पक्षाघात हो जा सकता है।

गुल्मवायु (हिष्टीरिया) रोगमें—मृगी रोगकी भांति एक दम मनुष्य अचैतन्य नहीं हो जाता है या रोगावेशके पहिले

या टिउक्रियम ६। धातुकी दुर्ब्बलता जनित मृगी रोगमें ऐसिड फस ६, फसफोरस ६, चायना ६, या फिरम ६। डरके लिये मृगी रोग होनेसे ओपियम ३० या ऐकोनाइट ३x।

गुल्म या मूर्च्छागत वायु (Hysteria)।

आयुर्व्वेदमें कहा हुआ गुल्मवायु और हिष्टीरिया एक ही प्रकारका रोग नहीं है, पर इसका बहुतसा भाग अवश्य मिलता है। साधारणतः स्नायविक विकारके कारणसे यह रोग उत्पन्न होता है। इसी कारणसे पेटका फूलना, हिचकी, सांस लेनेमें कष्ट तथा सांस लेने और छोड़नेमें भी बहुत शब्द होता है, स्वरभङ्ग, पेटसे गले तक कोई गोलाकी तरह पदार्थका चढ़ना, सिरमें दर्द इत्यादि उपसर्ग मालूम होने लगते हैं। हिष्टीरियामें ज्ञान एकदम लोप नहीं होता है। जरायु बिगड़नेसे भी यह रोग उत्पन्न होजाता है। जवान स्त्रियोंको और कभी कभी पुरुषोंको भी यह रोग पैदा हो जाता है।

चिकित्सा। मूर्च्छाके समय रोगीको कैम्फर या मस्कस सुंघानेसे रोगी शीघ्र ही चैतन्य हो जाता है। अच्छी अवस्थामें चैतन्य होने पर नीचे लिखी दवायें देनी चाहिये। रोगी सदा दूध, मक्खन, फलोंको नियमित समयमें अधिक दिन खाये और अधिक रक्त निकलना या बंद होकर मासिकऋतुमें रक्त कम होनेके कारण यदि रोग उत्पन्न हो तो

धनुष्टङ्कार (Tetanus).

इस रोगमें शरीर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है। यह दो तरहका है पहिला स्वयंभूत और दूसरा आभिघातिक। रक्त दूषित हो कर स्नायविकमण्डली विकृत हो जानेसे जो धनुष्टङ्कार होता है उसे स्वयंभूत और शरीरके किसी अंगमें भारी चोट लगनेसे चोटकी जगहमें स्नायविक उत्तेजना होनेसे जो धनुष्टङ्कार पैदा होता है उसे आभिघातिक कहते हैं। गलेमें दर्द, गरदन कड़ी, बहुधा बन्ध, रोगीका चेहरा कष्टयुक्त देखा जाय। मुख-मण्डलकी सब पेशियां कड़ी होकर आक्षेप या ऐंठन आरम्भ हो, मुखमण्डलमें दुःख झलके, रोगी एक दृष्टिसे देखता हो, पीछे दर्द होकर सब शरीर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाये। कोई कोई रोगी आगेकी तरफ और कोई कोई पीछेकी तरफ झुक जाता है। यह रोग सभी अवस्थाओंमें हो सकता है।

चिकित्सा।—स्वयंभूत धनुष्टङ्कारमें प्रबल आक्षेप न हो और आक्षेपके समय ठण्ड और पसीना हो आये तो एकोनाइट रैडिक्स। आघात जनित धनुष्टङ्कार रोगमें रह रह कर आक्षेप होता हो और रोगी पीछेकी तरफ झुकता जाये तो नक्सभमिका ६। अभिघात जनित धनुष्टङ्कारमें बड़ा जोरका आक्षेप हो तो एसिड हाइड्रो ६.। रोगीका सब शरीर कड़ा हो कर टकटकी लगाये देखता हो, टेटनस रोगमें न रहना, लम्बाप्रकार पग विकृति बहुत देरके बाद आक्षेप हो, छूनेहीसे

बढ़े, सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट होता हो, चेहरा लाल, मुंहसे फेन गिरता हो और रोगी पीछेकी तरफ झुके तो सिकिउटा-भिरोसा ६। आघात जनित धनुष्टङ्कारमें चेत रहने पर और श्वास रोध होना चाहे या सब शरीर कभी नरम कभी कड़ा हो जावे तो, नक्सभमिका ३x। मेरुदण्डके ऊपर बरफ रखना चाहिये।

मात्रा।—रोगके पूर्व्व लक्षण प्रकाश होतेही २० मिनिट का अन्तर देकर एक एक मात्रा दवा देनी चाहिये।

जलातङ्क (Hydrophobia.)

पागल कुत्ता, सियार, भेड़िया या बिल्लीके काटनेसे यह रोग उत्पन्न होता है। उनके दांत और नखोंमें एक प्रकारका विष होता है जो रक्तमें लगतेही शरीरमें बैठ जाता है। इसके १०।१८ दिन पहिले कोई लक्षण रोगका नहीं दिखाई देता। कपड़े पर काटनेसे विष कपड़ेमें लगना समझ कर रोगी उस रोगका कुछ खियाल नहीं करता है। काटनेके १०।१८ दिन बाद उस काटे हुए स्थानमें जलन, चारो तरफखुजली स्वभावका क्रोधी हो जाना, रातमें भयङ्कर स्वप्न दिखाई देना, गलेकी नसोंका सिकुड़ जाना, कोई चीज निगलनेकी शक्तिका न रहना, सांसमें कष्ट, पानी या पानीकी तरह चीज देखनेसेही

रोगीको डर मालूम होना और धीरे धीरे कुछ दिन बाद ऐसाही हो होकर रोगी दुर्ब्बल हो मर जाता है।

चिकित्सा।—काटतेही क्षत स्थानके ऊपर बांध देना चाहिये, इसके बाद जिसके दांतमें कोई रोग न हो वह उस काटी हुई जगहका रक्त चूसकर बाहर फेंक दे। फिर लोहा गरम करके उस स्थानको दाग दे या कार्ब्बोलिक एसिड या नाइट्रिक एसिड द्वारा उस काटी हुई जगहको जला देनाही अच्छा है, और ष्ट्रामोनियाम १x भी देना चाहिये।

पक्षाघात (Paralysis).

किसी अङ्गका (या आधे अङ्गका) स्पर्श ज्ञान रहित अथवा अवश होनाही पक्षाघात कहलाता है। पक्षाघात कई प्रकारका है, जैसे मेरुदण्डके आघातके कारण पक्षाघात, चेहरेका पक्षाघात, कंपकंपीके साथ पक्षाघात, शीशेके अङ्ग या उपाङ्गके अङ्गोंका पक्षाघात।

चिकित्सा।—स्मरण शक्तिका कम हो जाना, कंपकंपीके साथ बूढ़े आदमियोंका सब अंगोंका पक्षाघात और चेहरे तथा जीभके पक्षाघातमें बैराइटा कार्ब ६-३०। पेशाब पाखानेमें और मूत्राशयके पक्षाघातमें कष्टिकम ६, १२, ३०। पक्षाघात अंगके छूनेमें नहीं मालूम होता परन्तु काटा इत्यादि

गड़ानेसे मालूम होता है और रोगकी जगह झिनझिन करती है। आधे अङ्गकी अवशता (नये पक्षाघातमें) एकोनाइट १x। जांघमें गठियेकी तरह दर्द, हड्डिकी शीतलता, रातमें पेशाब रोकनेकी सामर्थ्य का न रहना, चलनेमें कमजोरी इत्यादिमें बेलेडोना ३। बहुत ज्यादे धातुक्षयके कारण ध्वजभङ्ग या पक्षाघात होनेसे फसफोरस ६ या ३०। हाथ पैरोंका स्पन्दन, स्नायुमण्डलके खराबीके कारण पक्षाघात होतो मार्कसल ६। कांटा गड़ानेसे दर्द हो तो और छूनेसे न मालूम हो तथा सब जोड़ोंमें कड़कड़ आवाज होकर आधे अंगमें पक्षाघात हो और नोचेके अंगोंके पक्षाघातमें ककिउलास ३। बूढ़े आदमियोंके पक्षाघातमें कोनियम ६। बहुत शराब पोनेसे पोठमें पक्षाघात हो और साथ हो वमन (कै) की इच्छा रहे, कब्जियत, अरुचि इत्यादि लक्षणोंमें नक्सभमिका १, आंखकी पलकके पक्षाघातमें जेलसिमियम १।)

सर्दीगर्मी (Sunstroke).

तेज धूपमें पहिले माथा गर्म होकर क्रिया रहित होनेसे यह रोग उत्पन्न होता है। पहिले गर्मी, प्यास, बदनका चमड़ा सूखा, माथेमें दर्द, आंखे लाल, वमनकी इच्छा, बार-बार पेशाब, फिर धीरे धीरे मूर्च्छा होती है। कभी तेज धूपमें घूमनेके बाद ही रोगी एकाएक मूर्च्छित हो जाता है।

चिकित्सा ।—सिरका बहुत घूमना भीतर ज्वाला-का गर्मी माथेके पिछले भागमें दर्द, यकायक चैतन्यताका लोप होना इत्यादि लक्षणोंमें ग्लायन ३, ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ आंखें और चेहरा यदि लाल हो जाय तो बेलेडोना ३, रोगी बेहोश हो जाय और आक्षेप न रहे तथा शरीर गर्म रहे तब सब शरीर पर ठंढा जल डालना चाहिये। यदि प्रबल आक्षेप हो, नाड़ी दुर्बल और क्षीण हो तो रोगीके नाकके पास स्पिरिट कैम्फरकी शीशी रख देनी चाहिये या भीतर प्रयोग करना चाहिये। समय समय पर एकोनाइट ३, भिरेट्रमभिर ३, जेलसिमियम १x, ओपियम ६, कार्बोभेज ३० प्रयोग करना चाहिये।

स्नायुशूल (Neuralgia).

स्नायुकी दर्दके कारण कई जगहोंमें टप टप तथा सुई बेधनेकी तरह या जलनके साथ दर्द पैदा हो, तो उसको स्नायुशूल कहते हैं। स्नायुशूल अनेक प्रकारका होता है। जैसे चेहरेका स्नायुशूल, अधकपाली, पार्श्वशूल, गृध्रसी (कमरके नीचे) मेरुदण्डके पट्ठोंमें पीड़ा- जैसे, पाकाशयमें, हृत्पिण्डमें, यकृतमें, डिम्बाशयमें तथा अण्डकोषमें, चेहरेका स्नायुशूल और गृध्रसी शूल अक्सर देखा जाता है। आघात, दांतमें कीड़े होना, सर्दी लगना, मलाधार कठिन स्वास्थ्यभङ्ग इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा ।—चेहरेके स्नायुशूलमें बेलेडोना, आर्सेनिक, ऐकोनाइट, कलीफाइलम, स्पाइजीलिया और फसफोरस । अर्धकपालीमें—आर्सेनिक, इग्नेशिया, काफिया, चायना, जेलसिमियम, नक्सभमिका, और बेलेडोना । आमाशयके शूलमें—आर्सेनिक, एलोज, कलोसिंथ, नक्सभमिका और लाइकोपोडियम । यकृतपिण्डके शूलमें—कैक्टस, बेलेडोना, मेराइम मिर, स्पाइजीलिया । अण्डकी शूलमें—कैमेमिला, इग्नेशिया, कलोसिंथ, आर्सेनिक, लाइकोपोडियम, प्लमबम, सलफर और फसफोरस । यह सब औषध व्यावहृत होते हैं ।

आर्सेनिक ६-१२-३० । रोगी अत्यन्त चञ्चल, व्यग्र या विमर्ष, कृश, दुर्बल, विश्रामकालमें, शीतल प्रयोगमें, विशेष करते रातके समय रोगका बढ़ जाना इत्यादि लक्षणोंमें तथा मलेरियासे उत्पन्न भये हुए स्नायुशूलमें ।

फसफोरस ६-३० ।—चेहरके स्नायुशूलमें ।

ऐकोनाइट ३ ।—कपालमें, गालमें और गण्डस्थलकी खेंचनेमें या चोपनेकी भांति दर्दमें, रक्तसञ्चय होनेके कारण मुखमण्डलके दर्दमें और अण्डमीमें ।

बेलेडोना ६ ।—अर्धकपालीमें जो दो पहरको बढ़ जाय और साथ ही चेहरा लाल हो जाय, मुखमण्डलके दाहिनी तरफका स्नायुशूल और गलेके निचले भागके स्नायुशूलमें ।

स्पाईजेलिया ३ —माथा और चेहरा काटकर फेंक देनेकी भांति दर्द दूर दर्द जब थोड़े तक फल जाते हैं तब

माथा हिलाने या भुकानेमें दर्द बढ़ने लगता है और साथ हो कलेजा धड़ धड़ करने लगता है और अस्थिरता (बेचैनी) बढ़ जाती है। इत्यादि लक्षणोंमें।

कल्मोनिय ६।—आधे सिरकी दर्दमें, माथा तथा दांतके दर्दमें, चेहरेके बाई तरफ सूई बेधनेको तरह दर्द, यह दर्द गर्मीमें और हिलने डोलनेसे बढ़ जाती है, सब नसोंका स्पन्दन तथा सिरोंके मालिश धमनीका दर्द और पुतलीके अतिशूलमें; अथवा शूलवत सूई बेधनेका तरह, भुकनेमें दर्दका बढ़ना, माथेमें बड़ी दर्द, ऐसा मालूम होना कि माथेमें और आंखोंमें कोई सूई गड़ा रहा है और साथ ही अधुतारोंमें अनवरत मात्र दर्द होना इत्यादि लक्षणोंमें।

सिनमिसिफ्युगा ३। *वायविक दुर्बलताके कारण सब* धड़ स्पन्दनके साथ स्नायुशूलमें, पीठमें, कन्धा तथा गर्दनमें और कानमें दर्द।

कफिया ६।—दाहिनी तरफकी अर्धकपालीमें (जो सुबहमें आरम्भ होकर दिन भर कष्ट देता रहे) कपालके बगलमें कांटा बेधनेकी भांति तेज दर्द (मालूम हो कि माथा कटकर गिर जायेगा) भुकनेमें या तेज आवाज सुननेसे दर्दका बढ़ना, हाथ और पैर ठंढा रहना तथा अतिशय शीत मालूम होना।

चक्षुरोग।

चक्षुप्रदाह (Ophthalmia).

आंखोंमें धूल, धूप, सर्दी या ठण्डी हवा, धूआं, तेज रोशनी लगनेसे आंखें आती हैं। हाम और प्रमेहसे चक्षुप्रदाह होता है।

लक्षण।—आंखोंके उजले स्थानका लाल हो जाना, आंखसे जल या पीप निकलना, आंखोंका जुट जाना, रेग गिरने या सुई बेधनेकी तरह दर्द, बड़काना, रोशनीका सह्य न होना।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३x, उभरी, लाल रंगकी आंख; तेज दर्द, फूल जाना और पलकके पास टपटप टपकना; दोनों पपनी लाल रंगकी, रोशनी या धूपका असह्य होना।

एकोनाइट ३x, ६। वात प्रमेह या सर्दीके कारणवाली नई आंखोंकी बिमारीमें सामान्य ज्वर हो तो इसे देना।

मर्क्यूरियस कर ३।—आंखसे जल गिरनेके बाद पीप उत्पन्न हो कीचड़ आवे, आंखें कट जाय, गर्म और दर्द मालूम हो, देखने या झुकानेसे दर्द होता हो, बहुत कुटकुटाय और रोशनी सहन न हो सके।

एपिस मेल ३०।—बहुत पीप बहना, रोशनी असह्य, ज्वाला, खुजलाना, दर्द और आंखें सूजी हुई।

यूफ्रेसिया १x।—(सभी अवस्थाओंमें दिया जा सकता है) आंखें लाल, रोशनी असह्य, नाक तथा आंखोंसे बहुत जल गिरना, दर्द, बारबार छींक, आंखोंके उजले अंशमें और चक्षु तारोंके बगलमें छोटी छोटी फुनसियां निकल आना; आंखोंमें पीप अर्थ या मलाई तरह पीप आंखोंमें की जानेमे देखनेमें बाधा हो तो, १० बूंद १ औंस जलमें मिलाकर आंखें धो देनी चाहिये।

आर्जेण्टम नाइट्रिकम ३ या ३०।—अधिक पीप बहनेके साथही लड़कोंके चक्षुप्रदाहमें, पुराने चक्षु प्रदाहमें जब कुछ हल्दीके रंगका पीप बहने लगे।

मरकर ३, ३०। चक्षुतारोंका प्रदाह और उसके बगलमें लाल रंगका चकत्तोंकी तरह फोड़ा, सूई गड़ानेकी भांति दर्द, पानी लगनेहीसे वृद्धि या गण्डमाला जनित चक्षु प्रदाहमें आर्सेनिक ६, सलफर ६, ऐलुमिनियम ३x भी प्रयोग किया जाता है।

पथ्यापथ्य। हलका और पुष्टिकर भोजन, मछली, और मिठा निषेध, रोगीको साफ सुथरे बिछावनपर सुलाना चाहिये। गुलाब जलसे या खौड़ गर्म दूधसे आंखें साफ करनी चाहिये।

साधारण नियम।—रक्तकी कमीके कारण दृष्टि क्षीण होनेमें पुष्टिकर और बल बढ़ानेवाली चीजें खिलाना चाहिये। अवगाहनमें स्नान, विशुद्ध वायु सेवन इत्यादि हितकर है।

रातौंधी—बेलेडोना ६, लाइकोपोडियम ३०, और दिनौंधीमें—साईलीसिया ३०, फसफोरस ६, सल्फ्यूरिक एसिड ६ या बेलेडोना ३०।

तारकामण्डल प्रदाह (Iritis).

चक्षुतारके चारो तरफवाले मण्डलको तारका-मण्डल कहते हैं। यही तारकामण्डलमें जलन होनेपर ठीक समय पर दवा न दी जाय तो, जाला पड़कर देखनेकी शक्ति जाती रहती है।

प्रदाह (जलन), चोट लगने या किसी प्रकारके आघातके कारण या प्रमेहजनित आदि कई प्रकारमें होता है।

साधारण लक्षण।—दृष्टि शक्तिकी कमी और दूरकी चीजें न दिखाई देनी, दियेकी रोशनी या धूपमें कष्ट मालूम होना, आंखें मूंदनेमें दर्द, दोनो कनपटोंमें सूई बेधनेकी तरह दर्द, इत्यादि।

चिकित्सा।—चोट लगनेके कारण तारकामण्डलमें

जलन हो तो आर्णिका ६, (आर्निकाका मूल अरिष्ट १० बूंद, आध पाव जलमें मिलाकर रोज ३-४ बार आंखें धोनी चाहियें) दाहके साथ ज्वर रहे तो ऐकोनाइट ३x और आर्निका ६, पर्य्यायक्रमसे देना चाहिये। यदि मस्तिष्कमें भी कोई गड़बड़ दिखाई दे तो आर्निका और बेलेडोना पर्य्यायक्रमसे देना चाहिये। वातके कारणवाले दाहमें— ब्रायोनिया, स्पाइजिलिया, यूफ्रेशिया। सन्धिवात जनित प्रदाहमें—आर्सेनिक, कलोसिंथ, काकिउलस और सलफर। उपदंश (गरमी) जनित प्रदाहमें—कैलिब्राइकम, मार्कसल, एसिड फस्। प्रमेह जनित प्रदाहमें—एसिडफस, मार्कसल, अर्जेन्टम-नाइट्रिकम। यही सब दवायें प्रयोगकी जाती है।

जालदृष्टि (Muscæ volitantes).

इस रोगमें आंखके सामने छोटे छोटे कीड़े, धूल या छोटे सूतकी तरहके पदार्थ उड़ते हुए दिखाई देते हैं। पुराना ज्वर, अपरिमित शुक्र निकलना, रक्तकी कमी इत्यादि नाना कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है। कारणका पता लगाकर दवा देनेसे तुरत ही यह रोग दूर जाता है, कहीं कहीं कम-जोरीके कारणसे भी यह रोग उत्पन्न होता दिखाई देता है।

६। कर्णरोग।

कर्णप्रदाह (Otitis).

कर्ण प्रदाह अधिक करके सर्दी लगनेसे ही होता है, और कानके भीतरकी जगहमें दर्द, सूजन तथा उसका रंग लाल हो जाता है साथही ज्वर भी रहता है। रोग होते ही दवा न करनेसे कानके भीतरके कई पर्दे तक इसका असर हो जाता है और धीरे धीरे दुर्गन्ध आने लगती है तथा पीप बहने लगता है।

चिकित्सा।—पहिली अवस्थामें विशेष करके सिरमें दर्द तथा गलेमें दर्द हो तो बेलेडोना ३x और गर्म जलका सेंक देना चाहिये। परन्तु यदि कर्ण गर्भ तक दर्द हो और साथ ही ज्वर भी रहे तो एकोनाइट ३x। दर्द पुराना हो तो नाइट्रिक एसिड ६, सलफर ३० देना चाहिये। सूई गड़ानेके तरह दर्द और कर्णमूलमें बड़ा दर्द हो तो कमोमिला ६।

कर्णशूल (Otalgia).

कर्ण प्रदाहमें ज्वर और टप टप करके दर्द होती है। कर्णशूलमें कानमें सुई बेधनेकी भांति दर्द होती है। यह दर्द कभी कभी बढ़कर दांतके मसूड़ेतक आजाती है। सर्दी

कर्णनाद (Tinnitus Aurium).

इस रोगसे कानमें, गुन् गुन्, फन्फन् सों सों इत्यादि शब्द होते सुनाई देते हैं। दूसरी दूसरी बीमारीके कारण या स्नायविक दुर्बलताके कारणसे यह रोग उत्पन्न होता है। इस रोगसे मनुष्य बहिरा भी हो सकता है।

चिकित्सा।—कानोंमें घंटेका शब्द, गर्जन शब्द या गुन गुन शब्द हो तो एसिड फसफरिक ३०, सुबहको कानमें गरजनेकी भांति शब्द और बारबार कानके भीतर खुजलाहट हो तो नक्सभमिका ६, ३०। कानमें जलके प्रवाहकी तरह या गुन् गुन् शब्द सुनाई दे तो कमोमिला ६। क्यूईनाइनके अपव्यवहारके कारण नाना प्रकारके कर्णनादमें एसिड नाइड्रिक ६ और चाइना २००। मस्तकमें रक्त संचय होनेसे उत्पन्न हुए कर्णनादमें बेलेडोना ६, और वमन भी कर्ण-नादके साथ हो तो भेराट्रम एल्बम ३। कलकी गाड़ीके शब्दकी भांति या हिम् हिम् शब्दवाले कर्णनादमें डिजि-टेलिस ६।

कानमें पीब (Otorrhœa).

हाम, ज्वर इत्यादि रोगके बाद और गण्डमालाग्रस्त लड़कोंके कानमें पीप (रीम) हो जाता है। यदि युवा पुरुषोंके कानमें पीप हो तो वह बधिरताका लक्षण है।

चिकित्सा।—दुर्गन्धित पीप अधिक निकले तो अरम-मेट ६। कानके पीछे या नीचे दर्द, सूजनके साथही दुर्गन्ध पीप निकले विशेष करके पारा खानेके दोषके कारणमें नाइट्रिक एसिड ६। कानको बहते बहुत दिन होगये हों और आराम न होता हो तो केल्केरिया-कार्ब्ब ६, ३०। कानमें लाल पानीकी तरह पतला तथा खटखटा दुर्गन्धित पीप निकले तो थाफाईटिस ६। गन्धशून्य कफ या पीप निकले तो पलसटिला ६, कानमें तेज दर्दके साथ पीप या रक्त मिला हुआ पीप निकलता जाये तो मार्क्सल। कानके बाहर सूजन हो और भीतरमें पतला घाव हो तो मार्कलिनिया ३०। पीप सूखकर बहिरापन आता जाता हो तो थोड़े दिन सल्फर ३० और फसफोरस ६ पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये।

बधिरता (Deafness.)

बधिरता (बहिरापन) तीन प्रकारका है, (१) स्नायविक क्रियाकी विषमताके कारण (२) दूसरी दूसरी बिमारियोंके कारण (३) मूक बधिरता अर्थात् जन्मबहिरा। पहिली दो बधिरता दवासे आराम होती है।

चिकित्सा।— मन पड़ दुखना और स्पष्टभाषा अनित बधिरतामें आंखोंमें ध्वनि और दूसरे दूसरे प्रकारके शब्द सुन

पड़े पर मनुष्यकी बातें न समझमें आवे तथा कानमें सदा एक प्रकारका शब्द मालूम हो इत्यादि लक्षणोंमें फसफोरस ३०। रक्त संचय हो जानेके कारण सिरका दर्द कानमें एक प्रकारका शब्द मालूम होनेके साथ बधिरतामें चिनिनाम-सलफ ३० क्रमका विचूर्ण। अपरिमित शुक्रक्षयके कारण सुननेकी शक्तिकी कमी हो तो एसिड-फस ६। सर्दीसे उत्पन्न हुई नयी बधिरतामें एकोनाइट ६, बेलेडोना ३ या पलसटिला ६ और पुरानी अवस्थामें मर्क्यूरियस ६। ज्वर या दूसरी बीमारीके बाद बधिरता हो तो बेलेडोना ६, पलसटिला ६। साइलीसिया ३०, चाइना ३, सलफर ३० और एसिड फस ६. कर्णगह्वरमें फोड़ा होकर वह स्थान बन्द होनेके कारण मनुष्य बहिरा हो जाता है ऐसी अवस्थामें सलफर ३०, हेपर-सलफर ६, आरम-मेट ६, कष्टिकम ६, और एसिड-फ्लुओ ६।

—०—

७ नाकके रोग।

नाकमें फोड़ा (Ozæna).

नाककी श्लैष्मिक झिल्लीमें फोड़ा होकर दुर्गन्धित पीप या क्लेद बहने लगता है। इस रोगसे धीरे धीरे नाककी अस्थि या उपास्थि ध्वंस प्राप्त होकर नासिकाका लोप हो सकता है। पाराके अपव्यवहारसे, उपदंशके कारणसे,

पुरानी सर्दी, चोट, पत्थर नाकमें प्रवेश कर जानेसे और पिता या माताके द्वारा दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।— नाक लाल, सूजी हुई तथा उसमें दर्द हो, नाकके रंध्रमें गरमी और दर्द मालूम हो, पीला पानीयुक्त या पीला स्राव, कभी कभी रक्तमिश्रित या कुछ सूखा हुआ पीप बहे तो औरम मेट ६। नयी सर्दीसे नाकमें ज़ख्म बहुत बहनेके कारण नाकका ऊपरी भाग लाल हो तथा उसमें दर्द होय, फिर नाकका निचला भाग बढ़ जानेके कारण सूंघनेकी शक्ति जाती रहे, उसमें पीप तथा रक्त मिला हुआ या मांसके धोवन की भांति दुर्गन्धमय स्राव हो इत्यादि लक्षणोंमें कैलि बाईक्रम ६। पाराके अपव्यवहारके कारणसे या उपदंश रोगके बाद या पिता माताके पास दोषसे पीनस रोग होने पर और उसमें स्राव अधिक और सूंघनेके समयमें दुर्गन्धित पीप या रक्तमिला हुआ पीप बहे तो एसिड नाइट्रिक ६। इसिनाय हाड़ गल जानेके साथ नाकमें दानोंकी तरह बहे या उसीके साथ छींक पर धरमन इत्यादि लक्षणोंमें, नाकके पुराने रोगमें ऑरम मेटालिकम ६, ३० देना चाहिये।

नाकसे रक्त बहना (Epistaxis).

यह रोग यदि साधारण दिखाई देवे तो दवा देनेकी कोई ज़रूरत नहीं है किन्तु यदि बारबार यह रोग उमड़ आवे तो

वा दोनों ज़रूरी हैं। एक औरके नाकके छिद्रसे सम्भ-
त: रक्त बहता है। कभी कभी यही रक्त नाककी राहसे
निकलकर स्वरनाली, गलकोष या आमाशयमें आजाता
है। माथेमें रक्त अधिक होनेके कारण और कड़ी चोट
लगनेके कारण तथा बहुत परिश्रम या खांसीसे इस रोगकी
उत्पत्ति होती है। ऋतु बन्द होकर या अर्शोबलिसे रक्त
बहना बन्द हो जाने पर नाकसे रक्त निकलने लगता है।

चिकित्सा।—फिरम आयड ३ चूर्ण, इसकी उत्तम
दवा है। बारबार जमा हुआ रक्त बहे तो हैमामेलिस ३x
भीतर प्रयोग और दो तीन बूंद हैमामेलिस ० नाकके भीतर
छोड़ देनेसे रक्तस्राव बन्द होजाता है। रजःस्रावके बदले या
अर्शोबलिका रक्तस्राव बन्द होनेके कारण नाकसे रक्त गिरने
पर पल्सेटिला ६, हैमामेलिस ३x, पडोफाइलम ६, वो सल-
फर ३०। मस्तकमें या नाकमें चोट लगनेसे नाकसे रक्त गिरता
हो तो आर्निका ३x। रह रह कर रक्त बहनेसे चाइना ६,
और कार्बोभेज ३०।

नासा Polypus.

श्लैष्मिक झिल्लीके उपादानसे नासिका गह्वरके भीतरमें
लहसुन या पियाजके तरह मूलन हो जाता है वह एक
या दोनों नाकमें होता है नासा होनेके पहिले प्राय

चिकित्सा।—क्षीण और विषम गति नाड़ी दुर्बलताके साथ हो सांसमें कष्ट और मृत्युभय, चेहरा मलिन आंखें धसी हुई इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६, ३०। जिन मनुष्योंके शरीरमें रक्त विशेष हो उनके हृत्शूलमें मांस रुक जानेपर एकोनाइट ३x, ३०। बारबार हृदस्पन्दन, मूर्छा, व्याकुलता और नाड़ी क्षीण हो तो एसिड हाइड्री ३। हृत्पिण्डका आक्षेप, ऐसा मालूम होना मानो लोहेके हाथमें हृत्पिण्डको किसीने पकड़ लिया हो तो कैकटस ३x, पाकस्थलीकी क्रिया बिगड़कर हृत्शूल उत्पन्न हो तो नक्स-भमिका ६, ३०।

हृद्स्पन्दन।

(Palpitation of the Heart).

अच्छे शरीरके हृत्पिण्डकी क्रिया समभाव ही रहती है। असमभाव होनेपर कोई रोग हुआ है, अनुमान करना चाहिये। स्नायविक दुर्बलता, रक्त प्रधान धातु अतिशय मानसिक चिन्ता, अपरिमित शारीरिक परिश्रम या व्यायाम, गुल्मवायु, रजस्रावकी विलक्षणता, अतिमैथुन, अपरिमित मादकद्रव्य सेवन, अन्नरोगकी कठिन पीड़ा इत्यादि कारणोंसे हृद्स्पन्दन रोगकी उत्पत्ति होती है।

चिकित्सा।—मुखमण्डल उत्तप्त और लाल, हाथ पैरकी अवशता, सांस तेज, सामान्य उत्तेजनासे हृत्कम्प,

हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप मालूम होना इत्यादि लक्षणोंमें एकोनाइट ६, हृत्पिण्डमें दर्दके कारण वक्षस्थलमें भी दर्द, चेहरा लाल. शिरमें दर्द, इत्यादि लक्षणोंमें वेलेडोना ३। हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी वन्द, हिलने या सोनेसे मालूम हो कि हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होगई है; अत्यन्त अस्थिरता बहुत परिश्रम और अतिशय मानसिक उत्तेजनाके कारण हृद्स्पन्दनमें डिजिटेलिस ३०। मनमें ऐसा होना कि हृत्पिण्डकी क्रियाको कोई हिला देता है या दवा देता है या वडे तेजसे उछालता है। सर्व्वदा हृत्पिण्ड धक् धक् करे, वाईं करवट सोने या घूमनेसे हृद्धि हो तो कैक्टस ३x, कभी कभी सांस वन्द होकर मूर्च्छा, क्षीण और दुर्वल नाड़ी, वाईं ओर दर्द वारवार ठंढी सांस लेना, हृत्पिण्डकी क्रिया कभी तेज कभी धीरे इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस ६। स्नायविक दुर्वलताके कारण हृत्पिण्डकी पीड़ा और उसके साथ ही वारवार मूत्र होना इत्यादि लक्षणोंमें लैकेसिस ६ वा ३०।

मूर्च्छा (Syncope).

स्नायविक दुर्वलताके कारण कोई कोई मनुष्य सम्पूर्ण-रूपसे या थोडा बहुत अज्ञान हो जाते हैं, इसको मूर्च्छा कहते हैं। अतिशय दुर्वलता, रस इत्यादि धातुके क्षयके कारण भय, मानसिक विकार हटात् हर्ष या शोकके कारण भी मूर्च्छा हो सकती है

चिकित्सा।—रोगीको मूर्च्छित होते ही कपुर या मृगनाभि (कस्तूरी) रोगीको नाकके पास रखना चाहिये। ५।६ मिनिटके बीचमें बारबार नाकके पास रखते ही बेहोशी जाती रहती है। रोगीको निगलनेकी सामर्थ रहने पर लक्षण विशेष देखकर निम्नलिखित औषध प्रयोग करनेसे रोगके फिर आक्रमण करनेका डर नहीं रहता और शीघ्रही आरोग्य होजाता है।

हठात् मानसिक विकार या भयजनित मूर्च्छा होने पर एकोनाइट ३x और ओपियम ३०। रोगी निश्चेष्ट भावसे पड़ा रहे तो नक्सभमिका ३० और आमन-कार्ब्ब ६, रस इत्यादि धातुक्षयसे उत्पन्न भई हुई पीडामें चायना ६, शारीरिक दुर्बलता और अस्थिरतामें आर्सेनिक ३०, सब शरीर ठंढा, हाथ पैरमें पसीनाके साथ दुर्बलता और मूर्च्छा हो तो भेराट्रम-भिर १x। वायु प्रधान दुर्बल मनुष्योंको नक्समस्केटा ३x, और हृत्पिण्डकी क्रियाके विकार जनित मूर्च्छा रोगमें डिजिटेलिस ६।

गलगण्ड (Goitre).

गलेके गांठकी वृद्धिको गलगण्ड कहते है। इसमें ज्वर या प्रदाह कोई उपसर्ग नहीं दिखाई देता पर गांठ अधिक बढ़ जानेके कारण ठीक गिलने या सांस लेने छोडनेमें कष्ट हो सकता है।

एकोनाइट ३। रोगकी पहिली अवस्थामें थोड़ा थोड़ा जाड़ा ज्वर, जंभाई, बदनमें दर्द, आंखोंमें जलन, आंखोंमें पानी भर आना सांस गर्म बारबार छींकें आना माथा भारी होना पतला, श्लेष बहना और अत्यन्त मलिनता।

ब्रायोनिया ३x, ६, ३०। श्वासनालीकी श्लैष्मिक झिल्लीमें जलन, कष्टकर खांसी खांसते खांसते थोड़ा कफ निकलना, कफमें नाकका छेद बन्द हो जाना, खांसनेके समय वक्षस्थलमें दर्द, आंखोंमें जल गिरना, पाकस्थलीकी क्रियाका बिगड़ना, वक्षके बगलमें सुई बेधनेकी तरह दर्द।

जेलसिमियम ३x। पीठमें जाड़ा मालूम होकर ज्वर, ज्वर आरम्भके पहिले माथा गर्म, प्यास, माथाभारी, चेहरा लाल, सजल चक्षु, नाड़ी पूर्ण और द्रुत, गलेमें दर्द, खांसी और स्वरभङ्ग।

आर्सेनिक एलबम ६, ३०। अधिक पतला उत्तप्त और जलनके साथ श्लेष्मास्राव, बार बार छींक आना आंखोंमें जल गिरना, अत्यन्त ग्लानि और तन्द्रा, नाक, आंख, स्वरनाली और कण्ठनालीकी असुस्थता।

पल्समेटिला ३, ६, ३०। नाकमें गाढ़ा दुर्गन्धयुक्त श्लेष्मा-स्राव, कान और माथेके बगलमें तेज दर्द, माथा भारी मालूम होना, किसी द्रव्यका स्वाद या सुगंध न आना, गर्म घरमें और सन्ध्याको रोगकी वृद्धि

लक्षण।—पहिले माथा धरना, फिर आलस्य, ज्वर, वक्षमें गर्मी, स्वरभङ्ग, श्वासकष्ट, सूखी खांसी, फिर फेनकी तरह गाढ़ा हरिद्रा वर्णका श्लेषा बहना जीभ मयली और पेशाब कम आना। दूसरी अवस्थामें—अतिशय श्वासकष्ट, गला घड़घड़ करना, ज्वर, बदनमें गर्मीका बढ़ना,—१०४ तक शीत, पसीना, चटचटा पसीना, दोनो गाल पीले या नीले, सूखी और रुखड़ी जीभ, पेशाब कम और हाथ पैर ठण्ढे। ४।५ दिनमें रोगका अच्छा हो जाना ठीक है नहीं तो धीरे धीरे रोग कठिन हो जाता है। बूढ़े मनुष्यों को यह रोग प्रायः पुराने आकारमें प्रगट होता है :—

चिकित्सा। ऐकोनाइट ३x। छाती और गलेके बीचमें कुटकुट करके कष्टकर खांसी और उसी कारणसे कपालमें और कनपटीमें दर्द।

ऐण्टिमटार्ट ६-३०।—खांसते खांसते श्वासरोध होनेका उपक्रम, थोड़ा थोड़ा कफ निकलना, सांय सांय शब्द, कमर पीठ और शिरमें दर्द, तथा हृद्स्पन्दन (हृद और लड़कों के वायुप्रदाहमें)।

बेलेडोना ६।—(एकोनाइटमें कोई लाभ न दिखाई दे तो) सूखी, और सूखी खांसी, ज्वर, शिरमें दर्द, आखें तथा चेहरा लाल।

ब्रायोनिया ६-३०।—गलेकी नाली और बड़ी बड़ी सांस·

नालीं आक्रान्त होकर बड़ा कष्टकर खांसी होती है। दमा और रक्तमिला हुआ ढेला थूकना, खांसते खांसते दर्दके कारण वक्षस्थलको पकड़ लेना।

कैलि-बाइक्रम ६, १२।—स्वरनाली और वक्षस्थल प्रदाह। छोटी छोटी स्वरनालियां आक्रान्त होकर कष्टकर खांसी, बहुत देर तक खांसते खांसते गांठकी तरह गाढ़ा या मैला कफ निकलना, पीली और मैली जीभ, भूख न लगना।

आर्सेनिक ऐल्बम ६-१२-३०।—वक्षस्थल जकड़ा मालूम होना, सोनेसे हांफनीकी तरह होना सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, खांसते खांसते पतला कफ निकलना (बूढ़े और दुबले मनुष्योंके पुराने वायुनाली प्रदाहमें)।

कार्बोवेज ६-१२-३०।—रोगकी पुरानी या चरमावस्थामें रोगीके हाथ और पैरोंका तलवा ठण्ढा होता हो और साथही बड़ी दुर्बलता हो, हाथ पैरके नख नीले हों, स्वरभङ्ग हो तथा तेज़ कफ हो।

एकोनाइट ३x और फसफोरस ६। (पर्यायक्रमसे)।—लड़कोंके ब्रङ्को-न्यूमोनिया रोगमें।

चाइना ६-१२-३०।—बहुत श्लेष्मा स्राव होकर रोगी कमजोर हो जाने पर देना।

साधारण नियम।—सोनेके समय माथेके नीचे मोटा तकिया देना चाहिये। समय समय वक्षस्थल पर तीसीकी

पुलटिस देनेसे लाभ होता है। रोगी यदि बहुत कमजोर हो जाय तो मांसका क्वाथ दिया जा सकता है। ओस या सर्दी न लगनी चाहिये।

हंफनी (दमा) (Asthma).

वक्षस्थलकी बिमारीके कारण जो सांसका कष्ट होता है, उसीको दमा नहीं कहते। फुसफुसके वायुवाले नल छोटी छोटी रगोंसे (पेशी) से ढके हुए हैं। इन्हीं पेशियोंके आक्षेपके कारण श्वासकष्ट उत्पन्न होता है और गला सांय सांय करता है, तथा इसको हफनी (दमा) कहते हैं। हंफनी प्राण लेने-वाला रोग नहीं है परन्तु बड़ाही दुःखदायी है।

इस रोगमें सांसका बड़ा कष्ट होता है, गला सांय सांय करता है वक्षस्थलपर दाब मालूम होता है, शय्यापर सोने या बैठनेमें कष्ट होता है। वायु पानेकी आशासे रोगी दोनो कंधे ऊंचे किये रहता है। अधिक करके पिछली रातको यह रोग अधिक सताता है, खांसते खांसते बड़े कष्टसे थोड़ासा कफ निकलनेपर हंफनी कुछ कम होती है, हंफनीमें सांसके खींचनेके समय किसी किसीका पेट फूलता है, माथा भारी मालूम होता है तथा वमनकी इच्छा आदि उपसर्ग दिखाई देते हैं, पिता माताको यह रोग रहना, रात्रिमें अधिक खाना, रक्त दूषित, वायुके साथ धूलके कणोंका या तेज

है। खांसी दो प्रकारकी होती है:—सरल और कठिन (तर और सूखी) यक्ष्मारोगमें, ज्वर और वक्षस्थलमें दर्दके साथ शरीर क्षय करनेवाली खांसी रहती है। इफनी रोगके साथ जो खांसी रहती है, वह रातको बढ़ जाती है और उसीके साथ श्वासका भी कष्ट वर्त्तमान रहता है। न्यूमोनिया रोगमें ईंटके चूर्णकी भांति वर्णविशिष्ट अल्प निष्ठीवनयुक्त खांसी रहती है। खूनकी खांसीमें रक्तके साथ खांसी और सूखी खांसीमें घन घन शब्द करके खांसी होती है। हामज्वरके साथ भी एक प्रकारकी सूखी खांसी देखी जाती है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x।—उत्कण्ठा, सांसमें पीड़ा, कब्जियत, चित् सोनेमें खांसीका शान्त रहना, करवट सोनेमें खांसीकी वृद्धि खांसनेके समय वक्षस्थलमें खोंचामारनेकी तरह दर्द, सूखी खांसी।

हिपिकाक ३x।—बारबार ढांक, कष्टकर श्वास प्रश्वास, आक्षेपिक और सांस बन्द करनेवाली खांसी, स्वरनालीमें सुरसुरी या घावके साथ सांय सांय शब्द या बहुत श्लेष्मा जम कर घड़ घड़ शब्द, खांसनेके समय नाभीमें दर्द, वमनकी इच्छा (मिचली) या वमन।

जेलसिमियम १। स्वरभंग या स्वरवद्धके साथ तेज खांसी और उसीके साथ कण्ठमें और वक्षमें दर्द, (प्रदाहकी पहिली अवस्थामें)।

वेलेडोना ३ ।—स्वरनाली और कण्ठनालीमें जलन ; पूर्ण और कठिन नाड़ी, उजली आंखें, चेहरा लाल, माथाभारी, मस्तिष्कमें रक्त अधिक, कभी खस्थ, कभी ठसके की खांसी, रातको वृद्धि, ठंडी हवामें आराम मालूम होना, वक्षस्थलमें दर्द, श्वास प्रश्वास मृदु ।

एसिड-नाइट्रिक ६, ३० । दुर्बलता, मानसिक अवसाद, माथाभारी, भूखकी कमी, पाकस्थलीमें दर्द, भोजनके बाद पेट भारी मालूम होना, रात्रिमें शरीरके गर्मी की वृद्धि, प्यास, पसीना, नींद न आना, वक्षकी हड्डीके नीचे दर्द (पुरानी खांसी)।

एण्टिमटार्ट ६, ३० । स्वरभंगयुक्त सूखी खांसी, गला घड़ घड़ करके पतला कफ कष्टसे निकलना, भोजन करनेके समय खांसते खांसते खाया हुआ पदार्थ वमन, खांसनेके समय जंभाई आना ।

ब्रायोनिया ६, १२, ३० ।—खांसनेके समय मस्तक, वक्षस्थल और बगलमें खींचनेकी भांति या सूई वेधनेकी तरह दर्द ; वक्षस्थलमें दर्द, खांसनेके समय सब अंगोंका कांपना, सुबहको, सन्ध्याके समय और ठंडी हवामें खांसीकी वृद्धि, सूखी खांसी ।

ड्रसेरा ३ ।—रातके समय खांसीकी वृद्धि और जम्हाई, वमन और टकार, कभी कभी रक्तमिश्रित श्लेष्मा निकलना, रह रह कर खांसीका वेग, सोनेसे खांसी बढ़ती है इससे रोगीको उठकर बैठना पड़ता है ।

आर्निका ६। घणस्थायी ठसके की खांसी, खांसते खांसते सब शरीरका कांप उठना, कफके साथ रक्त निकलना, वक्षके बगलमें सूई वेधनेकी भांति दर्द।

आर्सेनिक ऐल्वम ६, १२, ३०।—श्वास खांसीकी भांति सांस बन्द करनेवाली खांसी, वक्षस्थलका आकुञ्चन, वेचैनी, प्यास।

कष्टिकम ६, ३०।—सूखी खांसी, खांसते खांसते आपही आप पेशाब निकल जाना, स्वरभंग, रातके समय शय्याकी गर्मीसे खांसीकी हृद्धि, शीतल जल पीनेसे खांसीका बन्द होना, खांसते खांसते गले तक श्लेष्माका आजाना पर रोगीको थूकनेकी शक्तिका न रहना।

केनोयाम ३-३०।—गला खुस खुस करके सूखी खांसी, सोने, बैठने या हंसनेसे खांसीकी हृद्धि तथा रातको खांसीका बढ़ना, दिनको कम होना।

हिपर-सलफर ६।—पुराने अग्निमान्द्यके साथ खांसी, गलेमें जलन और स्वरभङ्गके साथ कड़ा गठीला श्लेष्मा निकलना। सर्दी लगनेसे खांसीकी हृद्धि, गलेमें कोई चीज अटकनेकी तरह मालूम होना और उसी कारणसे थूक गिलनेमें कष्ट।

हायोसायेमस ६।—स्नायविक आक्षेपजनित सूखी खांसी, रात्रि और सोनेसे खांसीकी हृद्धि तथा उठ बैठनेसे खांसीका कम हो जाना।

श्लेष्मा निकलना, रातको और सोनेसे सूखी खांसी। बाहरकी वायुसे खांसीकी वृद्धि।

१०। परिपाकयन्त्रकी क्रिया।

मुखगह्वरका प्रदाह (Stomatitis).

इस रोगमें मुखावरक झिल्ली लाल रंगकी हो जाती है, सूजन और वेदनायुक्त या क्षत होकर कभी कभी पीप निकलने लगता है। सांस लेने तथा छोड़नेमें दुर्गन्ध आती है, जीभ लाल और सूजी हुई, मसूड़ा, और तालू भी सूज जाता है।

पाकाशयकी क्रियाकी विचक्षणताके कारण, हाम या स्फोटक ज्वरके बाद अथवा मुंहमें गर्म चीज़ प्रवेश करनेसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—पारा खानेके कारण यह रोग होनेसे नाइट्रिक-एसिड ६, तथा दूसरे कारणसे होने पर मार्कसल ६।

दन्तशूल (Tooth-ache).

एकाएक ऋतु परिवर्त्तन, अजीर्ण, गर्भावस्थाकी स्नायवीय पीड़ाकी उत्तेजना और वायुकी पीड़ा इत्यादि कारणोंसे दन्तशूल (दांतोंमें दर्द) उत्पन्न होता है।

लाभदायक होता है। दन्तमूलमें दर्द, तथा रक्तस्राव, मुंह सूखा रहे पर प्यास मालूम न हो, चबानेके समय दर्द इत्यादि लक्षणोंमें कार्ब्बोभेज १२। कृमिजनित दांतकी दर्द, गर्भावस्थाकी दांतकी दर्दमें और दूसरी दूसरी तरहकी दर्दमें मर्क्युरियस ६। चेहरेके चारो तरफ नोचने या खोंचा बेधने की भांति दर्द कानतक दर्द बढ़ी हुई, बहुत लार बहना रातमें दर्दका बढ़ना इत्यादि लक्षणोंमें मर्क्युरियस ३x, क्रमका विचूर्ण सेवन कराना चाहिये। बहती हुई हवा दांतमें लगते ही दर्दका बढ़ना, दांतका बड़ा मालूम होना, बाईं ओर अधिक दर्द, आहारके समय दांत ठंढे मालूम पड़ने इत्यादि लक्षणोंमें मलफर ६। पारा सेवनसे उत्पन्न भये हुए दन्तशूलमें—बहुत लार गिरे साथही मसूड़ेसे रक्त बहे तो नाइट्रिक एसिड ६, अयग्रास दांतोंमें तेज दर्द उसके साथही दूसरे दूसरे दांतोंमें भी दर्द, ठंढा पानी लगनेसे दर्दका बढ़ना इत्यादि लक्षणोंमें स्पाइजिलिया ३। बरफ या ठंढा पानी लगनेसे दर्दकी शांति हो तो कफिया ३x। दांत काले या उन पर काली रेखा दिखाई दे और विक्षत हो, दन्तमूलमें नासूर या शोथ हो, ऋतुकालीन दन्तशूल, आक्रान्त दांतोंमें चिबाने या अलग करनेकी भांति दर्द हो, विद्ध करणा वत् वेदना कानतक मालूम हो। शंखदेशमें दप् दप् करके

दर्द हो, दांतोंकी जड़ सूजी या सफेद रंगकी हो, ठंडा द्रव्य पीने या खानेसे वृद्धि हो तो ट्रैफिस्यापिया ३०।

साधारण नियम।—दांत सदैव निरापद रहे इस लिये भांति भांतिके दांतोंके मञ्जन तमाकू या चुरुट बहुतेरे लोग व्यवहार करते हैं, परन्तु उनसे लाभ तो कम होता है पर हानिही अधिक दिखाई देती है। सफेद मिट्टी तम्बूलके साथ मिलाकर दांत धोनेसे लाभ होता है, दांत हिलनेसे उखाड़ गलनाही अच्छा है।

जीभका घाव (Ulcer on the tongue).

कभी कभी जीभपर छोटे छोटे दाने दिखाई देते हैं जिससे भोजन करनेमें कष्ट होता है। मर्क्यूरियस-बिन-आयडैटस विचूर्ण ३ इस रोगकी दवा है। परन्तु यदि रोगीको पारेका दोष हो तो एसिड नाईट्रिक ६, देना चाहिये।

गलक्षत (Sore-throat).

सर्दीके कारण गलेमें दर्द होना, जोरसे बात करनी, गाना, वक्तृता देना, स्वरभंग अवस्थामें चिल्लाना, उपदंशका फोड़ा इत्यादि कई कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है पहिले मुखगह्वरमें प्रदाह, घंटीका बढ़ना और तालमूल सूज जाता

है। फिर गलेकी श्लैष्मिक झिल्लीमें फोड़ा होकर रोगीको गलेमें सुरसुरी मालूम होती है बारबार कफ निकालनेकी चेष्टा करता है, कोई चीज़ निगल नहीं सकता और सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट होता है।

चिकित्सा।—गलेकी नई दर्दमें अतिशय उत्ताप, निगलनेमें दर्द, गला लाल, आंखें उजली चेहरा लाल सिरमें दर्द इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो बेलेडोना ३x, और एकोनाइट ३x (पर्यायक्रमसे)। गलेमें सामान्य दर्द और सूजन कुछ नीला रंग लिये हुए लाल फोड़ा, श्वास-प्रश्वासमें दुर्गन्ध इत्यादि लक्षणोंमें मार्कसल ६। नींदसे जागनेके समय गला सूख जाये, थूक निगलनेके समय गलेमें कोई गोल चीज अटकती मालूम हो, गलेके भीतर देखनेसे लाल या बैंगनी रंग दिखाई दें, गलेके बाहर थोड़ी सूजन हो तो लेकेसिस ६। थूक निगलनेमें गलेमें दर्द, तालुप्रदाह, फोड़ेमें पीप निकले तो (पुरानी अवस्थामें) बैराइटा-कार्ब्ब ६। कभी कभी आर्मेनिक ६, फाइटोलैका ३, डालकेमारा ६, प्रयोग करना चाहिये।

पाकाशय प्रदाह (Gastritis).

नये पाकस्थली प्रदाहमें—चापनेसे अन्नके साथ बढ़नेवाली पेटकी दर्द, ठंडा पानी पीनेकी इच्छा (पर पेटमें न रहे) सभी

समय पाकस्थली पूर्ण मालूम हो ; मुंह बेस्वाद हो, सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, जीभ सादी या पीले रंगकी, अवसन्नता इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। पुराने पाकस्थली प्रदाहमें— पाकाशयमें जलन, अम्ल या श्लेष्मा वमन, जीभका मध्यभाग लेपयुक्त परन्तु अगला भाग लाल, वक्षस्थलमें प्रदाह, पेट फूलना, प्यास, हाथ पैरमें जलन, कोष्ठबद्ध, पेशाब लाल और थोड़ा इत्यादि लक्षण वर्त्तमान रहते हैं। प्लीहा यकृत् या मूत्र-यन्त्रकी पीड़ाके कारण भी पाकाशयमें प्रदाह हो सकता है। बहुत पीना या खाना, अग्निमान्द्य, या विषैले पदार्थ पेटमें जानेसे यह रोग होता है।

चिकित्सा।—नये और पुराने पाकस्थली प्रदाहमें अत्यन्त ज्वाला, पिपासा और नाड़ी द्रुत रहनेसे आर्सेनिक ६। जिह्वा क्लेदयुक्त; वमन और भोजन किये हुए पदार्थका डेकार निकले तो एण्टिम-क्रूड ६। पाकाशयके फुलनेके कारण हरवक्त बेचैनीमें मार्क-कर ६। पानीको छोड़कर और सभी चीजें तीती मालूम हो ; प्यास, पाकाशयमें दर्द, शीत रहे तो एकोनाइट ३। पाकाशयमें दबानेसे तेज दर्द, मुंहका स्वाद तीता, वमनेच्छा या वमन इत्यादि लक्षणोंमें पलसेटिला ६। मार्क्यूरियस मल ३०, ब्रायोनिया ३०, हाइड्रेष्टिस ६, नक्स-भमिका ३०, सलफर ३० पुराने रोगमें लक्षणके अनुसार आवश्यक होते हैं। पाकस्थलीमें घाव होने पर आर्सेनिक ३०, कालिबाइकम ६, क्रियोजोट १२, हाइड्रेष्टिस ६।

रक्तवमन या रक्तपित्त (Hæmatemesis).

धूपमें घूमना, अधिक व्यायाम, अतिशय शोक, अति मैथुन, क्षार, लवण, अम्ल और कटु द्रव्य तथा मरिचादि तेज चीज भोजन इत्यादि कारणोंसे पित्त बिगड़कर रक्त दूषित हो जाता है। वही पित्तसे बिगड़ा हुआ रक्त, आंख, कान, नाक तथा मुखगह्वररूप ऊर्द्धमार्गमें या लिङ्ग, योनि, और गुह्यद्वार अधोमार्गमें अथवा दोनो मार्गोंमें निकलता है। साधारणतः वमनके साथ मुंहसेही रक्त गिरता है, रक्तवमनके पहिले पाकस्थलीमें दर्द और भार मालूम होना, अजीर्ण, वमनेच्छा, मुंहका नमकीन स्वाद, नाड़ी दुर्बल, दीर्घ निश्वास; अवसन्नता, माथा झिम् झिम् करना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। वमन द्वारा पाकस्थलीसे जो रक्तस्राव * होता है उसका परिमाण या वर्ण सब समय पर समान नहीं रहता है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x। रक्त प्रधान मनुष्योंका मुंह लाल, पूर्ण नाड़ी, कलेजा धड़ धड़ करना, व्याकुलता, ज्वर, एकाएक पाकाशयमें दर्द होकर रक्तवमन।

---

* फुसफुससे रक्तस्राव और पाकस्थलीसे रक्तस्रावका प्रभेद—वमनका रक्त थोड़ा काला, फेनशून्य, भुक्तद्रव्य या मलके साथ निकलता है और वमनके पहिले आमाशयमें दर्द और वमनके पहिले वमनेच्छा रहती है। फुसफुससे रक्त निकलने पर रक्त लालवर्ण, फेनयुक्त, श्लेष्मा मिश्रित अन्नके साथ रक्त नहीं रहता है और रक्त निकलनेके पहिले श्वासकष्ट और छातीमें दर्द होती है।

मिलिफोलियम १x।—बिना कष्टके लालवर्णका रक्त वमन।

इपिकाक ६।—वमनेच्छा या वमनके साथ लाल रंगका रक्त निकलना, थोड़ी देर ठहरनेवाली बार बार खांसी, मुंहका लवणस्वाद, जीभ स्वच्छ।

हैमामेलिस १।—द्रुत, कम्पमान और शीतल नाड़ी, काले रंगका रक्तस्राव, पेटमें गड़ गड़ कल कल शब्द, बिना कष्टके रक्तस्राव दुर्बलता।

आर्निका-मण्टेना ३।—थक्का थक्का रक्त वमन, भोजन और पीनेसे हृद्धि और बहुत परिश्रम या आघातजनित रक्तस्रावमें।

आर्सेनिक ६, ३०।—सांस लेने तथा छोड़नेमें कष्ट, चेहरा मलिन, हृद्स्पन्दन, बदनमें दाह; न हटनेवाली प्यास, नाड़ी क्षुद्र और चंचल।

चायना ६, ३०।—अधिक रक्त वमन होकर रोगी दुर्बल हो जाने तथा हाथ पैर ठण्डे और नाड़ी क्षीण हो जाने पर।

नियम।—रक्त वमन बन्द न होने तक साबू, बार्ली आरारोट, थोड़ा दूध ठण्डा करके पिलाना चाहिये और पाकस्थलीके ऊपर ठण्डे जलकी पट्टी देनी चाहिये।

अजीर्ण या अग्निमान्द्य (Dyspepsia).

परिपाक क्रियाकी विलक्षणताको अजीर्ण या अग्निमान्द्य कहते हैं, भूख मन्द, पेटका फूलना, कब्जियत या उदरामय, डेकार आना, वमनोद्वेग (मिचली) कलेजेमें जलन, पेट भारी मालूम होना, मुखमें जल भर आना, भोजनके बाद पेटमें दर्द, सांसमें दुर्गन्ध, कलेजा धड़ धड़ करना, माथा दूखना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

कारण।—अधिक तेल या घी की बनी चीजोंका भोजन, भोजनके पदार्थ अच्छी प्रकारसे न चिबाकर जल्दी पेटमें डाल देना बहुत दिनोंतक भांति भांतिकी दवा खाना मद्यपानादि अत्याचार, अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक परिश्रम या परिश्रमका एकदम त्याग।

चिकित्सा।—अजीर्णमिश्चर ९, १०। भोजनके बाद पाकस्थलीमें भार और दर्द मालूम पड़ना, कलेजेमें जलन, पेट फूलना, खट्टी डेकार, बारबार भोजन किया हुआ सा दिल मचल, मुखका खट्टा और कड़वा स्वाद, भोजनके बाद तन्द्राविष्ट और अवसाद, पुस्तकों फिर घूमना, बारबार हरा मल प्रवृत्ति, पेटका कुछ दोषका विशेष कारण मद्यपानादि अनिष्ट कर्मोंसे होनेसे

[illegible] १ कलेजेमें जलन वमनेच्छा, [illegible]

साधारण नियम।—किसी विषैले पदार्थके पेटमें जानेके कारण वमन होनेसे जिस तरह वह विष जलदी निकल जाय, वही उपाय करना चाहिये। पाकस्थली या किसी दूसरे यन्त्रकी उत्तेजनाके कारण वमन होनेसे गर्म पानी पिलानेसे ही अच्छा फल होता है। छोटे छोटे बरफके टुकड़े चूसनेको देनेसे भी फायदा होता है। कभी कभी पाकस्थलीको आराम देने या सामान्य आहार करनेसे वमन रुक जाता है। अग्निमान्द्यके वमनमें कच्चे नारियलका पानी उपकारी है।

पाकाशयमें दर्द।
(Pains in the Stomach).

भोजनके बाद, पाकस्थलीमें नखसे नोचनेकी भांति दर्द, भोजनका पदार्थ पेटमें पड़ते ही दर्दका बढ़ना, अम्ल या तीता स्वाद लिये ढेकार, कै होकर भोजन किया हुआ पदार्थ निकल जानेसे दर्दकी कमी इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा।—नक्सभमिका ६, ३०। भोजनके बाद पाकस्थलीमें दर्द और उसके साथही अवसन्नता; थोड़ा भोजन करने पर भी दर्द मालूम होना, पेटके ऊपर और कोखिमें दर्द, खाचिपके साथ वमन या वमन करनेकी इच्छा, माथा भारी, कोष्ठबद्ध, पेटका फूलना।

चिकित्सा।—ज्वर और प्रदाह कम करनेके लिये एकोनाइट ३x। ज्वर, प्रदाह, शीत, चेहरा लाल, सिरमें दर्द तथा पतला दस्त इत्यादि लक्षणोंमें बेलाडोना ६। नाभिके चारों तरफ जलनके लिये तीव्र वेदना, बड़ी दुर्बलता और सुस्ती। तेज प्यास, परन्तु थोड़ा ही पानी पीने पर कुछ देरके लिये तृप्ति इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६। बहुत कूथने पर रक्त मिला हुआ ऑंवा दस्त होने पर मार्ककर ६। मरलान्त्रमें दर्दके साथ बारबार दस्त, पेट फूलकर ढोलकी तरह शब्द, नाभिके चारों तरफ खींचनकी तरह दर्द, सब पेटमें दर्द और मिचली इत्यादि लक्षणोंमें कलोसिन्थ ६। छोटी२ अंतड़ियोंमें प्रदाहके साथ बहुत तरहका मल कई प्रकारका उदरामय, सुषुम्नाकी दर्दका बढ़ना, सब शरीर पीला और पेट फूलना इत्यादि लक्षणोंमें पडोफाइलम ६।

साधारण नियम।—गर्म जलका सेंक। तेज दर्दकी हालतमें साबू, बार्ली, आरारोट इत्यादि लघु पथ्य।

शूल की दर्द (Colic).

शूल कई प्रकारका है, उसमें बड़े अन्तकी या अन्त्रकी पशियोंके आक्षेपके कारणसे उत्पन्न हुई दर्दको अन्त्र-शूल कहते हैं। शूल वेदना बड़ीही कष्टदायक है। इस रोगमें ज्वर नहीं रहता। दर्द और कै (मिचली) रहे तो

कैमोमिला १२।—नाभिके चारों ओर मोच फेकनेकी भांति दर्द, उदरामय, पेट फूलना, रातको और गर्मीमें वृद्धि।

आइरिस् भार्स ३।—पेट बहुत फूलना, पेटके ऊपरी भागमें ज्वाला, पित्तवमन, ऐंठनेकी तरह दर्द।

डायस्कोरिया १४।—पहिले नाभिके मध्यस्थलसे दर्द आरम्भ होकर धीरे धीरे समूचे पेटमें फैल जाय, इस दर्दके साथ पेट फूलना, मैलाइल जीभ, सोने पर दर्दका बढ़ना, सीधे खड़े होने पर और पीछे झुकने पर दर्द कम होना, भोजन किया हुआ पदार्थ वमनके साथ निकलने साथ एकाएक शूल वेदना और गर्भावस्थाके पित्त जनित शूलमें।

मेगट्स फस्म् ६।—रातको और भोजनके बाद पेट फूल कर दर्द। पेटमें गड़गड़ कल्कल् शब्द, समूचे पेडूमें दर्द। मुंहमें जल गिरना, मुंह और हाथ पैर ठण्डे।

स्त्रियोंकी गर्भावस्थामें पेट फूलनेके साथ शूल वेदनामें कलूफाइलम ६, भारी पदार्थ खानेके बादकी शूल वेदनामें पल-सटिला ६ और कमोमिला ६ (पर्य्यायक्रमसे)। इसके साथ कोष्ठबद्ध और पेटका फूलना रहने पर पलसटिला ६ और लाइकोपडियम ३०।

पथ्यापथ्य।—लघु पथ्य, अर्थात् साबू, वार्लि और गर्म दूध। दर्द आराम होने पर पुराने चावलका भात, छोटी मछलियोंका शोरबा, परवल, सेम, केलेका फूल और मानकचु।

कोष्ठवद्ध (Constipation).

कई कारणोंसे कोष्ठबद्ध (क़ब्जियत) हो जाता है और यह अनेक रोगोंका लक्षण भी माना जाता है। किसी तरहका शारीरिक परिश्रम न करके घरमें बैठे रहना, रातको जागरण, तेज काफी, चा और मादकद्रव्य सेवन करनेसे, शोक दुःख या भय पानेसे, गिर पड़नेसे, यक्कत रोगसे, अहितकर द्रव्य भोजन इत्यादि कई कारणोंसे कोष्ठवद्ध हो सकता हैं। कोष्ठवद्ध होनेसे प्रायः शिरमें दर्द, ज्वरभाव, (हरारत) अरुचि अस्वच्छन्दता इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। कोष्ठवद्ध अधिक दिनों तक रहनेके कारण अर्श और गठिया वात हो जाता है।

चिकित्सा।—बारबार मलत्यागकी इच्छा पर पेट साफ न होना, वड़ा लेंड़ वड़े कष्टसे निकलना, सामान्य पतला मल, माथा भारी, पेडूमें चाप मालूम होना और अरुचि लक्षणमें नक्सभमिका ३०। थोड़ा२ जाड़ा मालूम होना, शिरमें दर्द, यक्कत्में दर्द, मूर्छा, बड़ा तथा कड़ा लेंड़, वायुके कारण कोष्ठवद्ध, गर्भावस्था और गर्मोके समयका कोष्ठवद्ध और लड़कोंके कोष्ठवद्धमें ब्रायोनिया ६, ३०। (नक्सभमिका और ब्रायोनिया अलग इस लिये हैं कि बारबार मल प्रवृत्तिके साथ कोष्ठवद्धमें नक्सभमिका और मल प्रवृत्ति विहीन कोष्ठवद्धमें ब्रायोनिया लाभदायक होता है साथाभारी माथा घूमना कठिन लेंड्युक्त मल निकलना, मटा तन्द्राविश, चेहरा लाल, मब परि

आनेसे (विशेष करके माता छापनेके बाद या स्त्रियोंके पपेण्डि-कस प्रदाहमें) लैकेसिसकी अपेक्षा एपिस ३० लाभदायक है। पर यदि लैकेसिस या एपिस प्रयोगसे लाभ न हो तो धार्टेरिस ३० देना चाहिये। मृत्युभय, उत्कण्ठा, जीभ लाल, तेज प्यास पर थोड़ा पानी पीनेहीसे प्यासका बन्द होना, बिछावन पर छटपटाना, बड़ी सुस्ती इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ३०। शय्यापर हिलने डोलनेसे दर्दका बढ़ना, लक्षण में ब्रायोनिया ३०। पर हिलने डोलनेसे दर्द बन्द होनेपर रासटक्स ३० देना चाहिये।

आनुषङ्गिक चिकित्सा।—खूब गर्म जल बोतलमें भरकर उसका सेक, रोगकी तरुण अवस्थामें बार्लीका पानी देना चाहिये, फिर खूब पतला शोरवा और अलग दूधके साथ जल मिलाकर पीनेको देना चाहिये। एलोपैथिक डाक्टर इस रोगको जितना भयङ्कर समझते हैं होमियोपैथिकवाले उतना नहीं मानते।

उदरामय Diarrhœa

किसी व्यक्ति यदि बार बार पतला दस्त हो तो उसको उदरामय कहते हैं। साधारणतः उदरामय चार प्रकारका होता है। भारी दुष्पाच्य भोजन, घर्माक्त जल पान दुर्गन्धयुक्त दूषित इत्यादि पेटमें कारण उत्पन्न होकर उदरा

मय। (२) परिपाक कार्य्यके व्याघातके कारण अजीर्ण द्रव्य निकलनेवाला उदरामय। (३) गर्म शरीरमें ठण्डा जल या बरफ इत्यादि पीना या ठण्डी हवा लगकर एकाएक पसीना बन्द होनेके कारण प्रदाहजनित उदरामय। (४) गर्मीके दिनोंका उदरामय। उदरामय और सामान्य हैजेका प्रभेद "हैजा" के प्रबन्धमें लिखा हुआ है, उदरामयमें पेट ऐंठना और कूंथना नहीं रहता, परन्तु आमाशयमें ये दोनों लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा।—कैम्फर।—शीत, कंपकंपी, पाकस्थलीमें दर्द, हाथ, पैर और मुंह ठण्डे, गर्मीके दिनोंके उदरामयमें और सर्दीके कारण उत्पन्न भये हुए उदरामयमें।

पल्सेटिला ६, १२।—परिवर्त्तनशील मल, मुंहका स्वाद तीता, मिचली या वमन, डकार आना, गुरुपाकजनित उदरामयमें।

एण्टिमक्रूड।—मोटी कैदयुक्त जीभ, डकार, वमनेच्छा, अरुचि, पानीकी तरह पतला दस्त, पित्त मिला हुआ दस्त।

इपिकाक ६।—वमन या वमनेच्छा, दुर्गन्धित मल, रक्त मिला हुआ दस्त, पेटमें दर्दके साथ गर्मीके समयका उदरामय, लड़कोंका पीले रंगका या दाना मिला हुआ मल, रंगका दस्त।

नक्सवमिका ६, ३०।—अति भोजन, रातमें जागरण और शराब पीना इत्यादि अत्याचारके कारणसे उत्पन्न भये हुए उदरामयमें

दर्दकी शान्ति, फिर पहिलेकी तरह दर्द, पहिले पानीकी तरह फिर पित्त मिला हुआ और कभी कभी रक्तमिश्रित दस्त।

फेरमफस ३०।—बहुत दिनोंतक उदरामय भोगकर रोगी बिलकुल कमजोर हो जाये और बहुत खानेपर अजीर्ण मल निकले।

सल्फर १२ या ३०।—पीला या मटमैले रंगका आमाशय, वेदना रहित मलस्राव, अजीर्ण मल, मुखकी रंगका बदलना, पुराने अतिसारमें (पुराने उदरामयमें) गुह्य-द्वारमें घाव होनेपर।

भारी मांस भोजनके कारण उत्पन्न भये हुए उदरामयमें पल्सटिला ६, नक्सभमिका ३०, एसिडम-म्यूर ६, कार्बोवेज ६, दूषित अन्न पान और अपवित्र वायु सेवनके कारणसे उदरामयमें बैप्टीसिया १x और आर्सेनिक ६। ओस, ठण्डा या सर्दी लगकर उदरामय होनेपर कैम्फर, एकोनाइट १x, आर्सेनिक ६ और डल्कामारा ६। अतिरिक्त मद्य और फल सेवन जनित उदरामयमें कार्बोवेज ६ और आर्सेनिक ६, गर्मीके दिनोंके उदरामयमें [illegible] ६, वेराट्रम ६, पाडफिलम ६, और आर्सेनिक ६। मानसिक कारणसे उत्पन्न हुए उदरामयमें इग्नेशिया ६, कैमोमिला ६, वेराट्रम ६।

नियम। जब तक दस्त न बंद हो तब तक रोगीको [illegible]

बहुत कूथनेके साथ बारबार मलत्यागकी इच्छा, मलत्यागके पहिले और पीछे पेटमें तेज दर्द, मूत्राशयमें जलनके साथ बड़ा कष्ट और पेशाब थोड़ा (कभी पेशाब बिलकुल ही नहीं होता) रोगी निस्तेज। रक्त जितना अधिक होगा इससे उतनाही लाभ होगा, रक्तका भाग कम होकर श्लेष्माका भाग अधिक होनेसे मार्कमल ६। मलत्यागके बाद फिर भी बैठे रहनेकी इच्छा बनी ही रहे और साथही बहुत कूंथनेके लक्षणमें मार्कका।

नक्सभमिका ३०।—मलत्यागके पहिले और समयपर अत्यन्त कूथना पड़े पर मलत्यागके बाद भी इच्छा रहे तथा कूथना और दर्द बन्द हो।

बेलेडोना ६।—पेट फूलना, बहुत कूथने पर थोड़ा मल, मलान्त्रमें प्रदाह, ऐसा मालूम हो कि मूत्राशय और मलान्त्र नीचेको झुका आता है, ज्वर, आंख उजली, चेहरा लाल और प्रलाप मलत्यागके बाद अधिक कूंथनेकी इच्छा।

कलोसिन्थ ३ या ६।—पेट फूलना पेट कसकर पकड़ना या मोड़ना, चांपकर धरने या झुकनेसे दर्दका कम होना, मांदी श्लेदावृतादिस जिह्वा, रक्तमय पिच्छिल आंव और सिफलन वमनेच्छा

एलो ६।—मलिन उत्तम रक्तस्राव, अतिशय कूथना, कमरमें दर्द, उरू भारी, माथेके चारों तरफ कतरनेकी भांति

दर्द, मुह सूखना, प्यास, पेडु फूला, कभी कभी मलत्यागके समय मूर्च्छा।

कैलकेरिया ६, ३०।—मल मञ्ज, या मादा पीला, माथेपर पसीना, पैरका तलवा बरफके तरह ठंढा तथा पिंडलियोंमें खिंचन मलद्वारमें दर्द।

इपिकाक ३, ६।—घासकी तरह हरा अथवा चोटा गुड़की तरह काला फेनयुक्त मल, पेटमें दर्द तथा कूंथने पर पहिले फेन मिला हुआ दुर्गन्धित रक्तमल, फिर रक्तमय श्लेष्मास्राव, अविरत वमन या वमनेच्छा अतिशय ग्लानि।

कल्चिकम ६। बहुत कूंथने पर खंड खंड रक्त मिला श्लेष्मास्राव, गुह्यद्वार तुड़ तुड़ कर हिले और बहुत दर्द हो, पेट फूले।

रसटक्स ६। रातको आपही मल निकल जावे, पेटमें कतरनेकी तरह दर्द, अविरत मल प्रवृत्ति। पुराने रक्तामाशयमें (विशेष करके विकार लक्षण रहनेपर) रसटक्स ३० एक महौषध है।

सलफर ६, ३०।—मलत्यागके बाद कूंथनेसे रक्त लाना, तथा रक्तमय आंव न निकलकर आंवके ऊपर सूतकी भांति रक्त दिखाई दे, रोग दुःसाध्य होने तथा दूसरी कोई दवासे फायदा न होने पर सलफर ३० देना चाहिये।

पथ्य।—इस रोगमें रोगी बहुत कमजोर हो जाता है इस लिये हल्का और बलकारक द्रव्य खिलाना चाहिये।

आरारोट, सींगी या मागूर मछलीका शोरवा, सागू, बेदानाका थोड़ा रस या दूध और ज्वर न रहे तो भातका माड़ दिया जा सकता है।

अर्श (Piles).

इस रोगमें मलद्वारकी शिरायें फूल और बढ़ जाती हैं। यहाँ बढ़ी हुई शिराओंको "वलि या मसा" कहते हैं, यह देखनेमें मटरकी भांति होता है। मसा कभी एक ही देखा जाता है। मसा यदि मलद्वारके बाहर हो तो उसे वहिर्वलि और भीतर रहनेसे अन्तर्वलि कहते हैं। यही मसे फटकर रक्त निकलता है। एक प्रकारका मसा और होता है, उसमें रक्त नहीं बहता, उसे अन्धवलि कहते हैं। मलद्वारके पास सुरसुराहट, जलन, कांटा बिंधनेकी भांति दर्द, कब्जियत, बार बार मलत्यागकी इच्छा इत्यादि इस रोगके लक्षण हैं। बार बार जुलाब लेना; उत्तेजक पदार्थ भोजन अथवा पान, मद्यपान, रात्रिमें जागरण, घृत और मसाला इत्यादि इन्होंसे बना हुआ भोजन या बिना परिश्रमके बैठे बैठे दिन काटना, टट्टा दस्त, मोटा काम, या बहुत नर्म वस्तुपर बैठनेके कारणसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—नक्सवमिका ६, ३०।—कभी कभी उदरामय, मलत्यागके समय मसाका बाहर निकल आना,

टियूक्रियम १x।—गुह्यद्वारमें अतिशय प्रदाह, स्नायवीय उत्तेजनाके कारण माथा घूमना और नींदका न आना (सूतकी भांति क्रिमिमें टियूक्रियम उपकारी है।)

सएटोनाइन १x विचूर्ण।—सब प्रकारकी क्रिमिमें यह उपकारी है। पेटमें दर्दके लक्षणमें।

सलफर ३०।—क्रिमिजनित शूल वेदनामें या अन्य औषध प्रयोग करने पर जब रोग कुछ कमता चले।

फीताकी भांति क्रिमिमें—फिलिक्समास 0, मार्क-कर ३x, टैनास २ क्रमका विचूर्ण, फीताकी भांति लम्बी क्रिमि और केंचुएकी भांति क्रिमि नष्ट करता है। डाक्टर हिउज और टेस्ट कहते हैं कि लाइकोपोडियम ३० दो दिन, मेराइम १२, चार दिन और इपिकाक ६, सात दिन प्रयोग करनेसे क्रिमि नष्ट होजाती है, क्रिमि धातु विशिष्ट शिशुके लिये कैल्केरिया ३०।

नियम।—एक बोतल जलमें थोड़ा नमक मिलाकर नित्य ३।४ बार मलद्वारमें पिचकारी देनेसे लाभ होता है। बालकोंको लघुपथ्य देना चाहिये। मीठा पदार्थ कच्चा फल मूल, अपरिष्कार जल, सड़ी मछली, और मांस निषिद्ध है।

यकृत् प्रदाह (Hepatitis).

पुराना मलेरिया ज्वर, पारा या कुइनाइनका अपव्यवहार, बहुत मद्यपान, गर्भस्थानमें घाम इत्यादि कारणोंसे यकृतमें रक्त संचार होकर जलन हो जाती है, यह प्रदाह पुराना होने पर यकृत बढ़ जाता है और कठिन होजाता है तथा धीरे धीरे पेटकी दाहिनी ओर फैल जाता है। रोगकी तरुणावस्थामें पहिले जाड़ा और कंपकंपी देकर ज्वर आता है। पीछे यकृतमें दर्द आरम्भ होता है, माथेमें दर्द, मुह बेस्वाद, क्लेदआलिप्त जिह्वा, भूखका न रहना, कर्दमवत् मलिन या माटा मल, दाहिने कांधेपर थोड़ा दर्द, कोखके दाहिनी ओर भारी मालूम होना, इत्यादि लक्षण दिखाई देता है। पहिली अवस्थामें रक्तसंचय बन्द होनेपर अन्यान्य लक्षण भी कम हो जाते हैं। यदि रक्तसंचय दूर न हो तो उत्तरोत्तर लक्षण भी तेजीसे प्रगट होने लगते हैं। जैसे दाहिनी कांधेमें तेज दर्द, दांये पीसी यकृतके ऊपर ऐसी दर्द कि हाथ तक न रक्खा जा सके। जोरसे सांस छोड़ने पर या बांई करवट सोनेपर या खांसनेमें, इस दर्दका बढ़ जाना। वमन या वमनेच्छा, दोनो रंगका पेशाब, कोष्ठबद्ध (कब्जियत) या उदरामय (पतला दस्त होना) इत्यादि लक्षण दिखाई देने लगते हैं और यकृत भी बढ़ जाता है। रोगके पाकोन्मुख होनेकी अवस्थामें यह सब लक्षण धीरे धीरे कम होने लगते हैं नहीं तो धीरे धीरे रोगके

समय जाड़ा और कंपकंपी देकर जोरसे ज्वर आने लगता है और यकृतमें एक प्रकारका घाव पककर प्राय रोगीकी मृत्यु हो जाती है; और भी अनेक समय पर यकृतकी आकृति छोटी होनेसे सब अंग फूल जाकर रोगी मृत्युको प्राप्त करता है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x, ६। (यकृतके नये प्रदाहमें) जाड़ा और कंपकंपीके साथ ज्वर, यकृतके दर्दमें।

नक्सभमिका ६, ३०।—शराब पीनेसे उत्पन्न भये हुए पुराने यकृत प्रदाहमें कब्जियत और भोजनके बाद दर्दका बढ़ना।

चाइना ६, ३०।—ज्वर बहुत पुराना हो जाने पर शरीर रक्त हीनसा हो जाये, प्लीहाकी वृद्धि, यकृत बड़ा कठिन, और दुर्बलता।

मार्क-सल ६, ३०।—यकृतके तरुण प्रदाहमें और पुराने प्रदाहजनित यकृतकी वृद्धि होने पर सूजन और कड़ाई, यकृतके स्थानको दबाकर धरनेकी भांति दर्द, (इसी कारणसे रोगी दाहिनी करवट नहीं सो सकता है।) पीले रंगकी आंखें, भूख बन्द, सफेद कड़ा मलिन या पित्तमिला हुआ पतला मल, मुह बेस्वाद सांसमें कष्ट।

चेलिडोनियम ३०।—यकृतमें तेज दर्द, दाहिने कन्धे या दाहिने कन्धेकी हड्डीके भीतर दर्द, पीले रंगका पतला मल

या उजले रंगका बड़ा मल, सब शरीर पीले रंगका, पीले रंगका गाढ़ा पेशाब।

न्याइम मियूर ३०।—यकृतमें सुई भोंकने या चिकोटी काटने अथवा दबाकर पकड़नेकी भांति दर्द, पेट बहुत फूला, कभी कभी पेटका बोलना और सामही ज्वर।

न्याइम मल्फ ३०।—छूने, हिलने, ज़ोरसे सांस खींचनेसे यकृतमें दर्द, पेट खाली रहनेपर नाभिके चारो ओर दर्द, भोजन करनेपर इस दर्दका कम होना।

पडोफाइलम।—यकृतके नये प्रदाहमें कब्जियत रहने पर ३ क्रम। पुराने प्रदाहमें ३० क्रम—यकृत बड़ा और सायही पित्त वमन, पित्त मिला हुआ पतला मल, मलत्यागके समय कांचका बाहर निकल आना, मुहका स्वाद तिक्त, मूत्र मैला, चेहरा मलिन, शिरमें दर्द, विशेष करके शिरके अग्रभाग अर्थात् कपालमें तेज़ दर्द।

फसफोरस ६, ३०।—यकृत बड़ा और कठिन होकर धीरे धीरे छोटा होना और अन्तमें उदरी होनेपर।

बार्बेरिस १x वा १।—यकृतमें रक्त संचय होकर मूत्र-नालीमें, उरुमें, कमरसे और पहेमें दर्द हो।

ब्रायोनिया ३x, ६, ३०। यकृत बड़ा और कठिन, सुई बेधनेकी भांति ज्वालाकर दर्द, (चांपकर धरनेसे इस दर्दका घटना) कब्जियत या पायखानेकी इच्छाका बिलकुलही अभाव शिर घूमना, दाहिने कांधेमें दर्द, बांयें और बठनका बन्द

कुछ पीला, यकृतके तरुण प्रदाहमें मार्क्यूरियमके साथ यह पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करने पर, आशातीत फललाभ होता है।

लाइकोपोडियम १२ या ३०।—पेट वायुसे फूला हो और कब्जियत हो, सदा दबानेकी भांति दर्द, चांपकर धरने और जोरसे सांस खींचने पर दर्दका बढ़ना, दाहिनी तरफ और पेटमें दर्द।

लेप्टाण्ड्रा ३x, ६।- जीभ पीले रंगकी, पित्तवमन, अल-कतरेकी भांति काला मल, यकृतके चारो ओर असह्य वेदना कर्दमवर्णवत् मल, आमाशय, ज्वर, उदरी या शोथ।

आर्सेनिक ३०।—यकृत बड़ा, सूजन, पेशाब थोड़ा, जीवनी शक्तिका कम होना, और प्यास।

सिपिया ३०।—जरायु और मूत्राशयकी क्रियाके विकारके साथ यकृतका पुराना प्रदाह, दुर्बलता, अग्निमान्द्य और गठियां, सूजन।

हिपर सल्फर ३x विचूर्ण।—सांस लेनेसे, खांसने और हिलनेसे दर्दका बढ़ना (यह दर्द पट्टे तक बढ़ जाती है, अर्श पीड़ाके साथ यकृतमें रक्तसंचयजनित पुराना प्रदाहमें)।

नियम।—यकृतके ऊपर छोटे बकड़ेका मूत्र गर्म करके सेंक दे। ज्वर रहने पर साबू, बार्ली आरारोट इत्यादि लघुपथ्य। मछली मांस, घृत या घीमें पका हुआ द्रव्य भोजन करना नहीं चाहिये।

बढ़ी हुई प्लीहा Enlarged Spleen).

मलेरियाका विष शरीरमें घुसनेसे प्लीहा (पिलही) बढ़ जाती है। ज्वरके समय शीतावस्थामें पिलहीमें रक्त जमा होकर यह बढ़ जाती है। इसके छोड़, हृद्‌रोग, रजो लोप, और बवासीर रोगमें रक्त निकलना बन्द होकर पिलही बढ़ती है। पिलही बढ़नेसे सब शरीर रक्तशून्य और पीलेरंगका तथा अग्निमान्द्य, कब्जियत या दस्तका अधिक होना, कमजोरी इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। पिलही धीरे धीरे बढ़कर पेटकी बांई तरफ फैल जाती है और इतनी कड़ी हो जाती है कि मालूम होता है कि पथरका एक टुकड़ा रखा हुआ है। रोग बढ़ जानेपर उदरामय (अर्थात् दस्त अधिक आना) या रक्त आमाशय (खून मिलि हुई आंव गिरना) हो जाता है, भूख बिलकुल नहीं रहती, दांतका वहुआ फूलकर रक्त गिरने लगता है अन्तमें उदरी और शोथ (सूजन) होकर रोगीकी मृत्यु होती है। पिलही फट करभी कोई कोई मरता है।

चिकित्सा।—मलेरिया ज्वरके साथ प्लीहाके नये प्रदाहमें पहिले ज्वरकी दवाही करना आवश्यक है। नये प्लीहा दाहमें एकोनाइट ३x, प्लीहाके ऊपर सुई बेधनेकी भांति दर्द हो चापनेमें दर्द बढ़े, कभी कभी ऐठन और रक्त वमनका लक्षण दिखाई देतो आर्निका ६। पेटके बाई तरफ दबाये रहना या मूठ गड़ानेके तरह दर्द, प्लीहा

"नासूर या मर्दन" होजाता है। यक्ष्मा रोगके अन्तिम अवस्थामें प्राय भगन्दर होते देखा गया है।

चिकित्सा।—पीड़का (फुसरी) उत्पन्न होनेके बाद टपकसी दर्द, गुह्यद्वार लाल रंगका, शिरमें दर्द इत्यादि लक्षणोंमें बेलेडोना ३x या मार्क सल ६, पीड़का मुजकर उसमें रीम उत्पन्न होने पर हिपर सलफर ३ विचूर्ण। फोड़ेसे अधिक परिमाण रीम निकलता हो या मर्दन होनेपर साईलिसिया ३०, लक्षण विशेषमें कष्टिकम ६, षाइला ३०, कैलकेरिया कार्ब्ब ३०, कैलकेरिया फ्लोर १२, सलफर ३० इत्यादि प्रयोग करना चाहिये।

११। मूत्रयन्त्रके रोग।

मूत्र-ग्रन्थि प्रदाह (Nephritis).

मूत्रकोषमें दाह होनेसे ज्वर, वमनोद्वेग, पेशाव थोड़ी, कभी लाल, कभी धोवनकी भांति, कभी रक्त या रीम मिश्रित, पेशाव करनेके समय तेज जलन, मेरुदण्ड और कमरमें दर्द, अण्डकोष लाल और समय समय पर पेशाव एकबारगी बन्द होकर प्रलाप या मूर्च्छावस्था अथवा मृत्यु होजाती है। सहसा ओस या सर्दी लगना बहुत मद्यपान, रात्रिमें जागरण। मूत्रकारक औषधियोंका अपव्यवहार, चोट लगना इत्यादि कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—ज्वर, और प्रदाह लक्षणके साथ रोगकी पहिली अवस्थामें एकोनाइट ३x। बूंद बूंद पेशाब (कभी कभी रक्त मिला हुआ) अण्डकोष लाल रंगका, पेड़ूमें ज्वालाकर वेदना, पेशाब करनेके समय जलन या पेशाब न होना इत्यादि लक्षणोंमें कैन्थारिस ६। मलिन या रक्त मिला हुआ मूत्र, अण्डकोष लालवर्ण, शरीरके नाना स्थानोंमें शोथ इत्यादि लक्षणोंमें टेरिबिन्थिना ६। बारबार मूत्रत्यागकी इच्छा मूत्रकोषमें कुछ बेधनेकी भांति दर्द, आंख और चेहरा लाल, कभी कभी प्रलाप हो तो बेलेडोना ६। आर्सेनिक ३०, कैनाबिस स्याट ६, नक्सभमिका ३०, पलसेटिला ६, हिपर सलफर ६, मर्क्यूरियस सल ६, लाइकोपोडियम ३०, सोपिया ६, सलफर ३० इत्यादि औषधोंकी भी समय समयपर आवश्यकता पड़ती है।

मूत्रस्तम्भ और मूत्रनाश।

(Retention and suppression of Urine).

मूत्राशयमें मूत्र संचित होकर किसी सबबसे मूत्र न निकल सके तो उसे मूत्रस्तम्भ और मूत्राशयमें मूत्रकी उत्पत्ति न होनेसे मूत्रनाश कहते हैं। मूत्रस्तम्भमें पेड़ू फूल जाता है, मूत्रनाशमें यह नहीं रहता। मूत्रका विषाक्त उपादान रक्तमें मिलकर मूत्रनाश रोग उत्पन्न होता है इस

रोगमें अवसन्नता, तन्द्रा, मोह, चैतन्यलोप इत्यादि कई लक्षण प्रगट होते हैं, ज्वर विकार, हैजा इत्यादि कई सांघातिक रोगोंके साथ प्राय मूत्रनाश रोग भी हो जाता है। प्रमेह रोगमें सहसा रोम निकलना बन्द, मूत्रग्रन्थिका वदना, या मूत्रस्थलीका पक्षाघात या किसी प्रकारकी चोटके कारण मूत्र रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—मूत्रनाश रोगमें मूत्राशय प्रदाह वर्त्तमान रहनेपर रोगकी पहिली अवस्थामें एकोनाइट ३ और टेरिबिन्थिना ६ पर्य्यायक्रमसे हैजाकी बीमारीमें यदि पेशाब रुक जाये तो टेरिबिन्थिना ६, केन्थारिस ६ या कैलिबाइक्रम ६।

मूत्रस्तम्भ रोगमें।—ज्वाला और यन्त्रणाके साथ एकाएक मूत्रस्तम्भ होने पर स्पिरिट कैम्फर। तुरतके जनमें बच्चोंको मूत्रस्तम्भ होनेसे १०।१५ मिनिटका अन्तर देकर कैम्फरकी शीशी उनके नाकके पास रखनी चाहिये। मूत्रस्थलीके पक्षाघातके कारण बूंद बूंद पेशाब होने पर नक्स-भमिका ६ या कष्टिकम ६। गुल्मवायुग्रस्त रोगियोंको मूत्रस्तम्भ होने पर नक्समस्केटा २, इग्नेशिया ६ या जेलसीमियम ६। मूत्राशयकी मुखग्रायीग्रन्थिकी वृद्धिके कारण उत्पन्न भये हुए मूत्रस्तम्भमें पलसेटिला ६ और व्याराइटा कार्ब ६। रोगकी पहिली अवस्थामें (पर्य्यायक्रमसे)। एकोनाइट ३x और जेलसीमियम ३x या एकोनाइट ३x और केन्थारिस ६

आपही पेशाब निकलना (Enuresis).

मूत्रस्थलीमें पक्षाघात होनेसे मूत्र धारण अर्थात् पेशाब रोक रखनेकी शक्ति एकदम या अधिकांश चली जाती है। मूत्र त्यागकी चेष्टा होने पर फिर उसका रोकना कठिन हो जाता है और तुरत बूंद बूंद पेशाब होना आरम्भ होजाता है। मूत्राशयमें मूत्र सञ्चित रहने पर भी बूंद बूंद मूत्र होता है। आघात, प्रसव कष्ट, पथरी, प्रमेह, क्रिमि रोगके कारण यह रोग उत्पन्न होता है। लड़के जब उन्हें नींद लगी रहती है उस अवस्थामें आपही पेशाब कर देते हैं।

चिकित्सा।—बालक और वृद्ध मनुष्योंको कैन्थारिस ६, मूत्राशयकी ग्रन्थि बढ़ जाये या मूत्राशयमें पथरी होनेके कारण बालक और वृद्धको आपही पेशाब हो तो जेल-सिमियम ६x। गुल्मवायुग्रस्ता स्त्रियोंकी मूर्च्छाविषके समय आपही पेशाब हो जाये तो इग्नेसिया ६। क्रिमिके कारण हो तो सिना ३x और स्पाईजेलिया ६। शुक्र क्षरण पीड़ाके कारण हो तो एसिड-फस ६, ३०। ईक्विजिटम ३, बेलेडोना ६, कैन्थारिस ६, नक्सभमिका ६, इत्यादि भी समय समय लाभदायक होते हैं। इस रोगमें चित्त कदापि न सोना चाहिये। खट्टा और नमकीन पदार्थ न खाना चाहिये।

शुक्रमेह (Spermatorrhœa).

जवानीकी आरम्भावस्थामें प्राकृतिक नियमोंको उल्लङ्घन कर अनैसर्गिक उपायोंसे वीर्य्य निकल जानेके कारणसेही यह रोग उत्पन्न होता है। इसके कारण मलान्त्रका उप-दाह, मूत्रनाली और मूत्राशयका उपदाह, मस्तिष्क, पीठ और मज्जाकी पीड़ा, गर्भ पीड़ा और सदा घोड़े पर सवार होकर घूमनेसे भी इस रोगकी उत्पत्ति हो सकती है। पर अधिक करके हस्तमैथुनसेही यह रोग उत्पन्न होता है। शुक्रमेह रोगमें धारणाशक्ति एकबारगी नहीं रहती। स्त्रियोंके देखने या छूनेसेही, मलत्यागके समय जोर देने और घोड़े पर सवार होने पर थोड़ेही उत्तेजनासे रेतस्राव हो जाता है। बहुत शुक्र निकल जानेसे नीचे लिखे लक्षण दिखाई देने लगते हैं;—विमर्ष चित्त और उदास भाव, स्मृतिशक्ति घटना, सब कामोंमें निरुत्साह, शारीरिक दुर्बलता, अग्नि-मान्द्य, कोष्ठबद्ध, पेट फूलना, कलेजेमें धड़कन, सिरमें दर्द, एकाएक खड़े होनेसे आंखोंमें अन्धेरा आ जाना, चेहरा रक्त-हीन आंखें गड्ढेमें धंस जाना और आंखके कोनेमें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

सवता, सदा अन्य मनस्क, दुर्बलता, जननेन्द्रियकी शक्ति कम पर काम प्रवृत्ति अधिक हो।

एसिड फसफरिक ६, ३०। बहुत स्त्री सहवास या हस्त-मैथुनके कारण जननेन्द्रियकी दुर्बलता, स्वप्नदोष, सङ्गमके समय जल्दी जल्दी शुक्र क्षरण, चित्तकी विषसता, स्मृति-शक्ति (याददाश्त) की कमी।

चाइना ६, ३०।—प्रायः जननेन्द्रियकी अस्वाभाविक उत्तेजना, स्वप्नदोष, पेटमें दर्द, कानमें भीं भीं शब्द, चेहरा लाल और माथा घूमना, बारबार जंभाई आना और अतिशय दुर्बलता।

फसफोरस ६, ३०।—सङ्गमके समय बडी तेजीसे रेतःस्राव और कमजोरी, रतिशक्तिकी कमी, मानसिक चिन्ताकी अधिकता, कलेजेमें धड़कन, बहुत शुक्रक्षय और हस्तमैथुनके कारण लिङ्गका एकदम न उठना।

प्लाटिना ६।—यौवनावस्थाके आरम्भमें अपरिमित शुक्रक्षय और हस्तमैथुनके कारण कामेच्छा व्यतीत लिङ्गोच्छास और शीघ्र शीघ्र शुक्रक्षरण।

नक्सभमिका ६, ३०।—सामान्य कारणमें कामभाव, सबेरेके समय निद्राभङ्गके बाद अस्वाभाविक लिङ्गोद्रेक, उत्तेजक द्रव्य खाने या पीनेसे स्वप्नदोष, अण्डकोषमें दर्द, कोष्ठबद्ध, अरुचि।

अतिशय मैथुनेच्छा पर लिङ्ग उठतेही शीघ्र शीघ्र शुक्र

स्खलन, सब शरीरमें दर्द, कमजोरी इत्यादि लक्षणोंमें कैल्केरिया कार्ब ६। ष्टाफि साफिया ६, जेलसिमियम ३०, सलफर ३०, बैराइटा कार्ब ६, कैन्थरिस ३x, इग्नेसिया ६, थार्म्बेनृाम ६, कोनायम ६, फेराम ६, कैलेडियम ३०, सेलेनियम ३०, इत्यादि समय पड़ने पर काममें लाने चाहिये।

नियम।—केवल औषध सेवनसे यह रोग नहीं छूटता बल्कि औषधके साथ ही साथ रोगीको नीचे लिखे नियमानुसार अवश्य चलना चाहिये :—सत्संसर्ग, साफ हवा सेवन, सुबह और शामको घूमना, अनुत्तेजक पदार्थको खाना या पीना, अच्छी अच्छी बातें करनी तथा धार्मिक ग्रन्थोंका पढ़ना और नित्य अवगाहनमें स्नान करना उचित है। उत्तेजक द्रव्य पान या भोजन, कुसंसर्ग, थियेटरमें जाना, नाटक या नावेल (उपन्यास) पढ़ना, हस्तमैथुन इत्यादि सदा और अवश्य त्याग देने चाहियें।

प्रमेह (Gonorrhœa).

पेशाबकी राहकी श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाहयुक्त होनेसे उसमेंसे जो स्राव होता है उसे प्रमेह कहते हैं। प्रमेह बड़ी दुःखदायी व्याधि है अपवित्र स्त्री या पुरुषके सहवास दोषसे यह रोग उत्पन्न होता है स्त्रियोंके मूत्रमार्ग

पुरुषोंके मूत्रमार्गकी अपेक्षा क्षुद्र होनेके कारण उतना यन्त्रणा-दायक नहीं होता। प्रमेह विष शरीरमें प्रवेश करते ही पहिले २।५ दिन मूत्रनालीका मुंह सुड़सुड़ाता तथा खजु आता है, गर्म या लाल रंगका हो जाता है। जलन होने लगती है और थोड़ा थोड़ा सुफेद स्राव होने लगता है। फिर बहुत बहुत दूधकी तरह या पीले रंगका या हरे रंगका तथा रक्तमय स्राव भी निकलने लगता है। पेशाब करनेके समय बड़ी दर्द होना ही इस रोगका एक प्रधान लक्षण है। रात्रिमें बारबार अस्वाभाविक लिङ्गोद्रेक (और इसी कारणसे बारबार नींद खुल जानेसे रोगी दर्दसे बेचैन हो जाता है) लिङ्गमुण्ड अर्थात सुपारी सुजी हुई, अण्डकोषमें जलन और मूत्राशयकी मुखवाली ग्रन्थिमें जलन होती है। ये उपरोक्त कही हुई अवस्था सातसे चौदह दिनतक दिखाई देकर धीरे धीरे सब उपसर्ग कम होने लगते हैं। केवल पेशाब करनेके समय थोड़ी थोड़ी जलन और पीले रंगका रीम निकलने लगता है इसी पुराना प्रमेह कहते हैं। प्रमेह रोगमें नीचे लिखे उपसर्ग दिखाई दे सकते हैं.—अण्डकोषमें जलन, मूत्रनालीका फोड़ा मुख आनेके कारण एकाएक पेशाबका बन्द हो जाना, वात, आखोंमें जलन, लिंगका मुंह (सुपारी) मूर्जा हुई और बाधी इत्यादि।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x। रोगकी पहिली अवस्थामें, पेशाब करनेके समय छिदवत् या कटनेकी भांति दर्द

बाद (जलन होनेके पहिले) मिपिया ३० नित्य सबेरे एक बार और रात्रिको एक बार प्रयोग करनेसे रोग शीघ्र आराम होता है। पेशाब करनेके समय बहुत जलन रहनेसे हाइ-ड्राष्टासि १ ड्राम ६ आउन्स पानीमें मिलाकर पिचकारी देनेसे जलन कम हो जाती है।

संक्षिप्त चिकित्सा।—रोगकी पहिली अवस्थामें ऐकोनाइट, जेल्सिमियम, कैन्थरिस, थूजा, बेलेडोना, और नक्सभमिका। पुरानी अवस्थामें—*केनाबिस इण्डिका, थूजा,* फेरम, पलसेटिला, नक्सभमिका, पेट्रोलियम, चाइना और सलफर। बारबार लिङ्गोच्छास होनेसे—ऐकोनाइट, कैन्थरिस और जेल्सिमियम तथा थोड़ा गर्म जल या ठण्डे जलकी धार देनी चाहिये। प्रमेह रोगके साथ यदि अण्डकोष प्रदाह-युक्त हो तो ऐकोनाइट, जेल्सिमियम, पलसेटिला, मर्क्यूरियम, हैमामेलिस और फाइटोलका। प्रमेहरोगके बाद गठिया हो तो मर्क्यूरियम बिन-आइयोडेटाम, कलचिकम, कलीमिन्थ, सार्कमल, मेजेरियम, पल्सेटिला, ब्रायोनिया, रडोडेण्ड्रन और रसटक्स। प्रमेहरोगके बाद बाघी हो तो मर्क्यूरियम आयोड नाइट्रिक एसिड और लेकेसिस। ६ से ३० शक्ति पर्य्यन्त यह सब औषध व्यवहृत होते हैं।

पथ्य।—ज्वरकी अवस्थामें लघु पथ्य, ठण्डा पानी या गोंद भिजा हुआ जल उपकारी है। उष्ण शय्यापर शयन, बहुत देर तक घूमना, मिर्चा या मीठा पदार्थ अनिष्टकारक है।

रहता, कदाचित् पेटमें दर्द मालूम पड़ने मात्रहीमें जबतक पथरी पित्तकोषसे पित्तवाही नालीमें आन गिरती है, तब अकस्मात् धीरे धीरे पेटमें एक तरहका असह्य दर्द होकर रोगीको अत्यन्त अधीरकर डालता है, इस कठिन दर्दका नाम पित्तशूल (Billiary Colic) है, यही शूल दाहिनी कुक्षमें आरम्भ होकर बायीं तरफ प्रायः दक्षिण कन्धा और सब अङ्गोंमें फैल जाती है, और पीड़ाके साथ वमन, ठढा, पसीना, दुर्बल नाड़ी, आड़ा (Collapse) पाण्डु, श्वास बन्द जानेमें कष्ट, मूर्च्छा इत्यादि लक्षण दीख पड़ते है। पीड़ा कई घण्टोंसे कई सप्ताह तक रहकर अकस्मात् मिट जाती है। अर्थात् पथरी ग्रहणी (Duodenum) में आकर पड़नेसे सम्पूर्ण व्यथा मिट जाती है। इसी तरह सब और अन्तमें पथरी पानेसे समझना चाहिये है कि पथरी निकल गयी है।

चिकित्सा।—(१) जिससे शूल पीड़ा शीघ्र निवृत्त हो और (२) मलके साथ पथरी अन्त्रसे निकल जानेसे जिससे भविष्यत् और पित्तकोषमें पथरी उत्पन्न न हो, इन्हीं दो बातों पर ध्यान देकर औषधि और पथ्यादिकी व्यवस्था करना चाहिये।

(१) [illegible]

इंगलैण्डके जगत् प्रसिद्ध डाक्टर हिउजी पित्तपथरीका कष्ट प्रशमनार्थ क्याल्केरिया कार्ब,—व्यवस्था करनेसे कभी भी व्यर्थ मनोरथ नहीं हुवे।) पित्तमें उत्पन्न शूल पीड़ा निवारणार्थ यह परम औषधि है पन्द्रह मिनिट अन्तर पर दो तीन घण्टा सेवनके पश्चात् इससे पीड़ा शमन न होनेसे बार्बेरिस प्रति बीस मिनिटके पश्चात् देना चाहिये।

कोलेस्टेरिनम ; आमेरिकाके डाक्टर स्वोयान इसी औषधिका ३m शक्ति प्रयोग कर पित्त पथरीसे उत्पन्न वेदनामें आश्चर्य फल पाकर मोहित हुए हैं। (Vide Allens (Nowdes edition, 1910), ३m क्रमका सुविधा न होने पर भिन्न शक्तिका व्यवहार किया जा सकता है, इंगलैण्डके डाक्टर बार्नेट ३x—३ बूंद सेवन करानेसे पित्त पथरी रोगकी विविध अवस्थामें अनेक उपकार पाये हैं। चियोनान्थस और हाइड्रास्टिस प्रत्येक मात्रामें एक बूंदसे १० बूंद पर्य्यन्त। डायस्कोरिया और चेलिडोनियम ३x कार्डुयास मेरियेनास ३x पोडोफिलिनम १x बेलेडोना १x और आर्सेनिक ३ इत्यादि औषध पीड़ा निवारणार्थ व्यवहृत होता है।

आनुषङ्गिक चिकित्सा।—पीड़ाके रोगी नितान्त दुर्बल हो पड़नेसे उनको खूब गरम पानी पिलाना और खूब गरम कपड़ा सेंक देना वा गरमपानीकी [illegible] इत्यादि

द्वारा बूंद २ करके गरम जलकी धार देकर बराबर भिजाना (Rectal irrigation) और दाहिनो तरफके कोखमें गरम पुल्टिस लगाना इत्यादि उपायोंसे पीडाकी बहुत शान्ति हो सकती है। इसी प्रकार औषधादि प्रयोग करनेसे पीड़ा निर्दोषभावसे उपशम होनेसे और पथरी निकल जाने पर जिससे फिर पित्तकोषमें पथरी उत्पन्न न हो उसका उपाय करना चाहिये। नीचे लिखी हुई व्यवस्थानुसार चलने पर, फिरसे नहीं होने पाती।

(२) पुनराक्रमण निवारणके लिये चायना अति उत्तम औषधि है। पित्त पथरीकी चिकित्साके बारेमें सिद्धहस्त डाक्टर थेयार ने नीचे लिखी व्यवस्था द्वारा बीस वर्षसे अधिक समय जितने रोगीको चिकित्सा किया सभी आराम हुए। चायना ६x प्रतिमात्रा छ गोली प्रत्यह दो बार करके देना होगा जितने दिन तक दस मात्रा औषधि सेवन न हो, पश्चात् एक दिन अन्तर एक मात्रा (छ गोली) करके देना होगा जिस दिन दस मात्रा पूरा होजाय उसके पश्चात् दो दिन अन्तर एक मात्रा (छ गोली) करके देना होगा। जबतक दस मात्रा पूर्ण न हो जावे इसी तरहसे ३ दिनके अन्तर ४ दिनके अन्तर पांच दिनके अन्तर इत्यादि करके देना होगा, फिर महीनेमें औषधिकी (अर्थात् छ गोली) एक मात्रा सेवन कराना चाहिये अनेक प्रसिद्ध चिकित्सकोंने देखा है कि उपरोक्त रीति अनुसार चलनेसे प्रथमतः

वस्थामें इस लोगोंके शरीर पोषणके अनुपयोगी पदार्थ समूह पेशाबके साथ निकलता है किन्तु परिपाक वा परिपोषणके कामके व्याघात होनेसे इसका अन्यथा होता है। तब साफ शीशीमें पेशाब थोड़ी देर रखनेसे यदि ईंटका चूर्ण या रेतकी तरह तलीमें जमें तो मूत्र पथरी हुई है समझना चाहिये। तब बहुत बारीक रेतीके (Sand) समान वा छोटे २ कंकर (Gravel) अथवा सेमके बीजके समान कंकरके टुकड़ेके (Stone) समान छोटे बड़े सभारी नाना तरहके पथरी मूत्रपित्त (Kidneys) वा मूत्राशय (Bladder) में दीख पड़ते हैं। स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंमें और बङ्गदेशसे उत्तर पश्चिमकी तरफके लोगोंमें यह रोग अधिकतर दीख पड़ता है।

(१) मूत्रपित्तमें पथरी (Stone in Kidney or renal Calculus) और मूत्रशूल और (Liver of the Kidneys) मूत्र पित्तकोषमें पथरी उत्पन्न होकर अधिक दिन तक अटकी रहती है। इस तरहकी अवस्थामें प्रायःही किसी तरहकी पीड़ा नहीं होती, ताम्रवेदना (dull pain) वा मूत्रके साथ थोड़ा बहुत पीब रक्त दीख पड़नेसे मूत्र पित्तसे मूत्रनली (ureter) के बीचमें पथरी आन पड़नेसे कमरमें अण्डकोष तक एक तरहकी दुःसह पीड़ा होकर रोगी के अत्यन्त अधीर कर देता है इसी पीड़ाको मूत्रशूल (renal

रक्तनेमें पथरीका चलना, अनुभव होताहै और उसके साथ पेशाव होना, इत्यादि यही रोगके लक्षण है।

(ख) मूत्रशूल पीड़ा वा पथरी निकलनेका समय।

चिकित्सा।—कमर वस्ती स्थानपर गर्म जलका सेंक (hot fomentation) और गरम जल से धोना, और कार्बोलिक हर एक मात्रामें पांच बूंद १५ मिनिट अन्तर सेवनसे पीड़ा कम होती है; यदि आठ दस मात्रा औषधि सेवनसे कुछ उपकार न जान पड़े—तो उक्त औषधिको पटशक्ति काममें लाना चाहिये क्यान्थेरिया कार्बोलिका १० प्रति पन्द्रह मिनिट अन्तर सेवन करनेसे आश्चर्य फल मिलता है।

(Vide Dr. Sandu Mill's essay in the Paris Congress Transaction, 1900.)

अतएव उक्त क्रमसे क्यान्थेरिया कार्ब्व पित्तशूल और मूत्रशूल उभयविधि शूल पीडाको परम औषधि है।

इस पीडामें रोगी लड़के तरह चमता है और दोनों हाथ इकट्ठा करके दबाने और कमर स्पर्श चिल्कार और रों रों करनेसे, अथवा पेशाव लाल रंग और थोड़ी देर धर रखनेपर इटके चूर्णवत् तलेमें जमनेसे थोसिमानकेनाम १० प्रति १५ मिनिट अन्तर पर देवें। पेशावके पश्चात् जो पीडाकी वृद्धि होनेसे, सार्सा १० बुंद कर १५ मिनिटके अन्तर,

नाम्नीमें पीड़ा और पेशाबके नीचे पहिले सफेद और पश्चात् लाल मांडके सदृश होजावे। सिपिया (६-३०) पेशाबके नीचे गोंदके समान चिपचिपा श्वेतवर्ण वा ईषत् लाल। सार्सापेरला (६-३०) पेशाब करनेपर वह गोंदके पानीके समान मैला हो जावे।

नाइट्रोमिउर एसिड २४ वा अगजलिक्एसिड (३—१२) पेशाबके नीचे क्यालसियम अकज्यालेट जमनेसे (Oxalate of lime deposit).

उपरोक्त औषधियां मानों रोज अन्ततः चार बार करके सेवन कराना चाहिये। बेलेडोना (३४—३०) अफीम (३—३०) नक्स (१५—३०) मिलिका (६—३०) कभी २ उपकार करता है।

(ग) मूत्राशयकी पथरी चिकित्सा। लिथियाम कार्ब्बनिकाम (३४ चूर्ण ३०) रोज बारबार सेवनसे छोटी पथरी गल जाती है। क और ख के बीचकी औषधिया लक्षणानुसार व्यवहार करनेसे बहुत समय उपकार मिलता है, किन्तु लेथो राइट (Lithorite) इत्यादि यन्त्रकी सहायतासे आयथियुक्त अस्त्रचिकित्सा द्वारा बड़ी पथरी शरीरसे निकाल नाही परम चतुरता है। X—Rayके सहायतासे शरीरकी पथरी दीखपड़ती है।

(ख) प्रतिषेधक (रोकनेकी) चिकित्सा जिससे मूत्र-

१४। चर्म्मरोग।

आमवात (Urticaria).

आमवात रोग एकाएक दिखाई देनेसे कई घण्टे या कई दिन रहनेपर फिर आपही आप मिट जाता है। रोग पुराना होनेसे, फिर रोगी कष्ट पाता है। शरीरके नाना स्थान फूल उठते हैं खजुहट होती है और आक्रान्त स्थान गर्म हो जाता है। चिंड़िमछली, केंकड़ा या भारी द्रव्य भोजन, सर्दी लगने के बाद यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—दाह, ज्वर, श्याम और लाल रंगके दानोंमें खुजली हो तो एकोनाइट ३x। पीड़का प्रान्त भाग लाल रंगका और बीचका भाग सफेद, जलन या सूई गड़ानेकी भांति दर्द या बहुत ही कुट् कुट् अथवा सुड़ सुड करना आर्टिका इयूरेन्स ३x या एपिस ३x। आर्टिका इयूरेन्स और एपिस प्रभेद —दाने एकाएक बैठ जाये तथा वमन, अतिसार और बकना आदि लक्षणोंमें आर्टिका। दाने बहुत फूल उठे और सूई गड़ानेके तरह तेज दर्द हो तो एपिस मेल। उदरामय हो तो, एण्टिमक्रूड, नक्सभमिका, पलसेटिला। सर्दी लगकर होती डालकेमारा। रोगकी पुरानी अवस्थामें एपिस, आर्सेनिक, सलफर, कुर्ड्रनि-आर्स यही सब दवायें देनेसे काम चलेगा। पेटमें गड़बड़ हो ऐसा पदार्थ न खाना चाहिये।

पांचड़ा (Scabies.)

और

खुजली (Itching of the Skin).

जीवानुसे एक प्रकारका फोड़ा होता है। मणिबन्ध और उंगली इत्यादि स्थानोंमें, सूक्ष्म और कोमल चमड़ेके नीचे ये सब कीड़े वास करते हैं, इसी कारणसे उंगलीमें यह रोग होता है।

चिकित्सा।—नित्य दो बार कार्बोलिक या नीमके पत्ते पानीमें औटाकर अच्छी तरह धो कर, गन्धकका मलहम लगा देनेसे जलदही मुख जाते हैं, कैलकेरिया, कार्बनिका, आर्सेनिका, हेपर सल्फर, नक्सभमिका या मर्क्यूरियस कर, सोरिनाम, लाइकोपोडियम, क्रोटन टिग्लियम, कष्टियम, ईफिसाग्रिया इत्यादि औषध (३० शक्ति) खुजलीमें लाभदायक होते हैं।

क्षत (घाव) (Ulcer).

चोट लगनेसे, छिल जानेसे, गिरनेसे इत्यादि कई कारणोंसे फोड़ा हो जाता है।

चिकित्सा।—घावमें रस बहना, घावमें जलनेकी भांति जलन, घावके चारों ओरका स्थान कड़ा और उत्तम

तथा थोड़ा थोड़ा रक्त मिला हुआ पीप या कुछ काले रंगका पीप निकलना इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६, ३०। गण्डमालाके कारण उत्पन्न भये हुए घावमें सलफर ३० और कैल्केरिया ३०। जलनवाला घाव, लाल रंगका हो तो बैलेडोना ३x। सामान्य घावमें धीरे धीरे पीप उत्पन्न हो तो माइलिसिया ३०। पीप निकालकर घाव बैठा देना हो तो हिपर सलफर ३०। और पीप बढ़ाना अर्थात् घावको पकाना हो तो हिपर सलफर विचूर्ण ३। पारद दोष रहनेसे यह और भी उपयोगी होता है। उपदंशके कारण उत्पन्न भये हुए फोड़ेमें मर्क्यूरियस ६। पुराने घावमें किसी दूसरी दवासे फल न दिखाई देने पर सलफर ३०। घाव सड़ना आरम्भ होगया हो तो कैलेण्डुला १ आउन्स, आधा सेर जलमें मिलाकर उसी जलमें एक साफ कपड़ा भिजाकर घावके ऊपर पट्टी देनेसे सड़ना बन्द हो जाता है।

पुराना घाव (शोष)

चिकित्सा।—घावसे सहजहोमें आपहीमें आप रक्त निकले, आगमें जलनेकी भांति जलन, तेज दर्द और घावके चारो ओरका मांस कड़ा हो तो आर्सेनिक ३०। दुर्गन्ध, गाढ़ा पीप, घावमें खुजली या सूई गड़ानेकी भांति दर्द, मांस वृद्धि होनेवाले घावमें आफाइटिस ६। शरीरके नाना स्थानोंमें

फोड़ामें पीप उत्पन्न होनेके समय मर्क्यूरियस सल ६। फोड़ा सड़नेका उपक्रम हो आक्रान्त स्थानमें जलन हो और साथ ही कमजोरी मालूम हो तो आर्सेनिक ६, ३०, फोड़ा बैठानेकी इच्छा हो तो हिपर सलफर ३० पर यदि पकाना हो तो उसीका विचूर्ण ३। पारद दोष हो तो यह बहुतही लाभदायक है। पीप बहुत परिमाणमें निकले या फोड़ा पुराना हो तो साइलिसिया ३०। छोटा छोटा फोड़ा हो तो आर्निका ६। बारबार फोड़ा हो तो सलफर ३०। फोड़ा गलकर उसमेंसे दुर्गन्धित स्राव निकले तो एक सौ भाग *गर्म जलके साथ एक भाग कैलेण्डुला ० मिलाकर फोड़ेकी* जगह धो देनी चाहिये।

अङ्गुलीका घाव (Whitlow).

नख खूब छोटा करके कटवाने, चोट लगने या जल जाने अथवा कोई विषाक्त पदार्थ रक्तस्थ होनेसे अंगुलीका अग्रभाग प्रदाहयुक्त होकर उसमें रीम उत्पन्न हो जाता है। रोग कठिन हो जाने पर मृत्युतक हो सकती है।

चिकित्सा।—रोगकी पहिली अवस्थामें या जब दर्द हड्डीतक फैल जाय, उस अवस्थामें साइलिसिया ३०। ज्वर रहनेपर साइलिसियाके साथ बेलेडोना ६ (पर्यायक्रमसे) अंगुलीका अग्रभाग बहुत सूजकर कुछ काले रंगका होजाये

और जलन तथा दर्द हो तो आर्सेनिक ६ (रोगकी तेजीवाली अवस्थामें) असह्य दर्द पैदा होनेपर मार्कसल ६, हिपर सल-फर ६, ट्टैमोनियम ६, एमन कार्ब ५०० नाइट्रिक एसिड 0 या डायोस्करिया 0 या फसफोरस 0 आक्रान्त स्थान पर लगा देनेसे दर्द कम हो जाते हैं।

पृष्ठव्रण (Carbuncle).

यह एक प्रकारका बड़ा चिपटा तथा गोलाकृति दूषित फोड़ा होता है। बहुमूत्रके रोगीको पृष्ठव्रण होनेसे, जीनेकी आशा बहुत कम रहती है। गरदनमें या गरदनके नीचे अथवा कमरमें यह फोड़ा होता है। इसका आकार हंसके अण्डेकी भांति होता है। कभी कभी एक बड़े कमला नीबूकी तरह हो जाता है। सामान्य सूजन या फोड़ेकी भांति ठीक मध्यस्थलमें एक मुंह न होकर कई छोटे छोटे मुंह होजाते हैं, और इन सब मुंहोंसे पतले पीबकी तरह क्लेद निकलता है। पहिले थोड़ी जगह पर अधिकार जमाकर फिर धीरे धीरे फट जाता है। यह सूजन पहिले लाल, फिर कुछ काले रंगकी हो जाती है। साधारणतः ३।४ सप्ताहके बाद आक्रान्त स्थान पर उसके [illegible] सड़ जाता है। ज्वर, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

चिकित्सा।—आक्रान्त स्थल स्फीत, लालरंगका और जलनके साथ सूई बेधनेकी तरह दर्दके लक्षणमें एपिस मेल ३। व्रण सड़ना आरम्भ हो तो आर्सेनिक ६, ३०। आक्रान्त स्थान लाल रंगका और चमकीला खोंचा बेधनेकी तरह दर्द, ऐंठने तथा चिड़िक मारनेकी भांति दर्द, निद्रावेश होना पर नींदका अच्छी तरह न आना, इत्यादि लक्षणोंमें बेलेडोना ३x, (पीप उत्पन्न होनेके पहिले प्रदाहित अवस्थामें बार बार बेलेडोनाका प्रयोग उत्तम होता है)। ज्वालाकर वेदनाके साथ रक्तस्राव शील (दुर्गन्धित पीप मिला हुआ), बल घटानेवाले व्रणमें कार्ब्बोभेज ६, ३०। तेज दर्द और जलनके साथ दुर्गन्धित पीप निकलना और निम्नस्थ विधानतन्तु गलना आरम्भ होनेपर साइलिसिया ३०, लैकेसिस ६। टेरेण्टुला क्युबेन्सिस यन्त्रका निवारणके लिये एक बहुत ही उत्तम औषधि है।

गर्म जलमें फलालेन भिंजाकर सेंक देनेमें भी लाभ होता है। मैदा या तीसीकी पुल्टिस देनेसे टटेनी हर जाती है।

कई दूसरी दूसरी चर्म्मरोगकी दवायें।

घमौरीकी दवा।—एकोनाइट और रसटक्स थोड़े गर्म जलमें थोड़ा घोलकर बदनपर मलनेसे लाभ होता है।

बदनका फटना।—सर्दी या जाड़ेके दिनोंमें फटनेसे आर्सेनिक।

मोछमें दाद ।—लाइको पोडियम, मार्क-आयड ग्रैफाइटिस, ऐण्टिम क्रूड, सलफर ।

सेंहुआकी दवा ।—कैल्किकार्ब्ब एसिड नाइट्रिक, नैट्रम म्यूर, कैन्थारिस, ग्रैफाइटिस, सलफर ।

मुखव्रण ।—ऐण्टिमक्रूड, एण्टिमटार्ट, कार्व्वो ऐनिमेलिस, आर्सेनिक, पल्स, कैलि-बाइक्रम, पैट्रोल, ऐसिड फस, सलफर ।

दद्रु वा दाद ।—हिपर सलफर, फसफोरस । ऐसिड नाइट्रिक, रसटक्स, सीपिया, ग्रैफाइटिस, सलफर । उपरोक्त दवायें ६ से ३० क्रम तक दी जा सकती हैं ।

---

१३ स्त्रीरोग ।

स्त्रीरोग चिकित्सामें प्रवृत्त होनेके पहिले पाठकगणोंको स्त्रियोंके जननेन्द्रिय सम्बन्धमें निम्न लिखित उपयोगी बातें स्मरण रखनी चाहिये ।

१ । स्त्रियोंके पेडुमें मूत्राधार और मलभाण्डके बीचकी जगहमें जरायू (Uterus) है । यहां एक खाली थैली है जिसका आकार अमरूत या नाशपाति फलकी भांति है । इस जरायूके गड़हेके बीचमें बच्चा नौ मासतक रहता है । यह

यह पर्दा उठानेकी स्पर्धा रखता है? दूरसेही उस अचिन्त्य गूढ़ महाशक्तिको कोटि कोटि प्रणाम करके हम लोग इस समय प्रस्तुत विषयका अनुसरण करते हैं अर्थात् स्त्रियोंके रोग और उनके निवारणकी आलोचना करनेमें प्रवृत्त होते हैं।

स्त्रियोंका सब रोग निम्न लिखित आठ भागोंमें बांटकर प्रत्येककी चिकित्सा यथा क्रमसे लिखी जाती है।

(१) आर्त्तव व्याधि।
(२) जरायुकी व्याधि।
(३) डिम्बकोषका रोग।
(४) योनिका रोग।
(५) कामोन्माद।
(६) वन्ध्यात्व।
(७) मेरुदण्डकी पीड़ा।
(८) पिक्र चक्षु अस्थि वेदना।

---

(१) आर्त्तव व्याधि।

(Disorders of Menstruation.)

ऋतु सम्बन्धीय रोगोंमें नीचे लिखे प्रधान रोगोंका विवरण वर्णन किया जायेगा।

(क) पहिले रजस्रावमें विलम्ब (ख) रजोरोध (ग) अनियमित ऋतु (घ) अनुकल्प रजः। (ङ) स्वल्प रजः (च) अति

रज: (छ) बाधक वेदना (ज) श्वेत प्रदर (झ) रजो निवृत्ति (ञ) हरित् रोग।

(क) पहिले रजःस्रावमें विलम्ब।

(Delayed Menstruation).

हम लोगोंके देशकी स्त्रियोंको साधारणतः १२।१३ वर्षकी अवस्थामें पहिले रजःस्राव प्रारम्भ होकर ४०।५० वर्षकी अवस्थातक प्रति महिनेमें नियमितरूपसे रजःस्राव हुआ करता है। किसी किसी बालिकाकी यौवनावस्था हो जाने पर भी रजःस्रावमें देर होती है; या पहिले एकबार रजःस्राव होकर फिर बन्द हो जाता है। मानसिक दुर्बलता या बहुत दिनोंतक कोई रोग भोगनेसे, शारीरिक दुर्बलता या रक्तस्राव की अल्पताके कारण और योनिमुखकी आवरक झिल्ली न फटनेके कारण पहिले रजो दर्शनमें देर होती है। लक्षण :— माथा भारी और दर्द, नाकसे रक्त गिरना, कलेजा धड़कना, स्तन प्रदेशमें रक्तबोध स्पन्दन और जंघेमें भारीपन तथा पेड़ूमें दर्द।

चिकित्सा।—पल्सेटिला ३x, ३०। पेट और पीठमें दर्द, सिरमें दर्द, अरुचि, सदा जाड़ा मालूम होना, आलस्य, निद्रा, कलेजा धड़कना, रक्तहीनता। इन लक्षणोंके साथ यदि मोटापन हो तो कैल्केरिया ६।

एकोनाइट ३x।—एकबार रजःस्राव होकर एकाएक सर्दी लग कर या भयके कारण बन्द हो जाना।

ब्रयोनिया ६ या १२।—रजःस्रावके बदले नाक या मुंहसे रक्त निकलना, सूखी खांसी, वक्षस्थलमें सूई बेधनेकी भांति दर्द, कोष्ठबद्ध।

सिमिसिफियूगा ६x।—डिम्बकोषके स्नायुशक्तिकी क्षीणताके कारण रजोलोप। शिरमें दर्द, नींद न आना, बायें अङ्गमें (विशेष करके बायें स्तनमें) दर्द। शारीरिक दुर्बलता दूर करनेके लिये कैलकेरिया-कार्ब ३० और सल्फर ३०। रक्तकी अल्पताके कारणसे हो तो फेरम ६ और चायना ६।

(ख) रजोरोध (Amenorrhœa).

रज:स्राव आरम्भ होकर फिर बन्द होजाय, आलस्य परायणता, सङ्गमदोष, ऋतुके समय अधिक परिमाणमें बरफ खाना, सर्दी लगना, पानीमें भिंगना, घूमना, एकाएक शोक, दुःख या भय इत्यादि कारणोंसे रजोरोध हो जाता है।

चिकित्सा।—*मस्तकमें रक्तसञ्चारजनित माथा* घूमना, आंखोंमें अंधेरा छा जाना और आंखके गड्ढेमें दर्द, गर्भाशय और डिम्बाशयमें तेज दर्द, प्रलाप आदि लक्षणोंमें बेलेडोना ३। नाकसे रक्त गिरे, माथा घूमे, वक्षस्थल और बगलमें सुई बेधनेकी भांति दर्द हो, सूखी खांसी और पाकस्थलीमें दर्द हो तो ब्रायोनिया ६। पेड़ूमें तेज दर्द (परि-

श्रममें हृदि) विमर्ष चित्त; निर्ज्जन प्रियता लक्षणमें। मीपिया ६। सर्दी लगकर रजोरोधमें ऐकोनाइट ६। मानसिकक्लेश जनित पीड़ामें इग्नेसिया ६। ठण्ढा या रक्तकी अल्पताके कारण रजोरोध हो तो कैल्क-कार्ब ६। रक्तकी अल्पता और उदरामयके साथ रजोरोध हो तो फेरम ६। ऋतु बन्द होकर यदि रोगिणी पेटकी दर्दसे छटपटावे तो जेलसिमियम ६। गर्म जलसे या गर्म गोमूत्रमें फुलालेन भिजाकर कमरमें सेंक देनेसे लाभ दिखाई देता है।

(ग) अनियमित ऋतु।

(Irregular Menstruation).

ऋतुका निर्दिष्ट समय है। स्त्रियोंके प्रति मासके २८ वें दिनमें जरायुद्वार होकर कुछ कालिमा लिये लाल रंगका पतला स्राव निकलता है। ३ से ५ दिनोंतक यह स्राव रहता है, इस स्रावका परिमाण एकसे डेढ़ पावतक होता है। उल्लिखित नियमोंके व्यतिक्रम होनेसे दवा करना कर्त्तव्य है। अनियमित रजस्रावका लक्षण:—२।३ मास रजःस्राव होकर एकाएक बन्द हो जाना, कभी कभी ४।५ मास रज बन्द रहकर अचानक अधिक स्राव होना। किसीको १०।१५ दिनों तक थोड़ा थोड़ा स्राव हुआही करता है।

चिकित्सा।—पल्सेटिला और सायना ६।—पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करने पर अच्छा लाभ दिखाई देता है।

"रजोरोध" "स्वल्परज" और "अति-रजः" चिकित्साकी औषधावली लक्षणानुसार इस रोगमें प्रयोग की जाती है।

(घ) अनुकल्प रजः।

(Vicarious Menstruation).

रजो लोप (या अल्प रजःस्राव) के कारण नाक, फुसफुस (श्लेष्माके सहित रक्तस्राव) पाकस्थली (रक्त वमन) और गुह्यद्वारसे रक्त निकलता है।

चिकित्सा।– नाक, गुह्यद्वार या शरीरके दूसरे कोई रास्ते होकर रक्तस्राव, रक्तवमन, कलेजेमें दर्द, खांसी (श्वेत प्रदर रहे या न रहे) आदि लक्षणोंमें हैमामेलिस १ और ब्रायोनिया ६ (पर्यायक्रमसे)। गाढ़ा लालवर्णका रक्तस्राव होनेसे इपिकाक ६। खांसते खांसते रक्तस्राव, दुर्बलता, मुखमण्डलकी रक्तहीनता आदि लक्षणोंके साथ यक्ष्मा रोगके पूर्व लक्षण दिखाई देने पर मिलिफोलियम ३x। नाक और कानसे रक्त निकले, स्तनमें दर्द हो, बदन गर्म हो तो पल्सेटिला ६।

(ङ) स्वल्प रजः।

(Scanty Menstruation).

नाना प्रकारके रोग भोगकर रक्तकी अल्पताके कारण स्वल्प रजःस्राव होनेसे, मूलरोगकी दवा करना चाहिये।

जरायुके दोषसे थोड़ा रजस्राव होनेसे नीचे लिखी दवायें दी जाती हैं।

चिकित्सा।—क्लान्ति, शारीरिक और मानसिक अवसाद, पीला त्वक्, ठंडी हवा असह्य, वमन, सिरमें दर्द और रक्तकी स्वल्पतामें सिमिया ३० (चौगाई) और वायुप्रधाना स्त्रियोंके लिये यह और भी उपयोगी होता है। सामान्य परिमाणमें जलवत् स्राव, सब शरीर पीला, जाड़ा लगना, रजस्रावके पूर्व और उसी समय कमरके दर्दमें पल्सेटिला ६, आहार और वायु सेवनके अभावके कारण अथवा किसी प्रकारके क्षय करनेवाले रोगके कारण थोड़ा रजःस्राव होनेसे फेरम ६। कोष्ठबद्ध और उसीके साथ बदनके स्तनड़ेमें फोड़िया रहनेसे ग्रैफाइटिस ६। शारीरिक दुर्बलता और उदरामय रहनेसे, फसफोरस ६, प्लाटिना ६, कार्बोनिस ६, और सल्फर ६। समय समय प्रयोग किया जाता है।

(च) अतिरजः (Menorrhagia).

इस रोगमें जरायु होकर बहुत रजःस्राव होता है। यह निर्दिष्ट समयके पूर्व या बादमें भी हो सकता है और थोड़े या अधिक दिनोंतक रह सकता है। नाना प्रकारके कारणोंसे रज अधिक जाता है, उसमें जरायुके: यान्त्रिक क्रियाका परिवर्तन, जरायुकी क्रिया दूषित होना, जरायु या जरायु नलीमें क्रिया डिम्बकोषमें रक्त संचय इत्यादि कारणोंसे यह रोग हो

सकता है। अतिरिक्त संगम, अधिक पुष्टिकर पदार्थ भोजन। उत्कट मानसिक चिन्ता, या बार बार गर्भसंचार होना ही इस रोगका कारण कहा जाता है। आलस्यभाव, बदनमें दर्द, जंभाई उठना, बदन ऐठना, सिर भारी और दर्द। पीठ और कमरमें दर्द, अरुचि पैरका तलवा ठण्ढा और आड़ा मालूम होना इत्यादि लक्षण इस रोगमें देखेजाते हैं। बहुत परिमाणसे रक्तक्षयके कारण, चेहरा पीला, आंखें गढ़ेमें धंसी हुई, हाथ पैर ठंढे, कान बन्द, दृष्टि और नाड़ी क्षीण तथा मूर्च्छा इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा।—शारीरिक दुर्बलता और गर्भाशयकी क्रियाके बिकारके कारण अधिक दिनोंतक रहनेवाला प्रचुर रजःस्रावमें आर्सेनिक ६। रजोनिवृत्तिके समय, गर्भावस्थामें और प्रसवके अन्तमें—पीठमें और पेडुमें दर्द रहने पर पलसेटिला ६। मूत्रयन्त्रमें प्रदाह, क्षय दृष्टि, डिम्बाशयमें दर्द। लाल वर्णका अधिक रज निकलनेसे स्याबिना ६ (स्थूलाङ्गी स्त्रियोंके लिये स्याबिना विशेष लाभदायक है)। सदा वेदना शून्य बहुत और पतला रजःस्राव, कभी काले रंगका कभी थक्का थक्का। कभी दुर्गन्धमय रक्तस्राव, सामान्य उठने बैठनेमें स्रावका बढ़ना, सब बदन ठण्ढा वा भीतर उत्ताप, जरायुके मुहमें चीटी चलनेकी तरह सुड़सुड़ाहट, पेटमें दर्द और योनिकी ओर दाबके साथ लाल काला चिप चिपा अलकतरेकी भांति काला स्रावमें क्रोकस सैटाइवा ३ (आरामके समय आयना ६

और पीड़ित अवस्थामें क्रोकस प्रयोग करनेसे विशेष फल पाया जाता है)। गाढ़े अलकतरेकी भांति अधिक स्राव। पट्टा और योनिमें दर्द मालूम होना मानो पेटकी नाड़ी इत्यादि खींचकर योनिद्वारसे निकल पड़ेगी, संगम प्रवृत्तिका आधिक्य, जरायुमें प्रदाह और सर्वदा तन्द्रायेस लक्षणमें प्लैटिना ६ (इसके साथ क्रोकस पर्य्यायक्रमसे प्रयोग करनेसे लाभ दिखाई देता है, विशेष करके पुरानी दशामें यह औषध उपयोगी है) ऋतुके पहिले प्रसव वेदनाकी तरह तेज दर्दके साथ कड़े दाने मिले स्राव, रह रहकर दर्द आदि लक्षणमें कैमोमिला १२। वेदना-शून्य बहुत अधिक परिमाणमें पतला, कभी गाढ़ा काले रंगका रक्त स्राव, रजःस्रावके कारण कमजोरी, कानमें भों भों शब्द, जरायु मुखमें जलन, प्रति तृतीय दिनको दर्दकी वृद्धि लक्षणोंमें चायना ६। नाभि प्रदेशमें दर्द और वह दर्द जरायुतक फैली हुई, अविरत वमनेच्छा, माथा घूमना, माथेमें दर्द, चेहरा सूखा और ठंढा, गाढ़ा लालवर्णका रक्तस्राव होनेसे इपिकाक ६। (उल्लिखित लक्षणमें प्रसवान्तिक आकस्मिक रजःस्रावमें भी यह उपकारी होता है) मूत्रनाली और गुह्यद्वारमें प्रदाह रह रहकर बहुतसा घोर लाल वर्णका रजःस्राव (विशेष करके गर्भस्रावके बाद) हो तो इरिजिरन ३x। चोट लगनेके कारण जरायुमें अधिक रजस्राव होनेसे आर्निका ६ और हैमामेलिस ३ उपकारी है। नियमित समयके बहुत पहिले योनिद्वारमें खुजली और ज्वालाके साथ श्वेत प्रदरयुक्ता

इत्यादि लक्षणयुक्त वायु और पित्त प्रधाना उग्र प्रकृतिकी स्त्रियोंके लिये बाधक वेदनामें।

ककुलस ६।—पेट फटनेकी भांति पेटमें दर्द मालूम होना, ऋतुस्रावमें भार और मांस हिलनेमें कष्ट बहुत थोड़ी मात्रामें काला रक्त निकलना या श्वेतप्रदर। सिरमें बहुत दर्द और सिर घूमना, पेट फूलना, कभी कभी मूर्च्छा और वमनेच्छा।

हेलोनियस ३x।—जरायुमें अतिशय दर्द, काले सूतकी तरह स्राव।

नक्सभमिका ६, ३०।—बिना समयकेही थोड़ा रक्तस्राव, जाड़ा मालूम होना, अग्निमान्द्य, [illegible] है।

सिकेली-कर ६।—नियमित समयके बहुत पहिले दाना दाना, मैला और दुर्गन्धस्राव, पेडुमें तेज दर्द मानो पेटके सब पदार्थ योनिद्वार होकर बाहर निकल पड़ेंगे, सब अङ्गोंमें (विशेष करके हाथ पैरमें) ठंढा पसीना क्षीण नाड़ी, मूत्राशयमें और मलाशयमें कनकनेकी तरह दर्द, कभी कभी वमन, इसके प्रभावके कारण तेज दर्द और दुर्बलतामें।

[illegible] ६ [illegible] और [illegible] वेदना

[illegible] ६।—[illegible] भांति दर्द [illegible] वेदनाकी भांति दर्द

[illegible] ३ [illegible] दर्द [illegible]

गर्मी रोगके बाद खेतप्रदर होनेसे यह औषध उपकारी है)
पहिले धुएँला और गाढ़ा स्राव होकर ५।६ दिनके बाद
उसमें पतला पानीके भांति या मांसके धोवनके पानीके
तरह दुर्गन्ध निकलने पर।

क्रियोजोट ६।—ऋतुके ४।५ दिन बाद पीले रंगके कच्चे
धानकी गन्धके भांति स्राव, जरायुके बाहर सूजन, सूई गड़ानेकी
भांति जलन और खुजली, जहांमें स्राव लगकर फोड़ा और
पीठमें दर्द।

बोभिष्टा १२।—सफेद अण्डेकी तरहके रंगका पुराना
खेतप्रदर और उसके मायर्ही सिर बड़ा मालूम होना।

सिपिया।—प्रसव वेदनाकी तरह दर्द, कोठबद्ध कुछ मल
रंगका दुर्गन्धित स्राव या दुर्गन्धमय पानीकी तरह स्राव
निकलनेसे (बीणाङ्गी और वायु प्रधाना स्त्रियोंके लिये यह
विशेष उपकारी है।)

सलफर ३०।—पुराने खेतप्रदरसे बहुत दिन भोगने पर
दो एक मात्रा सलफर भी उपकारी होता है।

इसमला या हल्दीके रंगका स्राव होनेसे मार्क-सल,
सिपिया, कैलकेरिया कार्ब, पायना और म्याइम्-मिउर।
पानीकी तरह पतले स्रावमें म्याविना, फेरम और पलस्, तीव्र
ज्वालाकर स्रावमें—एसिड नाइट्रिक, एलमेरिना, क्रियोजोट,
चार्सेनिक, दुग्धवत् स्रावमें माईलिसिया, कालकेरिया कार्ब

कलेजेमें धड़कन, हिष्टीरिया) वमनेच्छा, कोष्ठबद्ध, पेटमें वायु जमा होना, बहुत पसीना और पेशाब इत्यादि लक्षण दिखाई दे तो औषध अवश्य करना चाहिये। रजोनिवृत्तिके कुछ पहिले किसी किसी स्त्रीका शरीर अच्छा और सबल मालूम होने लगता है।

चिकित्सा।—लेकेसिस ६—(इस रोगकी प्रधान औषध है) रह रह कर गर्मी मालूम होना, सिरमें जलन नींदके बाद रोगका बढ़ना।

मेड्लेरिया ३x या एमिल नाइट्राइट ३।—(वायविक लक्षणमें) यदि लैकेसिससे कोई लाभ न हो।

बहुत पसीना या लार निकलनेमें ज्याबोरेण्डी २x, सिरकी दर्दको प्रबलतामें ग्लोनोइन ३, सिरमें, चांदीमें वैसी जलन मालूम हो तो चाइना ६ या फेरम ६ पाकस्थली खाली मालूम होनेसे हाइड्रोसियानिक एसिड ६।—रोगिणी हृष्ट पुष्ट होनेसे तो डाक्टर लिडाम, एकोनाइट ३ देनेको कहते हैं।

नियम।—कुछ गर्म अम्ल खान, और जल्द पचने-वाली वस्तु भोजन, समय पर सोना, शारीरिक परिश्रम थोड़ा करना।

(त्र) हरित् पीड़ा (Chlorosis).

इस रोगमें रक्तके लाल दानोंका भाग कम हो जाता है.

नेट्रम मिउर ३० ।—जंघाके जोड़में सर्दी मालूम होना, पेडुमें भार मालूम होना, सूजन, कोष्ठबद्ध, ऋतुबन्द या बीच बीचमें कपड़ेमें दाग लगना, उत्कण्ठा इत्यादि लक्षणोंमें ।

कैलकेरिया ३०, सिपिया १२, प्लैटिना ६, फास्फरिक एसिड ६, सलफर ३०, प्राथाम ६, समय समय पर आवश्यक होनेसे सेवन करना चाहिये ।

नियम ।—सर्द जलमें (विशेष करके समुद्रके जलमें) स्नान । साफ हवा सेवन, दूध पीना, पामटकी (Bran) रोटी खाना, धूपमें इधर उधर घूमना । रोगिणीको आलस्यमें समय न काटना चाहिये ।

---

२ जरायुके रोग समूह ।

Diseases of the Uterus.

जरायुके रोगमें नीचे लिखे प्रधान रोगोंके विषयमें क्रमसे लिखे गये हैं (क) जरायुकी उग्रता, (ख) जरायुकी मूर्च्छा (ग) जरायु प्रदाह (घ) जरायुके भीतरमें वायु या जल जमा होना (ङ) जरायुमें अर्बुद (च) जरायुकी स्थानच्युति या नाभी उपड़ना ।

(क) जरायुकी उग्रता (Hysteralgia).

जरायुमें दर्द मालूम होना, समस्त वस्तिमें कनकन् दर्द, यह दर्द स्नायविक। ऋतुके समयमें और अधिक चलनेमें वृद्धि पाता है। भूख न लगना, अस्थिरता (बेचैनी) वमनेच्छा, अनिद्रा पाकाशयमें गड़बड़ इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।—सिमिसिफियुगा १x, ३०।—इस रोगका प्रधान औषध है।

आर्निका ६।—ऋतुकी अवस्थामें बहुत परिश्रम या प्रसवके बाद संचालनसे यह रोग होने पर।

इस रोगमें आमाशयके गड़बड़ या पाकस्थलीमें दर्द रहने पर कैमोमिला ६, नक्सभमिका ३० या पलसेटिला ६ इत्यादि देना चाहिये।

(ख) जरायुज मूर्च्छा या हिष्टिरिया।

(Hysteria).

[illegible]

चिकित्सा [illegible]

मूर्च्छावस्थामें रोगिणीके मुह या नासारन्ध्र बहुत थोड़ी देरतक मूंद रखनेसे, थोड़ा ऊंचे परसे झारीसे उसके चेहरे पर इस तरह जल डालना चाहिये, जिससे उसके सांस लेने और छोड़नेमें बहुत थोड़ी देरतक व्याघात पहुंचे। इसके बाद रोगिणीको जोरसे सांस लेना ही पड़ेगा और यह होतेही तुरन्त उसकी मूर्च्छा भंग होगी।

(ग) जरायु प्रदाह (Metritis).

यह दो प्रकारका है—(तरुण) नया और (पुरातन) पुराना।

तरुण जरायु प्रदाह।—प्रसव या गर्भस्रावका रस दूषित होनेसे साधारणतः तरुण जरायु प्रदाह हो जाता है, बहुत जाड़ा मालूम होना, प्रबल ज्वर और पेड़ूमें दर्द होना इसके प्रधान लक्षण हैं। ये लक्षण दिखाई देते ही "भिराट्रम भिरिड १x" देना चाहिये फिर "[illegible] ३०" भी आवश्यक हो सकता है। बेलेडोना ३, कार्बोभेज ३, रास-टक्स ३ या सेकेलिस ३x समय समय पर उपयोगी होकर लाभ दिखा सकता है। यह रोग प्रदाह[illegible] घातक है इसीलिये उपयुक्त चिकित्सक पर निर्भर रहना चाहिये। यदि रस दूषित न हो और अपना कोई कारण नहीं है तो [illegible] मात्रा पल्सेटिला ३ देनेसे ही रोग घट जायेगा।

पुरातन जरायु प्रदाह।—प्रसवके बाद जरायु संकुचित

न होनेपर अथवा कृत्रिम उपायसे गर्भसंचार न होनेपर या बहुत दिनोंतक हरित पीड़ा भोगनेपर, जरायु क्रमशः वेदनायुक्त, कड़ा और बड़ा हो जाता है। इसीको पुराना जरायु प्रदाह कहते हैं। पेटमें भार मालूम होना, बाधक वेदना स्तन या कमरमें दर्द पहिले रजःस्राव पीछे रोध स्वामी संसर्गमें दर्द, मूत्रस्थली और मलद्वारमें वेग, हिष्टिरिया इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।—सैवाइना ३x।—थेरी मात्रामें रक्त-स्राव होनेसे, रक्तस्राव परिष्कार, लाल, घटघटा या जलीय होने पर।

बेलेडोना ३x।—प्रकृत जरायु प्रदाहमें, डाक्टर मेयिमन एकमात्र बेलेडोनाके ऊपरही निर्भर रहनेके लिये कहते हैं। विशेषतः "जरायु प्रदेशमें जलन या दाब मालूम होना, मानो पेटके भीतरसे यन्त्र बाहर निकल पड़ेंगे" इन लक्षणोंमें बेलेडोना उपयोगी है।

लिलियम १२।—प्रसवकी दर्दकी भांति दर्द, थोड़ा रजः स्राव, मलद्वारमें खुजली।

हाइड्राष्टिस ३।—जरायु घाव, जरायु मुख और चन्द घटका घाव, गाढ़े पीले रंगका प्रदर स्राव।

आरम्-मेटालिकम ३०, प्लाटिना ६, लिलियम ६, सैकेलिन

थूजा ६।—यदि दूषित अर्बुदकी अंकुरावस्था बीत जाय आर्सेनिक आयोडसे लाभ न दिखाई दे तो, उपदंशजनित अर्बुदमें भी थूजा लाभदायक है।

(च) जरायुकी स्थानोच्युति या नाला उखड़ना।

(Displacement of the Uterus)

कसकर कपड़ा पहरना, उछलना, कूदना, चोट इत्यादि कारणोंसे जरायु कभी कभी अपने स्थानसे हट जाता है। इसीका नाम नाभी टलना अथवा नला हटना या जरायुकी स्थानोच्युति है। नाभी टलना साधारणतः दो प्रकारका है—(१) स्थानसे हटकर वस्ति कोटरमें ठहरना। (२) योनिके बहिर्भागमें निकलना। इन दोनों नाभी टलनेके रोगमें जरायु या सम्मुखभागमें हट जाता या झुक जाता है, नहीं तो पीछेकी ओर भी हट जाता या झुक जाता है। पेड़ूमें दर्द (जरायुके स्थानमें) दस्त पेशाबमें दुःख होना, श्वेतप्रदर, रजःस्राव या रजकी अल्पता। कभी बाधक, बन्ध्यात्व, इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

सिपिया १२।—इस रोगकी उत्कृष्ट दवा है।

बेलेडोना ६, फेरम आयोड ३x चूर्ण, मिकेली ६, स्टैनाम ६ लक्षणानुसार समय समय प्रयोजनीय होते हैं।

ब्रायोनिया ३x।—बेलेडोना लक्षणसे अधिक कड़ा और स्तनोंमें भयानक दर्द।

फाइटोलैक्का २x।—यदि दो दिन ब्रायोनिया फायदा न हो तो इसे देना।

हिपार सलफर ६x। पीप होने पर।

सिलिका ३०।—फोड़ाके बाद नासूर (Sinus) होनेपर।

(ग) स्तनमें अर्वुद (Tumour).

फाइटोलैक्का ३x।—पुराने अर्व्बुद रोगकी बढ़िया दवा है।

वाह्य प्रयोग।—फाइटोलैक्का एक भाग बीस गुने पानीमें मिलाकर स्तनके उपर पट्टी रखना।

स्तनमें दूषित अर्वुद (Cancer).

हाईड्रैटिस १x।—यह दूषित अर्वुद बढ़िया दवा है।

वाह्य प्रयोग।—हाइड्रैसटिस 0 एक ड्राम, चार औन्स पानीमें मिलाकर धोना चाहिये।

कनायम ३, या साइकिउटा ३।—लगातार दो महीने आर्सेनिक खानेसे फायदा न होने पर इसे देना चाहिये।

स्तन प्रदाह या ठुनका देखो।

(८) मेरुदण्डका उपदाह।

(Spinal Irritation).

शरीर क्षीण होनेसे मेरुदण्डके स्थानमें विशेषसे निवद्ध दर्द

होते हैं। इसीको मेरुदण्डका उपदाह कहते हैं। दर्द होनेवालास्थान दबानेसे दर्द बढ़ना यही इसका प्रधान लक्षण है।

आर्णिका ३।—आघात जनित उपदाह सिमिसिफिउगा ३।—जरायुके किसी रोगके साथ उपदाह।

रसटक्स ६।—आमवातके साथके उपदाहमें।

आर्सेनिक ६।—स्नायुशूलके साथके उपदाह में।

नियम।—सुसुम गर्म पानीसे पीठ धोना और साफ हवामें टहलना उपकारी है।

(८) पिकचञ्चु-अस्थि प्रदेशमें दर्द।

(Coccygodynia).

पिक चंचु हड्डी * की पेशी और विधान तन्तुमें कभी स्नायुशूल (Neuralgia) के तरह तेज दर्द मालूम होता है, इसीका नाम पिकचञ्चु अस्थि प्रदेशका दर्द कहते हैं। उठने, बैठने, मलत्याग, ऋतु और सगम कालमें दर्द होना यही इसका प्रधान लक्षण है। चोट वगैरह लगनेसे यह रोग पैदा होता है।

चिकित्सा।—चोट आदि लगनेसे हुई दर्दमें—आर्णिका ३ या रुटा ३x उपकारी है।

---

* मेरुदण्ड ग्रासभागको "पिकचञ्चु अस्थि कहते हैं।

पदार्थ खाना अधिक भोजन या उपवास अपकारी है। दूध, डाल, फरही, चिवडा, पूरी आदि पुष्टिकर और हलका भोजन करना चाहिये। सोंधा मिट्टीके बरतनका टुकडा आचार खराब घीका बनाया पदार्थ खाना मना है। जो सब द्रव्य खानेसे अजीर्ण होनेकी सम्भावना हो उसे विष भांति देखना, कारण अजीर्णके दस्तके साथ गर्भका बालक भी निकल सकता है। गर्भावस्थामें नाना प्रकारके वस्तुकी खाने की इच्छा होती है, जिस द्रव्यके खानेसे गर्भस्थ शिशुके खराबीका डर न हो वैसा पदार्थ अवश्य खानेको देना चाहिये।

(ख) पोशाक ।—कपड़ा ढीला पहिरना चाहिये, कारण कमर को खूब कस कर कपड़ा पहिरने से बालक विकलांग या मराहुआ बच्चा पैदा होता है। तथा भींगा और मैला कपड़ा भी पहिरना अच्छा नहीं है।

(ग) मेहनत ।—रोज साफ हवामें टहलना और नियमित परिश्रम करना उचित है। अधिक परिश्रम करने से गर्भपात होता है और बिलकुल आलसीके भांति बैठे रहने से प्रसवके समय प्रसूतीको कष्ट और बालक निस्तेज होता है। गर्भावस्थामें (खासकर प्रथम तीन महीने में) गाडी, पाल्की, किस्ती या रेलकी सवारी करना, दौडना, भारी चीज उठाना, कूदकर या एक पैरसे चलना खासी मद्यपान

चादि मना है कारण इस से गर्भपात होनेका डर है। गर्भावस्थाके दश महीने एक जगह रहना चाहिये।

(घ) मन।—मन सर्व्वदा निरुद्वेग और प्रसन्न रखना चाहिये। माताके मनका भाव गर्भस्थ शिशुके मनके उपर काम करता है; गर्भावस्थामें नारीका मन भयार्त्त रहनेसे भावी सन्तानभी डरपोक होती है। गर्भिणीका मन उदास होनेसे—विषण्ण स्वभाव लिये पैदा होती है। (इस अध्यायमें पहिले गर्भावस्था और पीछे प्रसवावस्था के बारेमें लिखा जायगा)।

गर्भावस्थामें गर्भिणीको बड़ी सावधानीसे रखना चाहिये। गर्भ संचारसे प्रसवकाल तक साधारणतः नाना प्रकारके उपसर्ग होते हैं और उससे गर्भिणीको अतिशय कष्ट भोगना पड़ता है। नीचे प्रधान उपसर्गके विषयमें लिखा जाता है।

मूर्च्छा।—मूर्च्छा होते ही मुख पर ठंढा पानीका छींटा देना और मस्कस ० या स्पिरिट कैम्फर सूंघाना चाहिये। मूर्च्छा छूट जाने पर नीचे लिखी दवायें दी जाती हैं। रस रक्तादि क्षयसे हुई मूर्च्छामें चायना ६, ३०; डर जानेसे हुई मूर्च्छामें—ओपियम ६, शोकि दुःखादिजनित मूर्च्छामें—इग्नेशिया ६; हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीणकी मूर्च्छामें—डिजिटेलिस ६; स्नायविक दुर्बलता के कारणकी मूर्च्छामें—मॉस्कस ६।

शिरका भारी पन और घूमना।—रक्ताधिक्य से हुए माथा घूमने और आंखके सामने काला काला दाग दिखाई देनेसे ऐकोनाइट ६। दप् दप् शिरःपीड़ा, आंख और मुख मंडल लालरंग तथा कानमें भों भों शब्द होनेके लक्षणमें वेलेडोना ३। माथेमें रहरह कर टनक और दर्दमें नक्सभमिका ३०। जरूरत होनेपर "शिरःपीड़ा" चिकित्साकी दवायोंमे चुनकर प्रयोग करना चाहिये।

दांतमें दर्द।—दांतके दर्दके साथ बुखार होतो ऐकोनाइट ३। स्नायविक उत्तेजना या अजीर्ण दोषके दन्त-शूलमें कैलकेरिया-फ्लोरिटा ६, मार्कियुरियाम ६, नक्सभमिका ३०, कैमोमिला १२, आर्गेटम-क्रूड ३ और क्रियोजोट १२ लक्षणा-नुसार प्रयोग करना चाहिये। "दन्तशूल" देखिये।

शोथ।—गर्भावस्थामें रक्त सञ्चालन क्रियामें बाधा होनेसे पैर जघा और स्त्री जननेन्द्रियमें शोथ होता है। आर्सेनिक ३०, चायना ४, एपिस ६ और फेरम ३० लक्षणानु-सार देना चाहिये। "शोथरोग" देखिये।

वमन और वमनेच्छा।—गर्भावस्थामें वमन, वमनेच्छा और मुहमें पानी आना यह तीनों उपसर्ग प्राय प्रातःकालको बढ़ता है। थोड़ेदिन इसी तरह होता रहता है फिर आपसे आप बन्द हो जाता है। यदि सहजमें

सिरमें दर्द, अग्निमान्द्य या वमनेच्छा रहे तो नक्सभमिका, ब्रायोनिया और सिपिया, उदरामय हो तो, आइरिस और सिराइम। कमर और पेटमें ऐंठना होनेसे कलोसिन्थ, किउप्राम, नक्सभमिका, माथरो पेट फूला रहे तो लाइकोपोडियम।

कब्जियत।—कलिन सोनिया १x इसकी प्रधान दवा है। दूसरी दवायें —नक्सभमिका ३०, ब्रायोनिया ६, सल्फर ३०, ओपियम ३०, प्लाम्बम ६। कोष्टबद्ध रोग देखिये।

उदरामय। मार्कियुराम सल्फर ६, चायना ६, एसिड-फस ६ सल्फर ३० और पोडोफाइलम ६।

कानोंकी जलन।—पल्सेटिला ६ और कैपसिकाम ६, इस दुःखदायी रोगका प्रधान औषध है। अम्लपित्त रोगमें हुई कानोंके जलनमें कल्केरिया कार्ब ६

अनिद्रा नींद न आना।। कफिया ६ इसकी प्रधान दवा है पहिली रातको नींद न आना और पिछली रातको नींद न आनेसे सल्फर ३०। अनिद्राके साथ ज्वर भी आता हो तो एकोनाइट ३०। पैरकी ऐंठन या दर्दके सबब नींद न आनेसे कैमोमिला ६ या भराइम ६।

इसपिरिक्कार सार्थामिस्या टिकरा आदि खानेकी इच्छा अधिक होनेसे कार्बोभेज ६। सफेद मिट्टी खानेकी इच्छा होनेसे कल्केरिया कार्ब ६।

ज्वर।—गर्भावस्थामें पहिले कई एक महीने ज्वर थोड़ा रहनेसे दवा देनेकी जरूरत नहीं है। यदि ज्वर न छूटे तो एकोनाइट ६ देना चाहिये।

दर्द।—पैर या पैरके तलवोंमें एकाएकी, ऐंठन, खेंचन या दर्द हो तो किउप्राम ६ या जेल्सीमियम ३ देना उचित है।

पायखानेके जगहमें खुजली हो तो बोराक्स ३ और पल्सा ६ इसकी बढ़िया दवा है। सोहागा पानीमें मिलाकर दिन-भरमें दो तीन बार स्त्री इन्द्रि धोना चाहिये।

पेट बड़ा होनेके अत्यन्त कष्टमें।—बेलेडोना ६ और नक्स मस्किटा ६।

पेटमें बालक हिलनेके कष्टमें। ओपियम ६ आर्णिका ३।

धातुकी बिमारी।—दूधके तरह धातु बहनेमें कैल्करिया ६ हल्दी या पानीके तरह धातु बहनेसे, सिपिया १२। धातुके बहनेम अत्यन्त कमजोर होने पर, चायना ६। यदि धातु बहने समय योनिम एक सुरसुराहट हो अथवा संगम करनेकी खूब इच्छा हो तो, प्लाटिना ६। "स्वेत प्रदर" देखो

स्तनमें दर्द — स्तन कड़ा, लाल, भारी और दर्द हो तो बेलेडोना ३। स्तन फूला, भारी किन्तु लाल न हो तो इस अवस्थामें ब्रायोनिया ३

स्तनके घुंडीमें जलन या घाव — बाट लगनेसे घुंडीमें

है, उस समय रोगिणीको अत्यन्त कष्ट होता है। इस लिये अच्छे वैद्यको देख लाना चाहिये यह रोग गर्भावस्थाके शेषभागमें या ठीक प्रसव कालमें होता है। ऐसे समय पर रक्तस्राव होना ही इसका विशेष लक्षण है (स्वाभाविक प्रसव वेदनासे श्लेष्मावत् पदार्थ मात्र निकलता है, कभी भी रक्तस्राव नहीं होता "प्रसवकी अवस्था" देखो)।

धातुदोष।— (Diathesis)।—माता पिताके कोई रोग होनेसे सन्तान पर असर करता है। गर्भावस्थामें प्रसूतिकाको निम्न लिखित औषध प्रत्येक मासमें एकबार सेवन करानेसे भावी संतान सबल होती है :—

कैलकेरिया-कार्ब ३०।—पिता या माताको गण्डमाला (Scrofula) या धातुग्रस्त होनेपर।

वैसिलिनाम २००।—यक्ष्मा या क्षय रोग कुलज होनेसे।

सोरिणाम ३०।—पिता या माताको दुर्गन्धयुक्त चर्मरोग रहने।

सिलिका ३०।—पिता या माताको अस्थि विकृति रोग (Rickets) होने पर।

वैराइटा-कार्ब ३०, आईयोडियम ३०, थूजा ३०, मार्क्युरियास ३०, कष्टिकाम ३०, सिफिलि ३० और सल्फर ३० रोगके लक्षण अनुसार प्रयोग करना चाहिये।

गर्भपात या गर्भस्राव (Abortion).

गर्भ संचारसे छः मास तक गर्भस्थ शिशु पतन होनेको "गर्भस्राव" कहते हैं। इस अवस्थामें लड़का बच नहीं सकता। अच्छी तरह उपचार न होनेसे प्रसूतीके जीवन नाशकी आशंका रहती है अर्थात् सात महीनेके बाद और नौ महीनेके पहिले जो सन्तान होती है उसको "अकाल प्रसव" कहते हैं। ऐसी अकाल प्रसूत सन्तान दीर्घायु भी होती है।

कमर और पेड़ूमें दर्द होनेसे समझना होगा कि लड़का पेटके नीचे खसक आया है, रक्त या श्लेष्मा निकलना यह गर्भपातका पूर्व्व लक्षण है। गर्भावस्थामें कसकर कपड़ा पहीरना, अधिक परिश्रम करना, गाड़ी, पालकी, नौका, रेल इत्यादि पर चढ़ना (विशेषकर गर्भावस्थाके प्रथम चार महीनेमें), दौड़ादौड़ि करना, गिर जाना, भारी चीज उठाना, अंगूठेके बल खड़ा होना, तसवीर टांगना या खटिया पर मसहरी लगाना, शरीरमें चेचकका होना, ज्वरसे पीड़ित रहना, स्वामी सहवास, तीव्र औषध सेवन इत्यादिसे स्त्री जननेन्द्रियमें पीड़ा होती है। अतिशय भय, भावना, शोकादि कारणसे गर्भस्राव होता है इस लिये उपरोक्त विषयमें खूब सावधान रहना चाहिये। जिसका एक मरतबे गर्भपात हुआ है फिर उसको गर्भपात होनेकी संभावना रहती है, इस लिये

गर्भ संचार होतेही खूब सावधान होना चाहिये। यह रोग बड़ा कठिन होता है, इस लिये विवेचना सहित चिकित्सा करना अत्यावश्यक है।

गर्भपात निवारण चिकित्सा।

स्याबाईना ३।—गर्भावस्थाके प्रथम तीन महीने तक गर्भस्राव होनेका सन्देह रहता है (अर्थात् दर्द होनेसे या रक्त दिखाई देनेसे हो)।

सिकेलि ३।—गर्भावस्थाके चतुर्थ या पञ्चम मासमें गर्भपातकी आशंका रहती है (अर्थात् दर्द होनेसे या रक्त दिखाई देनेसे हो)।

आर्निका ३।—गिरना, भारी चीज उठाना, चोट लगना, इत्यादि कारणोंसे गर्भपात होनेकी आशंका है।

कैमोमिला ६।—क्रोधादि मानसिक उत्तेजना होनेसे गर्भपातकी संभावना होती है।

बारबार गर्भपात निवारण चिकित्सा।—पूर्वमें जिस समय गर्भपात हुआ हो, उससे निदान एक मास पहिले प्रति सप्ताह लक्षणानुसार निम्नलिखित औषध सेवन कराना चाहिये :—

जरायुके दोषसे गर्भपात होने पर ऐपिस ६, स्याबाईना ६ या सिकेलो ६ ; फूलका (Placenta) दोष होनेसे फस-

सूतिकादि रोग उत्पन्न होनेसे गर्भवतीका प्राणतक जा सकता है। फूल गिरनेमें देरी हो तो, पलसेटिला ३० या सिकी ३० देना चाहिये और जो कुछ रोज रक्तादि बहता रहे चायना ६ देना चाहिये।

प्रसवावस्थाके उपसर्ग।

प्रसवकाल।—पहिलेही कहा है कि गर्भ संचारके दिन प्राय: २८० दिनमें (अर्थात् दसवे महीनेमें) सन्तान होती है। नौ महीने तक गर्भिणीका पेट बढ़ता है। उसके बा (अर्थात् प्रसव होनेके दस दिन पहिले) पेडू झूल लगता है, कमर भारी होती है, अनेकबार पिशाब होता और कमरके नीचेवाली हड्डीमें वेदना उपस्थित होती है ये सब लक्षण दिखाई देनेसे सूतिका गृहका बन्दोबस्त करना चाहिये।

सूतिका गृह।--घरमें जो सबसे उत्तम घर हो- अर्थात् जो घर बड़ा साफ, खुलासेदार, दुर्गन्ध रहित, हवा दार और जिसमें ओस न आवे या धुआं न जमें उसको घरके सूतिकागृह चुनना चाहिये सूतिका गृहके दोष माता य सन्तानके प्राणघातक होते हैं।

प्रसव वेदना।- जरायु आकारका परिवर्तन होना स्त्री जननेन्द्रिय आर्द्र होना और नर्माका ढीला पड़ना, मान

सिक चिन्ता होना इत्यादि प्रसवके होनेके पूर्व लक्षण हैं। फिर जब वारवार दस्त और पिशाव करनेकी इच्छा हो, वमन हो, वमन होनेसे शरीरकांपे, जल निकले (अर्थात् योनिसे फेनके तरह श्लेष्मादि वहने लगे) तथा कमरसे दर्द शुरू होकर पेटके तरफ आकर मिल जाय तो प्रसव वेदना जानना चाहिये। अनेक समय प्रसव वेदनाका निर्णय करना कठिन हो जाता है, इसके प्रकृत और अप्रकृत पृथक् २ लक्षण नीचे दिये गये हैं।

प्रकृत लक्षण।	अप्रकृत लक्षण।
१।—पीठ, कमर (कभी जंघे तक दर्द हो।	१।—केवल पेटमें दर्द (ऐंठन या गुड़ गुड़ करना) वनी रहे।
२।—हर वक्त दर्द नियमित रूपसे (जैसे प्रति पन्द्रह, वीस, तीस मिनट अन्तरके क्रमसे) आतो और जातो हो।	२।—दर्द उठनेका कोई नियम नहीं जैसा, कभी दस मिनट और कभी पांच मिनटके बाद दर्द होतो हो और कभी दर्द अविरामभावसे होतो रहे।
३।—हर वक्त दर्दके साथ जरायु मुख थोड़ा थोड़ा फैलता जाय और जल वहता रहे।	३।—दर्दसे न जरायु मुख फैलता है और न पानी वहता है

स्वाभाविक प्रसवके समयमें कई अवश्य पालने योग्य विधि।

पहिली अवस्था।—प्रसवकी पहिली अवस्थामें गर्भिणी जिसतरह रहना और जो काम करना चाहे उसमें बाधा देनेकी आवश्यकता नहीं है। इस अवस्थामें उसे सूतिका गृहमें लेजाने या कांखनेकी आवश्यकता नहीं। बीच बीचमें गरम दूध या गरम पानी पिलाना अच्छा है इससे दुर्बलता दूर होती है। ठंढा पदार्थ खिलाना अपकारी है; इसे खिलानेसे व्यथा बढ़ सकती है (अर्थात् प्रसव वेदना बन्द होजाती है)। पहिले अवस्थामें कोई औषध देना अच्छा नहीं; और यदि मालूम हो कि पहिले बच्चेका सिर बाहर न निकलकर यदि दूसरा कोई अङ्ग बाहर निकलेगा तो, पल्सेटिला ३x दो तीन मात्रा खिलाना चाहिये—इस औषधके गुणसे बालकका सिर घूमकर नीचेके तरफ आसक्ता है। "प्रसवकालके उपसर्ग" देखो।

द्वितीय अवस्था।—इस अवस्थामें अति सावधानीसे काम करना चाहिये। जल टपकना शुरू होतेही सूतिका को सूतिका गृहमें लेजाना चाहिये, और दर्दके बाद बीच बीचमें गरम दूध अथवा पिलाना चाहिये। यदि दर्द धीरे धीरे कम होने लगे तो गर्म पानीमें कपड़े डालकर या नाभिमें सेंक डालकर या पेट मिलाकर या किसी सामान्य उपायसे

वमन करानेसे व्यथा आने लगती है। सूतिका को अज्ञातय की एक जगह स्थिर रहना चाहिये; ज्यादा छटपट करनेसे व्यथा जोरसे नहीं आसकती। प्रसवके समय सूतिका बांये तरफ सोकर दोनों हाथ सिरके ऊपर उठारखना चाहिये और दोनों घुटने छातीकी ओर उठाकर दोनो तरफ फैला देना चाहिये (अर्थात् दोनो पैरके बीचमें एक गोल तकिया देनी चाहिये); इस तरह करनेसे सहज ही में प्रसव होता है। प्रसवके पहिले निदान एकबार भी दस्त और पिशाब कराना चाहिये। रक्तस्राव हो तो, "गर्भावस्थाका रक्तस्राव देखो।"

लड़केका सिर योनिसे आने हीं धात्री मलद्वार रक्षा करें नहीं तो लड़केका होना कर्थ बाहर होनेके समय मलद्वार फटकर योनि तथा मलद्वार एक होसकता है।

लड़केका माथा बाहर होनेहीं उसके मुखमण्डलका लार श्लेष्मादि साफ कर देना चाहिये नहीं तो श्लेष्मादि मुख गह्वरमें वा नासिकामें जाकर श्वास रुक जाता है। यदि लड़केका माथा बाहर दिखाई दे और उसकी नाभिनाड़ी मालाके तरह गलेमें 'लपट' हुई हो तो [illegible] अंगुली डालकर [illegible] करना चाहिये कि लड़केका माथा [illegible] बाहर निकल [illegible] लड़केका [illegible] बाहर निकल [illegible] [illegible] चाहिये [illegible]

तीन हाथ लम्बा और आध हाथ चौड़ा कपड़ा प्रसूतिके पेट पर १० रोज तक कमरबंदकी तरह बांध रखना चाहिये। किन्तु प्रसवके उपरान्त दो घण्टा यदि दोनों हाथ प्रसूतिका जरायुको पेड़ूमें दाब रखा जाय तो फिर पेटी बांधनेकी आवश्यकता नहीं होती है।

प्रसव होने पर और तीन घण्टातक प्रसूतिकाको चित सुला रखना चाहिये, तथा कपड़ा ओढ़ना और दस्त पिशाब भी पड़ेही पड़े करना चाहिये ; हिलने डोलनेमें भयानक रक्त-स्रावकी विलक्षण आशंका है। तीन घण्टा स्थिरभावसे रहे तो सहजही सुनिद्रा आकर प्रसूतिका सहजहीमें स्वस्थ हो जाती है। प्रसवके आठ दस घण्टा बाद प्रसूतिको जब थोड़ा आराम मिले तब शिशुको चोंची (स्तनको) चोसनेको देना चाहिये ; चोंची चोसनेसे स्तनमें जल्दी दूध आने लगता है, और जरायु संकुचित होकर रक्तस्राव नहीं होता। यदि प्रसवोपरान्त विशेष कोई उपद्रव न हो तो आर्णिका : चार घण्टे बाद तीन दिन प्रसूतिको सेवन कराना अच्छा है। आर्णिका सेवन करानेसे सूतिका ज्वर प्रसूति आदि तरहकी प्रसवान्तिक पीड़ा नहीं होने पाती है।

प्रसवोपरान्त यदि अधिक परिमाणमें रक्तस्रावादि हो तो "प्रसवके अन्तके उपद्रवादि" देखो।

सूतिका ज्वरमें प्रसूतीकी सेवा।—नीचे लिखे हुए नियमको विशेष ध्यानसे देखो।

जलके साथ मिलाकर रोज तीनबार पीना चाहिये) देना चाहिये।

रक्तस्राव। (Haemorrhage) प्रसवके बाद रक्त-स्राव होनेसे, प्रसूतिके जानका डर रहता है। ख्याल रहे कि प्रसवकालमें रक्त थोड़ा जाना चाहिये। खूब बेशी या लालवर्ण रक्त, सोतके तरह बराबर बहनेसे, निम्नलिखित उपायसे उसी दम करना चाहिये।

प्रसूतिको सोलाकर सिर नीचा और जंघा ऊंचा करना चाहिये, बाद उसी वक्त उसके पेट पर हाथ रख जरायुको मुट्ठीमें इस कदर धरना चाहिये कि वह संकुचित हो जाय, और गरम जल (१२०) उसके जननेन्द्रियमें पहुंचाना चाहिये। मिल सके तो बरफका टुकड़ा प्रसूतीके पेट पर और जननेन्द्रियमें रखना चाहिये और बरफ खानेके लिये भी देना चाहिये, बर्फ भी रक्तस्रावको बन्द करता है।

प्रसवकालमें, सेबाइना ३x या हेमोमेलिस ३x और रक्त बहनेसे यदि सुस्ती मालूम हो तो चायना ६, और स्रावसे मस्तकमें पीड़ा हो तो, फेराम् ६ देना चाहिये।

मूर्च्छा।—प्रसवकालमें या प्रसवके बाद किसी किसी स्त्रीको मूर्च्छा आकर उसके प्राणतक नाश होते हैं, इसलिये खूब सावधान होकर चिकित्सा करना चाहिये। मूर्च्छाके साथ सर्वाङ्ग बर्फके तरह ठंढा होनेपर, रुबिनि का कैम्फर ; मूर्च्छाके साथ कपालमें ठण्ढा पसीना हो या सामान्य हिलनेसे मूर्च्छ

आधाघण्टा अन्तर पर देना चाहिये। तीनबार बेलेडोनाके प्रयोगसे पिशाब न हो तब इक्कुईसेटम् १x देना चाहिये।

कोष्ठबद्ध।—प्रसवके बाद जरायु इत्यादि यन्त्रोंको काम बन्द रखना है इससे प्रथम तीन चार दिन प्रभृति का पाखाना नहीं होती, इस अवस्थामें औषध सेवन करानेसे बीमारी बढ़नेकी संभावना है। यदि पांच छः दिन पर्य्यन्त पाखाना न होकर कष्ट मालूम हो तो कलिन्सोनिया १x या मेराइगम एल्बम ६ देना चाहिये।

उदरामय।—प्रसवके बाद उदरामय हो तो हाईयोसायेमास ६ या पल्सेटिला ६ देना चाहिये।

घर्म।—प्रसवके बाद कभी कभी घर्म होता है; पल्सेटिला ६ सेवन करना और हेमामेलिस् तीसगुने जलके साथ मिलाकर धोना चाहिये।

सूतिका-ज्वर (Puerperal fever).

सूतिका ज्वर यह एक रक्तका विकार है; किन्तु यहां स्त्रियोंको पीड़ामें ही गतत्पन्न है। सूतिका-ज्वर अति भयानक और कष्टदायक रोग है। इसका कारण एक प्रकारका विष है। प्रसवके बाद नाना कारणोंसे जरायुका दूषित होना, प्रसवके बाद फूलका कुछ हिस्सा जरायुके भीतर रहजाना,

यही रोगका कारण है। प्रसवके ३।४ दिन बाद प्रसूतिका ज्वर होता है। पहिले सामान्य ज्वर आकर फिर धीरे धीरे बढ़ता है; तब शीत, कंपकंपी और शरीर गरम होता है; शिरकी पीड़ा; नाड़ीका वेग; प्यास; पेटका दर्द; और १०६ डिग्री पर्य्यन्त ज्वर रहता है, परन्तु पसीना नहीं आता; और प्राय स्तनसे दूध आना बन्द होजाता है। तथा ७।८ दिनमें मृत्यु होती है। जरायुमें सुगन्ध पीपके तरह निकलना यह अशुभ लक्षण है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३x।—पीड़ाके प्रथम अवस्थामें अत्यन्त ज्वर; शीत और कम्प, नाड़ी द्रुत और कठिन, शरीर सूखा, पेट फूला और वेदनायुक्त, अत्यन्त प्यास, जरायुमें दर्द (डाक्टर लडलामने इस अवस्थामें भेराट्रामभिरिड १, व्यवहार कराकर बहुतेरोंकी जानको बचाया है।

बेलेडोना ३०।—उदरमें अत्यन्त पीड़ा; अस्थिरता, स्तनमें दूधका न रहना; मस्तकमें दप् दप् पीड़ा, इसी तरह नेत्र और मुखमण्डल लालवर्ण।

नक्सभमिका ६।—जरायुकी बिमारी बढ़ने पर।

कलोसिन्थ ६।—ज्यादा पेट फूलनेमें।

कॉलिसायेनेट्राम ३०।—एकाएकी चिड़िक मारती हुई पीड़ासे यदि रोगिणी रोते रोते सुस्त होजाये।

रोग" स्पर्शसे संक्रामित नहीं होता, या किसी प्रकारके दूषित विषसे उत्पन्न नहीं होता, इसलिये यह सूतिका ज्वरकी पुरानी अवस्था या आकार नहीं। प्रसवके बाद यदि प्रसूतिकी अच्छी सेवा न होनेसे शरीर क्षीण होकर रक्तहीन होता जाता है, और पुराना ज्वर उदरामय, सूजन इत्यादि होता है; इसीको पुरानी सूतिका रोग कहते हैं।

चिकित्सा।—इस कठिन पीड़ाके लिये नेट्राम-मिउर ३०, आर्सेनिक ३०, चायना ६, फेराम-मेट् ३०, एलुमिना ६, सिपिया ३०, फास्फरिक्स् ३०, पलसेटिला ३०, नक्सभमिका ३०, दिया जाता है, किन्तु फेराम आर्सेनिकम ३०, इस रोगका उत्तम औषध है। मागुर मछलीका शोरवा पीना चाहिये। "रक्तस्वल्पता" रोगकी चिकित्सा देखो।

अंतड़ीकी बाई।—(Puerperal Insanity)।—प्रसवके बाद (या पहिले) दुर्बलता होनेके कारण कोई कोई स्त्री पागल होजाती है। यह वायुरोग दो प्रकारका है:—(१) उन्माद (Mania) और (२) विषाद-वायु (Melan-

१ उन्माद रोग — बुद्धिकी भ्रान्ति, अनर्थक बकवाद, प्रिय मनुष्योंको मारनेके लिये ढूंढना इत्यादि "उन्माद रोग" का प्रधान लक्षण है — [illegible]

स्तनका दूध कम होना यही कष्टकर पीड़ाका उपसर्ग है। पलसेटिला ६ और हैमोमेलिस ३x इसका उत्कृष्ट औषध है, एपिस ३ और रसटक्स ६ मौके मौके पर देना चाहिये। साफ रुई पेरमें बांधना चाहिये, हलका और ताकतवर आहार करना चाहिये।

वस्तिकोटरके कौषिक झिल्ली प्रदाह (Pelviccellulitis) अस्त्र प्रयोग या आघातादि कारणसे यह प्रदाह उत्पन्न होता है। पेड़ूमें दर्द, ज्वर और जननेन्द्रियका फूलना इस रोगका प्रधान लक्षण है। एपिस ६ और रसटक्स ६ यह रोगका औषध है, जोरका ज्वर होनेसे भेराट्राम-भिरिड १x देना चाहिये।

वस्तिकोटरमें पीला फोड़ा (Pelvic abscess)।—यदि "वस्तिकोटरकी कौषिक झिल्ली प्रदाह" उपरोक्त औषध प्रयोगसे अच्छा न हुआ तो क्रमसे फोड़ा होता है (अर्थात् पीप होना आरंभ होता है) ऐसा होनेसे (पकानेके लिये) हिपार सलफर ३x देना चाहिये और इसी तरह अगर पीप निकलता हो तो सिलिका ६ इसकी व्यवस्था है।

पेटका झुल पड़ना।—प्रसवके बाद किसी किसीका उदर नीचेके तरफ झुक जाता है। यह देखनेमें भद्दा मालूम होता है, नहीं तो कोई रोग नहीं है। केलकेरिया ३० या सिलिका ३० प्रतिमास एकबार करके देना चाहिये।

सिरका बाल उड़ना।—प्रसवके बाद दुर्बलताके कारण किसी किसी स्त्रीके बाल झड़ने लगते हैं। फस्फरिक एसिड ६, चायना ६ या आर्सेनिक ६ इसकी औषध है।

स्तनरोग। स्तनदुग्ध रोग।	प्रसवके बाद स्तनकी पीड़ा देखो।

प्रसवके बाद स्तनकी पीड़ा।

प्रसूतिका स्तन सम्बन्धमें कई एक बातें नीचे लिखी जाती हैं।

१। गर्भके तिन चारमास बादसे स्तन बढ़ने लगते हैं, इसी समयसे स्तनके बोंडिका ओर ध्यान देना चाहिये। आजकालके "सभ्यताके" अनुसार ऐसी कसी अंगिया वगैरह न पहिरनी चाहिये जिससे स्तनकी बोंडीके उपर दाब पड़कर उसके बढ़नेमें बाधा हो।

२। यह पहिलेही लिखा गया है कि प्रसवके आठ दस घण्टा बाद सन्तानको स्तनपान कराना चाहिये, इसस गर्भ सन्तानका आसानीसे पाखाना होता है और प्रसूतिका ज्वरादि नहीं होता।

३। हमेशा सन्तानको स्तन देनेके समय पहिले थोड़ासा दूध निकालकर फिर सन्तानको स्तनकी बोंडी देना चाहिये

४। प्रसूतिके आहारके दोषसे स्तनका दूध खराब हो सकता है, और यह दूध पान करानेसे सन्तानको पेटमें दर्द अजीर्ण आदि रोग होते हैं, अतएव आहारके विषयमें प्रसूतिको खूब सावधान रहना चाहिये।

५। स्तनकी बोंडीको घाव होनेसे या माताको पेटकी बिमारी अथवा ज्वरादि हो तो शिशुको स्तनपान कराना नहीं चाहिये।

६। कठिन शारीरिक परिश्रमके बाद या क्रोधादि मानसिक उत्तेजनाके समय, या ठीक स्वामी सहवासके बाद स्तनका दूध खराब होता है, और ऐसी अवस्थामें संतानको स्तनपान करानेसे उसको अत्यन्त पीडा तथा मृत्युतक हो सकती है।

दूधज्वर (Milk fever) ।—प्रसवके कुछही घण्टा बाद दूध पैदा होनेके समय किसी किसी प्रसूतिको स्तनमें कांटा चुभनेकी तरह दर्द होता है और दो-एक दिनमेंही दोनो स्तन कड़े होकर सामान्य ज्वर होता है इसीको दूधका ज्वर कहते हैं। इसमें कोई औषध देनेकी आवश्यकता नहीं है, केवल जबतक ज्वर हो तबतक संतानको स्तनपान कराना नहीं चाहिये, तथा स्तनमें ठण्ढी हवा न लगने पावे। किन्तु दूधका ज्वर भयानक होनेके कारण यह बीस घण्टेमे अधिक हो तो, एकोनाइट ३x देना चाहिये और ज्वर छूटनेके बाद यदि स्तन नरम न हो तो (स्तन नरम होनेतक) ब्राईयोनिया ६ देना चाहिये।

स्तनप्रदाह ।—ठुनका प्रसवके बाद किसी समय स्तनमें प्रदाह और साथ ज्वर होता है। तब प्रसूतिके स्तनमें दर्द होती है, इस कारणसे वह संतानको स्तनपान नहीं करा सकती और उसको भारी कष्ट होता है। स्तन

जब तक शिशु माका दूध पीता है तब तक प्रसूतिको रातका जागना, देरसे खाना, ज्यादा खट्टा, तीता चीज खाना, मनमें क्रोध करना इत्यादि मना है ऐसा करनेसे शिशुको नाना प्रकारके रोग होते हैं। सन्तानको रोग होने पर माताको खूब सावधान रहना चाहिये ; नहीं तो सन्तानका रोग बढ़ सकता है।

यदि माताको रोग हुआ हो या उसके स्तनमें ज्यादा दूध न हो तो घरके किसी स्त्रीका दूध अच्छा होनेसे सन्तानको पिलाना चाहिये; अगर दूध न मिले तो गदहे या गौका दूध पिलाना चाहिये। गौका दूध गाढ़ा होनेसे, दूधके बराबर पानी मिलाकर और कुछ दूधकी चीनी (sugar of milk) मिलाकर गरम करके सन्तानको पिलाना चाहिये। ज्यादा दूध पिलाना, या ज्यादे रातको पिलाना अथवा सोनेके हालतमें या जगाकर दूध पिलाना अच्छा नहीं। यदि सन्तानको भूख न हो तो दूध न पिलाना चाहिये : साधारण रीतसे सन्तानका पेट नरम मालूम हो तो भूख है समझना चाहिये। एकसालतक सन्तानको स्तन पान कराना चाहिये।

शिशु आठ दस महीनेमें रेंगने लगता है, और एक बरसमें चलना सीखता है; किन्तु यदि पन्द्रह महीने तक चल न सके, तो उसको उपयुक्त चिकित्सा करनी चाहिये। सन्ता-

नके सब दांत आने पर, पुराने चावलका खूब नरम भात थोड़ा थोड़ा खिलानेकी आदत डालनी चाहिये।

मिश्रकी दवा जलमें न मिलाकर वटिका (Pilules) या अनुवटिका (Globules) सन्तानको सेवन कराना चाहिये।

टीका।—सन्तान भूमिष्ट होनेसे एक मासके भीतर गोबीजसे छपाना यह राजविधि है। जिस जगह अच्छा गोबीज न मिलनेके कारणसे छाप नहीं सके तथा चारों तरफ रोग फैला हुआ हो तो ऐसे समय भैकसिनिनाम २०० (जब तक चेचकका जोर रहे तब तक) हर सप्ताहमें सन्तानको एक बार खिलाना चाहिये।

मृतवत् सन्तान।—बहुत देरतक प्रसव वेदना या प्रसूतिके जरायु दोषसे सन्तान मृतवत् उत्पन्न होती है। रक्त सञ्चालन यन्त्रकी क्रिया बन्द होनेसे श्वास प्रश्वास बन्द हो जाता है, और सन्तान नहीं रोती। उसी समय नीचे लिखे उपायको करना चाहिये – सन्तान उत्पन्न होने पर उसकी नाभि नाडी न काटकर मुख और गलेका श्लेष्मा इत्यादि जल्दी साफ करना चाहिये। तथा नाक अङ्गुलीसे दबाकर उसके मुखमें इस तरह फूकना चाहिये कि वायु उसके छातीमें प्रवेश हो, और उसका पञ्जरा एस दबाना

चाहिये कि वायु छातीमें होकर बाहर निकल जाय। हर मिनटमें १४।१५ बार इस तरह वायु प्रवेश कराने और निकालनेसे, १० मिनटमें सन्तानकी श्वास क्रिया आरम्भ होने लगेगी। यदि दस मिनटमें कुछ फायदा न हो, तब सन्तानके मुख या पेटमें पहिले गरम जलका और पीछे ठण्डा जलका बार बार छींटा देना चाहिये। और सूखे हाथसे उसका हाथ, पैर और पीठ घिसना; शिशुके मुखमें हवा लगनेमें बाधा न होने पावे।

शिशुके नाभिका रोग।—नार काटनेके पांच दिन बाद नाभि सुखकर अलग होजाता है। यदि नाभि न सुखकर रस या मवाद गिरे किम्बा घाव हो जाय, तो नाभि को गरम जलसे धोकर कैलेण्डुला (दस बूंद, एक छटांक सरसोंके तेलमें मिलाकर) की पट्टी नाभिके ऊपर लगाना चाहिये और सिलिका ६ सेवन [किन्तु मवादमें दुर्गन्ध हो तो सिलिकाके बदले आर्सेनिक ६ देना चाहिये]। यदि दाह (अर्थात् नाभि लाल होकर फूली हो और दर्द भी हो,) तो बेलेडाना ६ या आर्सेनिक ६ देना चाहिये।

नार अच्छी तरह न बांधनेसे या नारका बन्धन टूट जाने से यदि रक्त बहे, तो हेमामेलिस कपड़ेमें लगाकर रक्त निकलनेके स्थानपर रख थोड़ा दबा रखनेसे रक्तका बहना बन्द हो जाता है, बार बार इस तरह रक्त बहनेसे आर्से-

निक ६ सेवन कराना चाहिये। खाँसना, ज्यादा खाँसी या रोना, पेट दबना इत्यादि कारणोंसे नाभि पर ज्यादा दाब पड़नेसे यदि नाभिका अन्त्र बाहर (Umbilical hernia) हो जाय, तो चानिका ६ या साल्फिउरिक-एसिड ६ सेवन, और रुईकी एक छोटी गद्दीसे नाभिको इस तरह दाबकर बांधना चाहिये कि अन्त्र बाहर न हो सके। शिशु अत्यन्त दुबला होनेसे कैल्केरिया ६ देना चाहिये।

गाँड़।—घाव सुखनेके बाद यदि नाभि ऊँची रहे तो उसके ऊपर रुईकी गद्दी रखकर एक कपड़ेसे बांध देना चाहिये और नक्सभमिका ६ खिलाना चाहिये।

स्तन न खींचना।—यदि दुर्बलताके कारण सन्तान स्तन न पी सके तो चमचमें दूध गारकर सन्तानको पिलाना चाहिये, इस तरह दो तीनबार गारकर पिलानेसे सन्तान आसानीसे स्तन खींचने लगती है। ऐसा करने पर भी यदि शिशु स्तन मुखमें न ले, तो चायना ६ की एक छोटी गोली उसके मुखमें देना चाहिये।

सन्तानका पीलापन। सन्तान पैदा होनेके दो एकदिन बाद कभी कभी उसका शरीर और सबका सफेद भाग हल्दीके तरह पीला हो जाता है। मार्करियास ६ ... र दवा है ... होनेसे नक्सभमिका ३०

सन्तान स्तन नहीं खींच सकती, क्रमसे बोखार १०१।१० डिग्री हो जाता है और हाथ पैरमें खैंचन होकर पीठ टेढ़ी जाती है और मृत्युकी सम्भावना होती है। बेलेडोना ६ इस उत्कृष्ट औषध है। (विशेषकर नाभिमें दाह होनेसे) माता ज्यादा शोकसे अथवा क्रोधके कारण दूध खराब हो गया और वह सन्तानको पिलाया जाय और उससे यह रोग हो ऐसी दशामें माता और शिशु दोनोंको इग्नेशिया ६ दे चाहिये, "धनुष्टंकार" देखो।

सन्तानकी हिचकी।—कभी कभी सन्तान हिचकी होती है। कई एक बूंद मिश्रीका शर्बत नकसभमिका ३० खिलानेसे हिचकी बन्द होता है।

सर्दी खांसी।—ठण्डा लगनेसे सन्तानके नाक सर्दी झरती है, कभी खांसी या ज्वर भी होता है, कभी ना बन्द होजाती है, कभी सन्तान हांफने लगती है और स्त नहीं पकड सकती। छातीमें सर्दी जमनेसे डर रहता है सर्दी झरती रहे तो पल्समेटिला ६। नाक बन्द होनेसे स्त न खींच सके तो नकसभमिका ६। ठण्डसे भई सर्दी य किसीसे अच्छी न हो तो मार्करियास् ६। सर्दी गिरनेसे सब नाक या ओठमें घाव होनेसे आर्सेनिक ६।

सन्तानका नेत्र प्रदाह। भूमिष्ठ होनेके कई ए दिन बाद किसी किसी सन्तानके नेत्रमें दाह होता है

१०। दांत निकलनेके समय लड़का होनेसे कैमोमिला ६। हाम, चेचक अच्छी तरह बाहर न निकलनेसे यदि कठिन लड़का होय, तो जिङ्काम ६ अच्छा है।

शिशुकी अनिद्रा।—मस्तिष्कमें रक्त अधिक होनेसे या रक्त सञ्चयसे, प्रसूतिके अयोग्य भोजनसे या क्रिमि रोगसे सन्तानको निद्रा नहीं आती, जिस कारणसे निद्रा नहीं आती उसकी चिकित्सा करना उचित है।

मस्तक गरम, बिना सबब ज्यादा रोना, सोनेकी अवस्थामें एकाएक चिल्लाकर रोना ऐसे लक्षणोंमें बेलेडोना ६। रह रह कर शरीर कांपना, शरीर गरम, चिड़ चिड़ा स्वभाव और हमेशा गोदमें लेकर घुमनेकी इच्छामें कैमोमिला ६। सन्तान हंसे और खेले किन्तु शरीर गरम हो, और बीच बीचमें कांपे तो, कफिया ६। ज्वर और बीच बीचमें भयके कारण चिल्लाकर उठनेसे एकोनाइट ३। क्रिमि रोगके कारण निद्रा न होनेसे, सिना ३x। कोष्ठवद्ध होनेके कारण निद्रा न आनेसे नक्सभमिका ६। बे अन्दाज भोजन करनेसे या पानी पीनेसे निद्रा न आवे तो, पल्सेटिला ६।

सन्तानका रोना।—शिशु रोने ही से कोई कष्ट या रोग समझना चाहिये। किस कारण शिशु रोता है उसको जांच करना जरूरी है, रोनेके समय कानमें हाथ लगावे तो

सघणके साथ जिह्वा मादी और लेपयुक्त हो तो ऐन्टिम-क्रुड ६। इसके साथ दुर्गन्ध मलयुक्त उदरामय होनेसे कैलकेरिया कार्ब १०। दूधके साथ पित्त या लारके तरह कफ गिरनेसे इपिकाक् ६। अरुचि और कोष्ठबद्ध होनेसे, नक्सभमिका ३०।

दांतनिकलना।—बालकके दांत ६ठें माससे-लेकर ८।१० मासमें निकल आते हैं; पहिले दो नीचेके तरफ बाद ऊपरको तरफ दो, इसी तरह क्रमसे तीन वरसमें दूधके सब दांत निकल आते हैं। ज्वर उदरामय, कोष्ठबद्ध, आक्षेप इत्यादि उपसर्ग दांत निकलनेके समय होते हैं।

इन सब उपसर्गोंमें, कैमोमिला १२ श्रेष्ठ औषध है; ज्वर होनेमें, एकोनाईट ६। अधिक उदरामय होनेमें, कैमो-मिला ६। आमाशय होनेसे, मार्क कर ६। कोष्ठबद्ध होनेसे, नक्सभमिका ३०। तड़का होनेसे, बेलेडोना ६। दांत निकलनेमें देर होनेमें, कैल्केरिया कार्ब ३०। यदि दांत मसूड़ी फाड़कर बाहर न निकल सकता हो तो मसूड़ीको थोड़ा चीरकर फिर मिलादेनेसे दांत जल्दी बाहर निकल आता है।

खांसी (Croup) घुणडीके दो प्रकार—(१) कृत्रिम और (२) प्रकृत। कृत्रिम घुणडी शिशुको एकाएक

गोमें भार्सेनिक ६। दांत निकलनेके समय मुखमें घाव, मुख या शिरमें पसीना कठिनमल, पैर ठण्ढा होना इत्यादि लक्षणोंमें, कैलकेरिया-कार्ब ६। जीभ फूली और दाहयुक्त हो, दन्तमूलमें घाव और इसी कारणसे रक्त बहता हो, मुखमें दुर्गन्ध हो, मुखसे लार विशेष बहती हो, आमाशयकी तरह घेघायुक्त पतलामल हो तो, मार्कमल् ६। मुखमें चारों तरफ फुन्सी और सड़ा गन्ध, मुखसे घाव कारनेवाली लार बहै तो, एसिड नाईट्रिक ६, (पिता माताके पारेके दोषसे, सन्तानको हुई फुन्सीके लिये भी यह उपयोगी है।) सफेद लेप युक्त जिह्वा, मुखसे बड़ी बड़ी फुन्सी, मुखसे रक्त मिली हुई लार गिरना, गुदाके चारों तरफ फुन्सी, निद्राका व्याघात इत्यादि लक्षणोंमें, सल्फर ३०।

स्तनोंका फोड़ा।—कभी कभी स्तनोंके शिरमें, गर्मीसे कानके पीछे, बगलमें बाहुके सन्धिमें फोड़ा होता है। कैलकेरिया कार्ब ३०। प्रायः घाव (पीबकाममें अधिक) होनेसे, कार्बो-भेज ३०। घाव चारो तरफ छोटी छोटी फुन्सी होनेके कारण स्तनोंकी हमेशा सड़सीपन हो तो, कैमो-मिला ६। कानके पीछे आफरहुआ घाव, दुर्गन्ध युक्त घाव होकर रक्त बहने और खोंटका होनेसे, मार्कसोलुबियम ३०। शिरमें पहिला दो एक फोड़ा हो बाद उसका रस लग कर मस्तकमें अधिक फोड़ा हो तो सल्फर ३०, हिपार

पतला मल और हाथ पैर ठण्ढा होनेके लक्षणमें कैमोमिला ६। शिशु दस्त होनेके लिये कांखता है यह मैला न निकलता वायु सरती है। या बहुत थोड़ा मल निकलनेसे सिना ३० उपकारी है। रोज कोई एक वक्त पेटमें दर्द होनेसे चायना ६। सड़ा खट्टी गंधका सबुजरङ्ग पतलादस्त, वमनेच्छा या वमन लक्षणमें इपिकाक ३०। मलवद्धके समयमें पेटमें दर्द हो तो नक्सभमिका ३०। भारी भोजन करनेसे हुई दर्दमें गायकादूध पिलाना बन्दकरना चाहिये। अजाइनको पोटली गरमकर नाभिपर सेंक करनेसे दर्द आराम होता है।

शिशुका उदरामय।—गुरुद्रव्य भोजन, क्रिमि या दांत निकलनेसे बच्चोंको उदरामय होता है। यदि ठण्ढ लगनेसे उदरामय हो और सायको ज्वर भी रहे तो एकोनाइट ६ देना चाहिये। गुरुपाक भोजनसे हुए उदरामयमें पल्सेटिला ६। दांत आनेके समय अथवा सर्दी लगकर उदरामय होनेसे ज्वलकर बच्चा चेंचियाता हो तो कैमोमिला ६। उदरामयके साथ वमन या वमनेच्छा हो तो इपिकाक ६। खट्टी गन्धयुक्त खटखटा या फेनीला अधिक मल और सायको पेटमें दर्द रहनेसे रिउम ६। (खास-कर दांत आनेके समयमें) कीचड़के भांति दस्त और श्याम हो तो मार्किउरियास डल्सिस ६। आंवकादस्त और साथ में खून आनेमें आर्सेनिक ६। चावलके धोवनके भांति दस्त

नहीं है। यदि पेशाब २४ घंटे न हो तथा शिशु बेचैन हो जाने लगे तो एकोनाइट ३ दो एक खुराक देना। बेले-डोना ६ कैन्थारिस ६ या ओपियम ३० देने की कभी कभी जरूरत पड़ती है।

अधिक उमरके बालकोंको कभी कभी पेशाब बन्द हो मूत्रथली फूल जाती है, बदन गरम और दर्दसे परेशान हो जाता है। पेड़ूमें गर्म पानीका सेंक देनेसे पेशाब उतरता है। इससे फायदा न होनेसे "मूत्र स्तम्भ", "मूत्रनाश" और "मूत्र कृच्छ्र" देखो।

शिशु-यकृत्।— कैलकेरिया फासफोरिकम ३०।— इसकी प्रधान दवा है। आहारके तरफ ख्याल रखना कुपथ्य न होने पावे। इस पुस्तकका "यकृत् प्रदाह" देखो छोटे बच्चे का मूत्र गरम कर यकृत् में सेंक करना अच्छा है। ब्रायो-निया ६, मार्किउरियस ६, आर्सेनिकम ६, मर्क्युरस ३० की कभी कभी जरूरत पड़ती है।

एक ज्वर।—कभी कभी शिशुका ज्वर नहीं छूटता। फेर्म-फसफोरिकम ३ इसकी बढ़िया दवा है। पाकाशयमें गड़बड़ हो तो एन्टिमटार्ट ६; बीच बीच में दस्त होनेसे पल्सेटिला ६, सिर्फ जाड़ेमें मिला ६ या आर्सेनिकम ६; बदन बहुत गरम, चमड़ा रूखा या रक्तस्रावके अवस्थामें बेलेडोना ६ दरकार है। कभी कभी रोगीका ज्वर किसी तरहसे

नहीं छूटता, कब्जियत रहना, नाभिके चारों तरफ दर्द, क्रिमि पेटमें रहे चाहे न रहे तो भी नाक खुजलाना आदिमें सिना ३x—३० ; सिनासे फायदा न हो तो स्पाइजेलिया ३x देना। जल चाले आदि लघुपथ्य देना ; बुखारमें दूध मना है। अस्तीके भी खान आहारमें ध्यान रहना चाहिये। "एक ज्वर" मलेरिया जनित अविराम ज्वर और "सान्निपातिक विकार" देखो।

तोतलापन।—(Stammering).

हायोसियमस ६ कुछ दिन खानेसे फायदा होता है।

चर्मरोग।—(Erysipelas.) ठंढ लगना आदि कारणोंसे सिरके इतनेके किसी अंगमें पहिले सामान्य लाल होता है फिर सर्वांग लाल रंग हो जाता है, साथमें ज्वर, प्रदाहित स्थानका फूल जाकर घाव हो रस गिरने लगता है। यह एक कठिन रोग है। बेलेडोना ३x, एपिस ६, और रसटक्स ६ इसकी बढ़िया दवा है। "विसर्प" देखो।

पामा (Eczema)।—यह चर्म रोग बहुतोंहसीसे हुआ करता है। यह एक प्रकारकी खुजली है, देखनेमें भी यह खुजलीकी तरह होता है। इसका दाना फूटनेमें लगकर मुख जानेसे ज्यादा बड़ा हो जाता है, इस

नहीं है। यदि पिशाब २४ घंटे न हो तथा शिशु बेचैन हो रोने लगे तो एकोनाइट ३ दो एक खुराक देना। बेले-डोना ६ कैन्थारिस ६ या ओपियम ३० देने की कभी कभी जरूरत पड़ती है।

अधिक उमरके बालकोंको कभी कभी पिशाब बन्द हो मूत्रस्थली फूल जाती है, बदन गरम और दर्दसे परेशान हो जाता है। पेड़ूमें गर्म पानीका सेंक देनेसे पिशाब उतरता है। इससे फायदा न होनेसे "मूत्र स्तम्भ", "मूत्रनाश" और "मूत्र कष्ट" देखो।

शिशु-यकृत् ।— कैलकेरिया-आर्सेनिकम ३० ।— इसकी प्रधान दवा है। आहारके तरफ ख्याल रखना कुपथ्य न होने पावे। इस पुस्तकका "यकृत् प्रदाह" देखो छोटे बच्चे का मूत्र गरम कर यकृत् में सेंक करना अच्छा है। आयो-डिया ६, मार्किउरियास ६, आर्सेनिकम ६, सलफर ३० की कभी कभी जरूरत पड़ती है।

एक ज्वर ।—कभी कभी शिशुका ज्वर नहीं छूटता। सिनसिनियाम ३ इसकी बढ़िया दवा है। पाकाशयमें गड़बड़ हो तो पल्सेटिला ६; श्लेम सफेद सेपयुक्त होनेसे आर्सेनिकम ६, क्रिमि होनेसे सिना ६ या स्पाईजेलिया ६; बदन बहुत गरम, अमज उठना या बच्चाइजाके लक्षणमें बेलेडोना ६ उपकारी है। कभी कभी रोगीका ज्वर क्रिमी तरहसे

गर्म फ़ाहेसे मार्किउरियास ६ अच्छी दवा है; रोग पुराना होनेसे ऐफाइटिस ६ देना चाहिये।

शिशुके बदनका चमड़ा निकलकर घाव होना।—(Intertrigo) शिशुका चमड़ा बहुत नरम होता है इसलिये सामान्य कारणसे भी चमड़ा निकलकर घाव हो जाता है। मला जमना, ज़ोरसे बदन घिसनेसे चमड़ा फट जाना आदि कारणोंसे शिशुके कानके पीछे या गर्दन, पट्ठा और बगलका चमड़ा फूल जाता है फिर लाल हो जलनके साथ रस गिरता है। कैमोमिला ६ इसकी बढ़िया दवा है। कष्ट दायक घाव से खून निकलने पर मार्किउरियास सल् ६ अच्छी दवा है। रोग बारबार होनेसे लाइकोपडियाम १२ देना चाहिये।

शिशुका मृगीरोग।—(अपस्मार देखो) अक्सर यह रोग बच्चोंको होता है। कैमुमिला ६ इसकी बढ़िया दवा है। रोग पुराना होनेसे सल्फर ३० देना चाहिये सिक्युटा ६, सिना ६, सिलिका ३० देना चाहिये।

हूपखांसी (Whooping Cough)।—यह बच्चों को एक प्रकार की संक्रामक खांसी है, इस खांसी के होनेसे खांसी के साथ "हूप" आवाज होता है। यह रोग तीन चार हफ्तेसे लेकर छ महीने तक रहता है। बहुत दिन तक

इन्द्रिय सब बेकाम हो शिशु मृत्युको प्राप्त होता है। फेमकेरिया ३०, और सलफर ३० इसकी बढ़िया दवा है। बेहोशीके साथ पिशाब बन्द होना; बालक पानीके सिवाय और कुछ खानेको न मांगे इस अवस्थामें हेलिबोरस ३ उपकारी है।

बालास्थि विकृति (Rickets)।—शिशुके हड्डीमें चूनेका भाग कम रहनेसे हड्डी अच्छी तरह तयार न हो कर कोमल, विकृत, विकल और पतली होती है। पतला दस्त, कपालमें पसीना, समय पर दांतका न निकलना, हाथ पैरके जोड़ोंमें दर्द, माथेकी हड्डी-फूलकर बड़ी होना और पीठकी हड्डीका टेढ़ा होना इस रोगका प्रधान लक्षण है। इस रोगमें मोटा बालकको कैल्केरिया फस् ६x विचूर्ण और दुबला बालकको आर्सेनिक ६ देना चाहिये। सिलिका ६ और फसफरस ६ समय समय पर उपकारी है। सफेद मिट्टी पैदा होनेवाले देशमें हवा बदलनेके लिये बालकको भेजना अच्छा है। दूध बढ़िया पिलाना उचित है।

धातु दोष या कुलज रोग।—नीचे लिखे तीन रोग अक्सर पिता माताके दोषसे शिशुको भोगना पड़ता है:—
(१) व्रण रोग, (२) गंडमाला, (३) उपदंश।

१। **व्रणरोग। (Tuberculosis)** फुसफुस, मस्तिष्क अन्त्रादि चाहे जिस यन्त्र या तन्तुमें बालकको व्रण (tubercles) पैदा होता है। यह व्रण पहिले मटर बराबर

हो फिर कड़ा हो फूट कर घाव होता है, तब यह घाव धूसर या हलका पीले रंगका हो उसमें असंख्य छोटे छोटे कीड़े (tuberculous bacilli) होजाते हैं। फुसफुसमें क्षय होनेसे "क्षय कास" (phthisis) रोग पैदा होता है; मस्तिष्कमें होनेसे "मस्तिष्कझिल्ली प्रदाह" (tuberculer meningitis) रोग पैदा होता है।

फस्फरस ६ इस रोगकी प्रधान दवा कहना फजूल नहीं है। शिशु अत्यन्त दुर्बल या रक्तहीन होनेसे कैल्केरिया-फसफरिका ६x चूर्ण देना चाहिये। मुखसे खून आवे या नाकसे खून गिरना, ज्वर, ऋतुकालमें रक्तका न निकलना आदि लक्षणोंमें फेराम-फस ६x या ६ अच्छा है। ज्वर, पसीना, दस्त, बेहोशी, खांसी (सवेरे और शामको वृद्धि) फुसफुसमें तेज दर्द (हिलने डोलनेसे बढ़ना) आदि लक्षणमें आर्सेनिक ६, हिपार सल्फर ६, सिलिका ३०, सल्फर ३०, आइओडियम १२ और आइओडिन ६ समय समय पर दरकार पड़ती है। बैसिलिनामटिउबरकिउलिनाम और पाइरोजिनियाम देकर डाक्टर किनारको कोई फायदा नहीं हुआ।

पुष्टिकर आहार, विशुद्ध वायु सेवन, खुले और लम्बे चौड़े मकानमें रहना आदि स्वास्थ्यविधि पालन करना चाहिये।

रोगमें उपकारी है, चर्मरोगको दवा देनेसे कोई स्थायी फल पानेको आशा नहीं है।

आर्सेनिक-आल्बम. ३० (या आर्सेनिक-आइयोडियम ३x चूर्ण) कई हफ्ते खिलानेसे रोग धीरे धीरे आराम होजाता है। यदि बहुत दिन तक आर्सेनिक देने पर भी फायदा मालूम न हो तो (खास कर छाती धक्धक् करना और सांस प्रश्वासमें बाधा पड़नेकी हालतमें) फसफरस ६ देनेसे अक्सर गुण दिखाई देता है। हिष्टिरिया (मूर्च्छा) ग्रस्त युवती स्त्रियोंके ऐसे रोगमें इग्नेसिया ६ अच्छी दवा है। सलफर ३०, थूजा ६, केलकेरिया कार्ब ६, केलकेरिया फस ३x चूर्ण, एण्टिम टार्ट ६, सिड्रन ६, और रस-टक्स ६ समय समय पर काममें आता है। इसमें लगानेको कोई दवा की ज़रूरत नहीं है; लेकिन मकुओ दाना, पीपलके पेड़की जड़ बकरीके मूतमें पीस कर लेप देनेसे एक बालकका ऐसा रोग अच्छा किया था लेकिन आठ वर्षके बाद फिर उसको "धवल" दिखाई दिया।

बालकको भूलके भूख लगी और हजम करनेकी ताकत बढ़े ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिये। दूध, काड्लिभर आयल, डेलिन्स इमल्सन, मैदा पक्का फल और पुष्टिकर आहार (जिसमें धातु और रक्त पैदा हो) कराना, स्वास्थ्यकर पहाड़ी जगह या नदीके किनारे आब हवा बदलनेके लिये कुछदिन रखना अच्छा है। रोज नहानेको सिर्फ़ अनामा

चोट।—कटकर, घिसकर, चिरकर, कुचलकर, सुरकाकर आदि कई प्रकारसे चोट है। चोटमें चमड़ा फटकर फोड़ा या घाव होता है।

चिकित्सा।—चोटमें खून जाना बन्द करना चाहिये चोटका मुंह उपरकर ठंढा पानी या बरफकी पट्टी रखनेसे फायदा होता है। चोट लगकर घाव होनेसे आर्णिका ० एक ड्राम एक औन्स पानीमें मिलाकर इसी पानीमें कपड़ा भिंगो कर पट्टी रखना। औयरे अस्त्रके घावमें आर्णिका बहुत उपकारी है। तेज अस्तका घाव या बारुदसे जल कर हुआ घाव कैलेण्डियुलाका मूल अर्क १० बूंद एक औन्स पानीमें मिलाकर उपर लिखे मतुसार पट्टी लगाना। घाव होकर और और लक्षण प्रकाश होने पर नीचे लिखी दवायें सेवन करना चाहिये। ज्वर, शीत, प्यास, घवड़ाहट, मृत्युभय और मस्तक गरम होनेसे एकोनाइट ३×। एक जगह चोट लगकर सर्वाङ्गमें दर्द होनेसे आर्णिका ६, चोट लगकर अधिक खून जानेसे हुई नाताकतीमें चायना ६ या आर्सेनिक ६, देना चाहिये। चोटमें चीनी या गन्धक चूर्ण लगा कर बांधनेसे खुन बन्द हो चोट आराम होता है।

माथेमें चोट।—यदि चमड़ा न फटे तो उपर लिखे अनुसार आर्णिकाकी पट्टी लगाना, यदि फट जाय तब कैलेण्डिउला ६० बूंद एक छटाक पानीमें मिलाकर पट्टी

हो और वह स्थान काला हो तो ईसामिलिस 0 एक भाग पानीमें मिलाकर आर्णिकाके तरह पट्टी लगाना चाहिये। पीप पैदा होनेकी सम्भावना हो तो हिपार सलफर ३०। सड़ने लगे तो आर्सेनिक ३० और साइलिसिया ३०।

सवारी पर चलनेके समयका वमन।— गाड़ी, पाल्की, रेल, जहाज आदिकी सवारीमें किसी किसीको अति कष्टकर वमन होता है, "ककिउलस" इसकी बहुत बढ़िया दवा है।

कीड़ोंका काटना।—बर्रे, हड्डा, बिच्छू आदि काटनेसे, काटे हुये स्थानके जहरको पहिले छूरीसे निकाल लेना, फिर स्पिरिट कैम्फर अथवा सरसोंका तेल या केरोसिन तेल या तमाखू या पियाज काटकर लगाना, ज्यादा फूलनेसे एपिस ६ पिलाना। गयाकीड़ा लगनेसे गुलरका पत्ता घिसकर चूना लगा देना। मकड़ीके जहरमें घी और नमक फेंट कर लगानेसे उपकार होता है। चूहा काटे तो लिडाम ६ पिलाना चाहिये। कुत्ता, गीदड़ आदि काटे तो लोहा गरम कर दागना और इग्नेसिया ३x कई खुराक पिलाना चाहिये। बिच्छूका विष सूरण या धुइयाका रस लगानेसे दूर होता है।

श्वासरोध।—पानीमें डूबने, फांसी लगाने, जहरीली

छटांक पानीमें मिलाकर आंख पर पट्टी बांधे; खाली पानीमें आंख न धोवे, आंख खराब हो सकती है।

कीड़ा कानमें घुसनेसे, तेल गरम करके कानमें डाल देनेसे कीड़ा मर जाता है। गुठली वा और कोई छोटी वस्तु कानमें घुस जानेसे सावधान पूर्वक चमोटी द्वारा बाहर निकालना होगा।

सर्प दंशन।—सांपके काटनेही पर काटे हुये स्थानके कुछ ऊपर रस्सी (डोरी) अथवा कपड़ेसे मजबूत एक धागा बांधे; बंधन इस तरह होना चाहिये, जिसमें बंधनके नीचे रक्तका आना जाना न होसके। (तथापि नाड़ी जिसमें न मिले) तत्पश्चात् चाकू वा और कोई तीव्र अस्त्रसे जिस जिस जगह दांतोंका घाव है, उस पर दो इञ्च लम्बा और आध इञ्च गहरा चीरकर दोनों तरफ अङ्गुलीसे थोड़ा २ खींचकर खून दो। उस जगहमें विष रहनेसे, वहांसे लाल पानीसा पतला निकलेगा (अधिक रक्त गिरनेसे दोनों तरफसे धीरे धीरे दाब देनेसे शीघ्र बन्द होगा) तत्पश्चात् तीन पेन अन्दाज पार्मांङ्गनेट-अव-पटास २५। बून्द, पानीमें मिला कर काटे हुये स्थान पर अच्छी तरह घिसे; इस प्रकार कई मिनिट घिसनेसे वह जगह काली हो जायेगी। तत्पश्चात् दंशनके स्थान पर अच्छी तरह कपड़ा लपेट कर बांध देवें और ऊपरके धागाको अलग कर दें रोगीको इस तरह टेम देकर बैठा कर रखना चाहिये, जिसमें वह

बन्द होजाना, हृदय रोग, पानीकी तरह दस्त या हरा और काले रंगका जलनयुक्त दस्त, बीच बीचमें वमन, अतिसार वा हैजा, (विसूचिका) सूतिकाज्वर, पाकस्थलीमें असह्य जलनयुक्त वेदना, पियास, बारंबार थोड़ा थोड़ा पानी पीनेकी इच्छा। पाकस्थलीमें क्षत, त्वकमें जलन सहित खुजली और खुजलानेसे ऊपरको खालका उठना, सुखके चारों तरफ जलन सहित खुजलाहट, इसो खुजलाहटमें सादा पानी का निकलना; पुराने सविराम ज्वरमें कुनैन लाभदायक न होने पर वा कुनैनके अधिक काममें लानेसे जलन होकर आखोंमें पोड़ा होना, शोथ, पुराना सड़ा घाव; अनिद्रा; 'रक्त स्वल्प होना; स्नायुका शूल, जीवन की शक्तिका कम होना; शरीरके क्षय कारक रोग समूहोंका होना आदिमें।

एकोनाइट।—माथा और पीठको रगों पर इसकी प्रधान क्रिया होती है। प्रदाहमें उत्पन्न हुआ ज्वर; प्रायः सब प्रकारके नये रोग; न्यूमोनियाके पहिली अवस्थामें ज्वरके साथ शीतलगाका होना, सर्दी, हाम, सूखी खांसी, कुकर खांसी, तरुणवात, गठिया वात, बहुत पियास, शरीरका सूखना और गरम होना, उद्वेगचित्त, नाड़ीका कठिन, तीक्ष्ण, और पूर्णता, मुखमण्डलका लाल होना, सासके आने जानेमें कठिनता, पेशाबका लाल होना, हृदकम्प, रजका रुक जाना।

क्यामोमिला।—स्नायुमण्डली, यकृत, पाकाशय और श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। बालकों के दांत निकलनेके समयके रोग यथा।—पीला और हरे रंगका दस्त होना, तड़का, पतला छिछड़ा मल, सड़े अण्डेके तरह दुर्गन्धियुक्त पतला हरा और पीले रंगका आंव मिश्रित मल, दांत उठनेके समय अत्यन्त कष्ट, पेटमें कैंचीसे काटनेके दर्द होना, दांत उठनेके समय एक तरफका गाल गरम और लाल होना और कष्टदायक अस्थिरता होनी। गलेमें सूजन और उसके साथ सामान्य ज्वर, गरम जल पीनेसे दांतोंकी पीड़ाका बढ़ना, स्नायुशूल, ऋतुके समय रक्त लासाके समान और काला, गर्भावस्थामें स्त्रीलोगोंके अङ्गका अकड़ना, बालक सदैव चिड़चिड़ापन और थोड़ेहीमें क्रोध करना, गोदीमें लेकर चलने फिरनेसे दर्द कम होना।

चायना।—अस्थिकी स्नायुमण्डल पर इसकी प्रधान क्रिया है। पसीना, रक्त अल्पता, रक्तमें जलियांश अधिक, दुर्बलता, उदरामय, यकृत और प्लीहामें रक्त सञ्चयके हेतु विवृद्धि, मलेरियासे उत्पन्नभया सविराम ज्वर। (जिस ज्वरमें शीत, गर्मी और पसीना स्पष्टरूपसे जान पड़ता है); सूजन, भयानक भूख, माथा चढ़कर माथेमें दर्द मानो, माथा फटा जाता है ऐसा जान पड़े, पेट फूलना, दुर्बल करनेवाला स्वप्नदोष, अधिक स्त्रीप्रसङ्गसे ध्वजभङ्ग, शरीरसे अधिक रक्त और शुक्रका गिरना वा दूधके गिरनेसे दौर्बल्य।

बूंद बूंद पेशाबका गिरना, मूत्रस्थलमें पक्षाघात, यकृतकी पीड़ा, शराब पीनेके हेतु जिनके हाथ पांवमें कम्प हो।

नेट्रम मिउरियेटिकम।—रक्त, लसिकामण्डल, परिपाकस्थलकी श्लैष्मिक झिल्ली, यकृत और प्लीहाके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। अनिवार्य्य विषम ज्वर, अधिक मात्रामें कुनैन वा संखियाका अपथ्यव्यवहारसे उत्पन्न हुआ ज्वर, शीर्णता, रक्त स्वल्पता, दस्तकब्ज, प्लीह, और यकृतका बढ़ना, प्रमेह, श्वेतप्रदर, सर्दी, नाकसे रक्त गिरना, ज्वरटूटा, कड़ुआ वा नुनखरा स्वाद अथवा फीका मुख रहना।

पलसेटिला।—शरीरस्थ श्लैष्मिक झिल्ली, ग्रन्थिक झिल्ली, शिरा, आंख, कान और जननेन्द्रिय पर इसकी प्रधान क्रिया है। गरिष्ट वस्तु खाने पीनेके कारण अजीर्ण, जीभ सफेद वा पीले मैलसे भरी, पित्त और कफका वमन, खट्टी डकार, छाती जलना, आंव सहित पेट पीड़ा, हाम, शीतला, कानकी पीड़ा, कानमें पीप बहना, वात, गठिया वात, स्वल्प विराम ज्वर, माथामें शीतलगना, उसीके साथ नाकसे गाढ़ा कफ गिरना, आंखोंमें कीचर आना, हामके पश्चात् बधिरता, असमयमें मासिक ऋतु होना, ऋतुका रक्त लसलसा और काला, पीड़ाके साथ ऋतु होना, श्वेत प्रदर, अण्डकोष मे जलन, ऋतुका बंद होना, प्रमेह, प्रसव पीड़ा होनेके समय खिलाने शीघ्र लड़केका भूमिष्ठ होना और भ्रूण शरीर घूमकर

और इनकी प्रथमावस्थामें) स्नायुशूल, जलातङ्क, आमरक्त, स्वल्प रज, अति रज, प्रसव वेदना, खांसी, पारक ज्वर, विसर्प, फोड़ा, सन्न्यास आदि रोगमें बेलेडोना व्यवहार होता है। किसी तरहका दर्द अकस्मात होकर अकस्मात उपशम होना, बेलेडोनाका एक विशेष लक्षण है।

ब्राइओनिया।—फुसफुसवेष्ट, मस्तिष्क, और यकृतके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया। वायुनालीमें जलन, फुसफुसमें जलन, (प्रथमावस्थामें) वक्षस्थलमें शूल लगनेसे दर्द, (खांसने और सांस लेनेसे ही दर्द होना), सूखी खांसी, गठिया वात, (विशेषकर हिलने डुलनेसे कष्ट हो), कमर वात, वातज ज्वर, न्यावा, पित्तसे ज्वर, और माथेमें दर्द, पित्त वमन, छातीमें जलन, कड़वी डकार, दस्त-कब्ज, चिरचिरा मिजाज, ऋतुकाल रज और सूतिका ज्वरमें, सूई गड़ने वा काटनेके समान दर्द होना, और हिलने डुलने से रोगकी वृद्धि ब्राइओनिया प्रयोगका प्रधान लक्षण है।

भेराट्रम आलबम।—मस्तिष्क और पीठके स्नायु मंडलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया समझी जाती है। हैजा (चावलके धोमसा पतला अधिक रौलिसे दस्त और वमन), सब अङ्ग ठंढा, आक्षेप, शूल, कमजोरीके साथ ठंढा पसीना, स्नायुशक्तिकी सुस्ती प्रलाप और उन्माद रोगमें, जीमचलाना वा वमनके साथ "ललाटमें ठंडा पसीना" और कठिन दर्द इसके प्रयोग करनेका प्रधान लक्षण है

थमे स्नायु और पेशीकी (रगों) उत्तेजना हो, (Irritation)।

उपादान।—जिस जिस वस्तुसे कोई पदार्थ गठित हो, (Ingredients)।

जीवाणु।—नयनातीत अति क्षुद्र प्राणी, अणुवीक्षण यन्त्रकी सहायतासे मलेरिया, प्लेग, हैजा आदि रोगोंमें इन्हें रक्तमें सञ्चरण करते देखा जाय इस लिये इसे रोगोत्पादक कहते हैं, (Bacili)।

झिल्ली।—नरम बारीक जालके समान स्वच्छ ढकना, (Membrane)।

पीडिका।—व्रण, फोडा, फुनसी।

पूर्ववर्त्ती कारण।—किसी पीड़ाके गठनका कारण, (Predisposing cause)।

प्रदाह।—जीव शरीरके किसी अङ्गमें वेदना (जलन इत्यादि) युक्त, उत्ताप, आरक्त या सूजन होना, (Inflammation) यथा।—पाव कटने, हाथ टूटने पर उंगली में कांटा घुसने पर गर्दनमें फोड़ा होनेसे जलन होती है।

विधान।—शरीर यन्त्रका निर्माण वा गठन, (Structure)।

विधान तन्तु।—जीवदेहके गढनेके उपयोगी सूतेके समान उपादान समूह, (Tissue)।

रक्तसंचय।—शरीरके किसी स्थानमें या यन्त्रमें अधिक रुधिर का एकत्रित होना, (Congestion)।

रक्तसंचय।—शरीरके किसी अङ्गमें अधिक प्रमाणमें और शीघ्रता पूर्वक रक्तका चलना, (Determination of Blood)।

स्पर्शाक्रामक।—छूनेसे लगना, (Contagious)।

इति।